शीघ्र बोध

श्री हरि :

श्री काशीनाथ भट्टविचरित-

अथ शीघ्रबोधः

भाषा टीका सहितः

+

टीकाकार :

पं० विश्वनाथ शास्त्री

+

प्रकाशक :

मीतल एण्ड कम्पनी

पुस्तक प्रकाशक विक्रेता सतघड़ा, मथुरा।

मुद्रक :

महिला मुद्रण संस्थान मथुरा।

चतुर्थ शुद्ध संशोधित संस्करण : संवत् २०५० मूल्य १२)

* श्री *

विषयानुक्रमणिका

प्रथम प्रकरण

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
मङ्गलाचरणम्	९	गणप्रीति विचार	१५
विवाह नक्षत्राणि	१०	राशिमेलनम्	१५
विवाहमास:	१०	राशि: वर्णा:	१५
विवाहेतिथिवर्जितानि	१०	वर्णावर्ण विचार	१६
तिथिनामानि	१०	नक्षत्रभागत्रय विचार:	१६
वारवेला—चक्रम्	१०	पूर्वभागादिफल	१६
विवाहे वर्जितायोगा	११	राशिवश्यावश्यप्रीति:	१८
भद्राज्ञान एवं चक्रम्	११	योनिविचार:	१[illegible]
भद्रानिवास:	११	योनिवैरम्	१[illegible]
भद्राफलम	१२	नक्षत्रयोनिवैर चक्रम	[illegible]
भद्रानिर्णय:	१२	(भृकुट) राशिमेलनम्	१६
दग्धातिथि:	१२	विवाह मे त्रिवलविचार:	१६
मासातादिज्ञानफलम्	१३	वरस्य रविबलविचार	१६
मासादफलम्	१३	गुरुबलविचार	२०
[illegible]लिकयोग: सचक्रम	१३	कन्याया विवाहे वर्षसंख्या	२०
[illegible]टकवर्गा:	१४	कन्याया रविवलविचार:	२१
[illegible]र्गफलम्	१४	चन्द्रबलविचार:	२१
गणनक्षत्राणि	१४	चन्द्रबलचक्रम	२१
[illegible]लविचार:	२२	उपग्रह	३२
[illegible]भाशुभविचार	२२	विद्युदादियोगफलम्	३२
[illegible]दिफलम्	२२	एकार्गलविचार:	३[illegible]

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
रजस्वलाकन्यालक्षणम	२२	क्रान्तिसाम्यभलम	३५
कन्यारजोदर्शने महादोष	२३	कटकादिदोष	३५
नाड़ीविचार सचक्रम	२३	कंटकादिदोषफलम	३५
नाड़ीफलम	२४	जन्ममासतथा ज्येष्ठविवाहवि०	३५
नाडीदोष परिहार	२४	(विश्वा) विशोपकफलम	३५
वि·पंचशालाकालचक्रमवि·	२५	शुभाशुभग्रहा	३७
विवाहेदशादोषनामानि	२५	फलदग्रहा	३७
लग्नदोषविचार	२५	विवाहे शुभमध्यलग्नानि	३८
लत्ताफलम्	२६	देशभेदेन लत्तादिदोषपवाद	३८
पातदोष विचार	२६	नवमांशलग्नसचक्रम	३८
पाद्य लक्षणम्	२७	होलाष्टकम	३९
पातफलम	२७	अन्धबधिरकुब्जलक्षणम	४०
देशभेदेन पातविचार	२७	गोधाललग्नविचार	४०
युतिदोषविचार	२७	गोधुलिप्रमाणम्	४१
युति परिहार	२८	गोधालिनाशकदोश	४१
विवाहे पंचशलाकाचक्रम	२८	लग्नपुष्टिकरग्रह	४१
वेधदोषविवार	२९	दिनमानइष्टकालज्ञानम	४२
वेधनक्षत्रज्ञानम	२९	रात्रिमानज्ञानम	४२
वेधफलम	२९	केन्द्रस्यगुरोर्महत्वम् (परिहार:)	४३
[illegible]दोष	३०	सर्पाकार (त्रिनाड़ी चक्रम)	४४
[illegible]त्रदोषविचार	३०	वर्ज्या, योगघट्य	४४
बु[illegible]चक्र बाण) वि०	३१	बर्ज्यायोग का फल	४५
दिनरात्रिभेदेनबाणपरि०	३१	पट्टाकार चक्रम	४५
क्रांतिसाम्यदोषविचार	३४		

द्वितीय प्रकरण

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
वधूप्रवेशमुहूर्त	४७	यात्रातिथियः	५
द्विरागमन मुहूर्त	४७	राहुविचारः	५
गर्भाधान मुहूर्तः	४७	दिवापूर्वादि राहुवासचक्रम्	५
पुंसवनादि मुहूर्तः	४८	चन्द्रवासज्ञानम्	६
शर्धेश्चरणविचारः	४८	चन्द्रवास चक्रम्	६
नामकरण मुहूर्तः	४८	चन्द्रवास फलम्	६
बालनिष्क्रमण मुहुर्तः	४९	रविविचारः	६
प्रसूतीकास्नानेत्यागः	४९	कुलिकयोगः	६
प्रसूतीकास्नानजलपूजनमुहुर्तः	४९	कालहाराबिचारः	६
नवाम्बर धारणम्	५०	सर्वाङ्गमुहुर्तविचारः	६
जलपूजनम्	५०	चन्द्र-सूर्यस्वरशकुनविचारः	६
अन्नप्राशनमुहुर्तः	५१	क्रय विक्रयमुहुर्तः	६
चड़ाकर्म तथा भूषणधारणम्	५१	घनिष्टापंचकं विचारः	६
विद्यारम्भमुहुर्तः	५२	तैलाभ्यंगबिचारः	६
यज्ञोपवीतमुहुर्तः	५३	रोगिस्नानमुहुर्त	
कर्णवेधमुहुर्त	५३	आनन्दादियोग	
वास्तुकर्ममुहुर्त	५४	आनन्दादियोग चक्रम	
वापीकुपतडागदेवालतेमुहुर्त	५४	अमृतसिद्धियोगः	
गृहप्रवेशमुहुर्तः	५५	यमघण्टयोगः सचक्रम	
हलचक्रममुहुर्त	५५	मृत्युयोगः सचक्रम्	६१
यात्राविचारः	५६	क्रकचयोगः सचक्रम्	६१
दिक्शूलज्ञानम	५६	अन्धादिवक्षभाणि सचक्रम्	
सर्वदिकयात्रानक्षत्राणि	५७	दक्षिणादि मारनक्षत्राणि	
योगिनीवासनिर्णय	५७	नक्षत्रप्रकारः	
योगिनीफलम्	५७	वत्सयोगः सचक्रम	

कर्मकाण्ड की अमूल्य पुस्तकें

वाशिष्ठी हवन पद्धति भाषा-टीका सर्वतोभद्र चक्र सहित	५)
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश भाषा-टीका	८)
विवाह पद्धति राम स्वरूप शर्मा मेरठ	५)
हवन पद्धति राम स्वरूप शर्मा	६)
प्रेतमञ्जरी भाषा-टीका	१०)
गरुण पुराण भाषा-टीका	२०)
नित्यकर्म पद्धति भाषा-टीका बड़ा	१२)
,, ,, ,, छोटा	६)
सरल गृहशान्ती भाषा-टीका	१०)
उपनयन पद्धति भाषा-टीका	६)
नारायण इलि भाषा-टीका	६)
शिवार्चन पद्धति भाषा-टीका	६)

— × —

पुस्तकें मिलने का पता-

मीतल एण्ड कम्पनी, मथुरा

ज्योतिष की पुस्तकें

बृहद ज्योतिष सार भाषा-टीका	२५)
ताजिक नीलकण्ठी भाषा-टीका	२५)
मुहुर्त चिन्तामणि भाषा-टीका	१५)
मानसागरी पद्धिति भाषा-टीका	२५)
ज्योतिष सर्व संग्रह भा. टी. रामस्वरूपजी मेरठ	१५)
सामुद्रिक शास्त्र सरल हिन्दी भाषा सचित्र बड़ा ग्रन्थ	१०)
भृगुसंहिता सरल हिन्दी भाषा ले० भगवानदास मीतल	२५)
अखण्ड भाग्योदय	१०)
भाग्यवानों की कुण्डली	१०)
हनुमान ज्योतिश भाषा-टीका	५)
शरीर स्वार्ग लक्षण	५)
लघुपाराशरी भाषा-टीका	५)
भाग्य दर्पणानामा	१०)
स्वप्न प्रकाश तावीरनामा	१०)

— x —

पुस्तकें मिलने का पता—

मीतल एण्ड कम्पनी

सतघड़ा, मथुरा

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

शीघ्रबोधः भाषा टीका सहितम्

अथ प्रथम प्रकरणम् प्रारभ्यते

॥ मङ्गलाचरणम् ॥

भासयन्त जगद्भासा नत्वा भास्वतमव्ययम् ।
क्रियते मदनमोहन शीघ्रबोधाय संग्रहः ॥ १ ॥

जिस सूर्य की आभा से यहां सारा संसार प्रकाशित है तथा जो सर्वदा अविनाशी है उनको प्रणाम करके मैं मदनमोहन शीघ्रबोध का संग्रह त्वरित ज्ञान के लिये करता हूँ ॥ १ ॥

विवाहनक्षत्राणि

रोहिण्युतररेवत्यो मलं स्वाती-मृगो-मघा ।
अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मङ्गलप्रदः ॥ २ ॥

रोहिणी तीनों उत्तरा, रेवती, मूल स्वाती मृगशिरा, मघा, अनुराधा, हस्त विवाह में मङ्गलदाता नक्षत्र है इनकी संख्या १ है ।२।

विवाहमासः

माघे धनवतीकन्या फाल्गुने सुभगा भवेत् ।
वैसाखे च तथा ज्येष्ठे पत्युरत्यन्तवल्लभा ॥ ३ ॥

माघ में विवाह करे तो कन्या धनवती हो, फाल्गुन में सौभाग्यवती हो, बैसाख तथा जेठ में विवाह हो तो पति को प्यारी होवे ।
॥ ३ ॥

आषाढे कुंभवर्द्धिःस्यादन्ये मासाश्च वर्जिताः ।
मार्गशीर्षमपीच्छन्ति विवाहे केऽपि कोविदाः ॥ ४ ॥

जो असाढे में विवाह करे तो कुल की वृद्धि हो और महीनों में विवाह वर्जित है कोई आचार्य मार्गशीर्ष को भी विवाह में शुभ कहते हैं ॥ ४ ॥

विवाहे तिथि वर्जितानि

अमावस्या च रिक्ता च बारवेला च जन्मभम् ।
गण्डान्तं क्रूरवारांश्च वर्जनीयाः प्रयत्नः ॥५॥

आमावस्या रिक्ता तिथि (४।९।१४) बारवेला, जन्मनक्षत्र क्रूवार (रवि, मङ्गल, शनि) और गण्डान्तमल विवाह में यत्नपूर्वक भी वर्जित है ॥५॥

तिथि नामानि

नन्दा भद्रा जया रिक्तापूर्णा च तिथियः क्रमात् ।
व रत्रषं समावत्यं तिथयः प्रतिपन्मुखा ॥६॥

नन्दा १।६।११, भद्रा २।७।१२ जया ३।८।१३ रिक्ता ४।९।१४ पर्णा ५।१०।१५ प्रतिपदा से गिनने से १ आवृत्ति में ये पांचों तिथियां जानी जाती हैं ।६।

वारवेला

तुर्याऽर्के सप्तमश्चन्द्रे द्वितीया भूमिनन्दने ।
चन्द्रपुत्र पंचमश्च देवाचर्यं तथाऽष्टमः ॥७॥

अब वारवेला कहते हैं रविवार को ४ था अर्धयाम, चन्द्र का ७ वाँ भौम को २ रा, बुध को ५ वां, गुरुवार को ८, वां यामार्ध ।७।

दत्यपूज्ये तृतीयश्च शनौ श ठश्च निन्दितः ।
प्रहरार्धं शुभे कार्यं वारवेला च कथ्यते ॥८॥

शुक्रवार को ३ रा, शनिवार को ६ वां इस प्रकार इन योगों में अर्धयामों में वारवेला जानिये । ये शुभ कार्य में निन्दित हैं ।

स्पष्टार्थं वारवेला चक्रम्

र	च.	मं.	बु.	गु.	शु	श.	वार
४	७	२	५	८	३	६	योग
३॥	३॥	३॥	३॥	३	३॥	३	घटी

विवाहे वर्जितयोगा:

भद्राकर्कटयोगं च तिथ्यन्तं यमघटकम ।
दग्धातिथि च भान्तं च विवर्जयेत ।६॥

भद्रा, कर्कटयोग, तिथि के अन्त की १ घड़ी, यमघटयोग, दग्धातिथि, नक्षत्र के अन्त की १ घड़ी और कुलकयोग, इतने दोषों को विवाह में त्याग दें ।६।

भद्राज्ञानम

दशम्यां च तृतीयायां कृष्णपक्षे परैदले ।
सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टि: पूर्वदले स्मृता ।१०।
एकादश्यां चतुर्थ्यां च शुक्लपक्षे परदले ।
अष्टम्यां पूर्णिमायां च विष्टि: पर्वदले स्मृता ।११।

तिथिपरत्वे भद्रा ज्ञानचक्रम

कृष्णपक्ष-३, १० मी परार्ध में	शुक्लपक्ष-४ ११ परार्ध में
७ १४ मी पूर्बार्द्ध में	८, १५ पूर्वार्द्ध में

कृष्णपक्ष के परदल में ३ या १०मी को, पूर्वदल में ७मी १४मी को भद्रा होती हैं। शुक्लपक्ष में-परदल में ११मी ४थी को तथा पूर्वदल में ८मी १५ को भद्रा होगी है ।१०-११।

भद्रानिवास:

मेषमकरवृहकर्कटस्वर्गे कन्यामिथुनतुलाधनुनागे ।
कुंभमीनअलिकेसरिमृत्यौ विचरतिभद्रा त्रिभुवनमध्ये ।१२।

ये भद्रास्वर्गलोक, मृत्युलोक व पाताललोक (इन तीनों लोकों में वास करती है। मेष, मकर, वृष, कर्क, इन राशियों के चन्द्रमा में भद्रा स्वर्गलोक में। कन्या, मिथुन, तुला व धनराशि के चन्द्रमा में भद्रा पाताल लोक में। और कुम्भ, मीन, वृश्चिक तथा सिंह राशि के चन्द्रमा में भद्रा का वास मृत्युलोक में रहता है इसी प्रकार तीनों लोकों में भद्रा विचरण करता है।

भद्राफलम्

स्वर्गे भद्रा शुभ कार्य पाताले च धनागमः ।
मृत्युलोके यदा भद्रा सर्वकार्यबिनाशिनी ॥ १३ ॥

यदि स्वर्गलोक में भद्रा हो तो शुभ कार्य करे, पाताल में भद्रा हो तो द्रव्य लाभ हो और यदि मृत्युलोक में भद्रा हो तो सभी कार्य का विनाश करे ॥ १३ ॥

सम्मुखे मृत्युलोकस्था पाताले च अधोमुखी ।
ऊध्वस्था स्वगङ्गा भद्रा सम्मुखे मरणप्रदा ॥ १४ ॥

मृत्युलोक में हो तो सामने, पाताल में अधोमुख और स्वर्ग में ऊर्ध्वमुख जानना चाहिये। सम्मुख भद्रा हो तो मृत्यु ही देती है ।११।

भद्रानिर्णयः

दिवा भद्रा यद रात्रो रात्रिभद्रा यदा दिने ।
तदा विष्टर्न दोषाय प्रभवेत्सर्वसौख्यदा ॥ १५ ॥

कृष्णपक्ष में सप्तमी, चतुर्दशी को और शुक्लपक्ष में अष्टमी पूर्णिमा की पूर्वदल की भद्रा रात्रि में हो और शुक्लपक्ष में ४।११, कृष्ण-पक्ष में ३ १० को परदली भद्रा दिन पड़े तो भद्रा का दोष नहीं होता है। ये भद्रा सर्व प्रकार से सुख की देने वाली है ॥ १५ ॥

दग्धातिथिः

मीने चापे द्वितीया च चतुर्थी बृषकुम्भयोः ।
मेषकर्कटयोः षष्ठी कन्यायुग्मेषु चाष्टमी ॥ १६ ॥
दशमी वृश्चिक के सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।
एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभकर्मणि वर्जिता ॥ १७ ॥

मीन-धन के सूर्य में द्वितीय २, वृष-कुम्भ के सूर्य में चतुर्थी ४, मेष के सूर्य में ६, कन्या मिथुन के सूर्य में ८, वृश्चिक, सिंह के सूर्य में १० तथा मकर तुला के सूर्य में १२ वी इन संक्रांतियों में इतनी तिथियाँ दग्धसंज्ञक होता है और ये शुभ कार्य के लिए वर्जित की जाती है ॥ १६-१७ ॥

मासान्तादिज्ञानफलम्

मासांते दिनमेकं तु तिथ्यन्ते घटिकाद्वयम् ।
घटिकानां त्रयं भांते विवाहे परिवर्जयेत् ॥ १८ ॥

मसान्त अगली संक्रान्ति लगने के पहले एक दिन की तिथि के अन्त की दो घड़ी, नक्षत्र के अन्त की तीन घड़ी, यह विवाह में वर्जित की गयी है ॥ १८ ॥

मासादिफलम्

मासांते म्रियते कन्या तिथ्यन्ते स्यादपुत्रिणी ।
नक्षत्रांते च वैधव्यं विष्टौ मृत्युर्द्वयोर्भवेत् ॥ १९ ॥

मास के अन्त में विवाह हो तो कन्या की मृत्यु हो, तिथ्यिन्य में विवाह हो तो अपुत्रगुणी ही नक्षत्र के अन्त में विवाह हो तो विधवा हो और भद्रा में विवाह हो तो वर तथा कन्वा दोनों की मृत्यु हो । ॥ १९ ॥

कुलिकयोगः

सूर्ये च सप्तमी सोमे भौमे च पंचमी । बुधे चतुर्थी देवेज्ये तृतीया भृगुनन्दने ॥२०॥ द्वितीया वर्जनीया च प्रतिपच्च शनैश्चरे । कुलिकाख्योहि योगोऽय विवाहदो न शस्यते ॥ २१ ॥

सप्तमी रविवार, छठ, सोमवार, पञ्चमी मङ्गलवार, चौथ बुधवार, तीज वृहस्पतिवार, दूज शुक्रवार, प्रतिपदा शनिवार को पड़े तो कुलिकयोग होता है । विवाह आदि में यह शुभ नहीं है ॥२०-२१॥

कुलिकयोग तिथि चक्रम्

र.	च	मं.	बु.	गु.	शु.	वार
७	६	५	४	३	२	१	तिथि

अष्टवर्गा

अवर्गो गरुडो ज्ञयो विडालः स्यात्कवर्गकः ।
चवर्गः सिंहनामास्याट्टवर्ग कुक्कुरः स्मृतः ।२२।
सर्पाख्वः स्यात्तवर्गोऽपि पवर्गोमूषकस्मृत ।
यवर्गोमिगनामास्यात्तथामेषः शवर्गकः ।२३।

इनका विचार मैत्री में, नाव रखने में विवाह में घर बनाने में ग्रामवास में करना चाहिए। नाम के प्रथम अक्षर से वर्ग विचार चाहिए ।२२-२३।

अ, ई, ऊ, ओ ये अवर्ग हैं उनकी गरुड़ वर्ग, क, ख, ग, घ, ड़, क वर्ग को विलाव वर्ग। च, छ, ज, झ, ञ, च वर्ग को सिंह वर्ग। ट, ठ, ड, ढ, ण, ट वर्ग को श्यान वर्ग। त, थ, द, ध, न, तवर्ग को सपवर्ग प, फ, ब, भ, म, प वर्ग को मूषक वर्ग। य, र, ल, व, यवर्ग को मृग वर्ग। श, ष, ह, श वर्ग को मेश वर्ग कहते हैं।

वर्गफलम

स्ववर्गात्पञ्चमें शत्रुः चतुर्थे मित्रसंज्ञकः ।
उदासीनस्तृतीयश्च वर्गभेदस्त्रिधोच्येते ।२४।

अपने वर्ग से पांचवे वर्ग को, शत्रु चौथे में मित्र और तीसरे वर्ग में उदासीन (सम न शत्रु न मित्र) कहा गया है ।२४।

गणनक्षत्राणि

अश्विनी मृगर वत्यो हस्तः पुष्पः पुनर्वसुः ।
अनुराधा श्रुतिः स्वातो कथ्यते देवतागणः ।२५।

अश्वनी, मृगशिरा, रेवती, हस्त,पुष्प, पुनर्वसु, अनुराधा,श्रवण स्वाती ये नव नक्षत्र देवतागण हैं ।२५।

तिस्रः पर्वचोत्तराश्च तिस्रोऽप्यार्द्रा च रोहिणी ।
भरणो च मनुष्याख्यो यणश्च कथितो बुधः ।२६।

तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, आर्द्रा भरणी इन नव नक्षत्रों को मनुष्यगण जानिये ।२६।

कृष्तिका च मघाप्लेषा विशाचा शततारका ।
चित्रा ज्येष्ठा घनिष्ठा च मूल रक्षोगण स्मृतः ।२७।

कृतिका, मघा, आश्लेषा, विषाखा, शतभिषा, चित्रा ज्येठा, धनिष्ठा और मूल ये नौ नक्षत्र रा सगण कहलाते हैं ।२७।

गणप्रीतिफलम्

स्वगणे परमाप्रीतिर्मध्यमा देवमर्त्ययोः ।
मर्त्यराक्षसयोर्मृत्युः कलहा देवराक्षोः ।२८।

जो स्त्री पुरुष एक ही गण के हो तो परस्पर अधिक प्रीति हो, देव मनुष्यगण हो तो मध्यम प्रीति हो मनुष्य व राक्षसगण हो तो दोनों की मृत्यु हो और देव तथा राक्षसगण हो तो परस्पर कलह हो ।२८।

राशिमेलनम्

षष्ठे स्त्रीपु सधोवैर मृत्युः स्यादष्टमे ध्रुवम् ।
द्विर्द्वाशिशे च दारिद्रय नवमे पंचमे कलिः ।२६।

स्त्री की राशि से पुरुष की राशि ६ हो तो शत्रुता और पुरुष से स्त्री की आठवीं होवे तो मृत्यु हो, और २।१२ हो तो निर्धनता हो, ६।५ हो तो सन्तान की हानि हो ।२६।

राशिवर्णाः

मीनाल्त्रिकर्कटा विप्राः क्षत्रो मेषो हरिधनुः ।
शूद्रो युग्मं तुला कुम्भो वैश्य कन्या वृषो मृगः ।३०।

मीन, वृश्चिक, कर्क राशि ब्राह्मणवर्ग है । मेष, सिंह, धन ये क्षत्रिय वर्ग हैं । मिथुन, तुला, कुम्भ ये शूद्रवर्ण और कन्या, वृष, मकर ये वैश्य वर्ण है ।

वर्णावर्णविचारः

मोत्तमामुद्वहेत्कन्या ब्राह्मणो च विशेषतः ।
म्रियते हीनवर्णश्च ब्राह्मण रक्षितो यदि ॥ ३१ ॥
विप्रवर्ण च या नारी शूद्रवर्णं च यः पतिः ।
ध्रुवं भवति वैधव्यं शक्रस्य दुहिता यदि ॥ ३२ ॥

कन्या उत्तमवर्ण हो व पुरुषहीनवर्ण हो तो पुरुष की निश्चित मृत्यु हो, इसमें उत्तमवर्ण की कन्या से विवाह वर्जित है ब्राह्मण वर्ण विशेष करके मना है और जो ब्राह्मण वर्ण से शूद्र वर्ण का विवाह हो तो इन्द्र की भी कन्या निश्चित विधवा होती है ॥ ३ .-३२ ॥

नक्षत्रभागत्रय विचारः

पौष्णादिकं षट्कमुशंयिपूर्वमार्द्रादिकंद्वादशमध्यभागम ।
पौरंदराद्यं नवर्फुभचक्रं परश्चभागंगणकाविदग्धाः ॥३३॥

रेवती नक्षत्र से मृगशिरा तक छः नक्षत्रों को पूर्व भाग कहते हैं आर्द्रा नक्षत्र से अनुराधा तक १२ नक्षत्रों को मध्य भाग कहते हैं और ज्येष्ठ नक्षत्र से उत्तराभाद्र तक नव नक्षत्रों को पर भाग कहते है।
॥ ३२ ॥

पूर्वादिक फल

पूर्वभागे पतिः श्रेष्ठ मध्यभागे च कन्यका ।
परभागे च नक्षत्रे द्वयो प्रीतिमहीयसी ॥ ३४ ॥

पूर्व भागों वाला पति और मध्य भागवाली स्त्री हो तो पति को श्रेष्ठ और पूर्व भागों वाली स्त्री और पर भाग वाला पुरुष हो तो स्त्री को श्रेष्ठ और स्त्री पुरुष दोनों ही पर भागों वाले हो तो आपस में अधिक प्रीति होती है ॥ ३४ ॥

राशिवश्यावश्यप्रीतिः

सिंह बिना दशाः सर्वे द्विपदानां चतुष्पदाः ।
भक्ष्या जलचरास्तेषां भयस्थाने सरीसृपा ॥ ३४ ॥

राशिवश्यानश्यप्रीतिः

सिह बिन वशाः सर्वे द्विपदानां चतुष्पदाः ।
भक्ष्या जलचरास्तेषां भयस्थाने सरीसृपां ॥३५॥

सिह को छोड़कर सभी चतुष्पद चौपाए मनुष्यों के वश में रहते और मनुष्यों के जलचर तो भक्ष्य ही हैं तथा बिच्छू भयदायक है ॥३५॥

मकरस्य पूर्वभागो मेषसिहधनुर्वृषाः ।
चतुष्पदाः कीटसंज्ञाः कर्क सर्पश्च वृश्चिकः ॥३६॥
तुला क मिथुन कन्या पूर्वार्द्ध धनुषश्च यत ।
द्विपदास्तु मृगार्द्धन्तु कुम्भमीना जलाश्रितौ ॥३७॥

मकरराशि का पहिला आधा भाग उत्तराषाढ़ा के तीन चरण और श्रवण का डेढ़ चरण तक और मेष सिह आधा धन व वृष को चौपायों की संज्ञा कहते हैं। और कर्कराशि की कीट संज्ञा है, बृश्चिक की सर्पसंज्ञा है। तुला मिथुन, कन्या और धन का पहिला आधा भाग द्विपद संज्ञा होती है तथा कुम्भ व मीन जलचरण संज्ञा होती है।

योनिविचारः

अश्विनी वरुणश्चाश्वो येवती भरणी गजः ।
पुष्यश्च कृत्तिका छागी नागश्चरोहिणी मृग ॥३८॥
आर्द्रा मूलमपिश्वा मूषकः फाल्गुनी मघा ।
मर्जारोऽदितिराशलेषा गोजातिरुदयम ॥३९॥
महिषो स्वातिहस्तो च मृगौ ज्येष्ठानुराधिके ।
व्याघ्रशिचत्रा विशाखाश्चु स्याषाढोच मर्कटी ॥४०॥
वसुभ द्रपदौ सिहौ नकुलोऽभिजिद्विशवयोः ।
योनियः कथिता मालावरमैती यिचायताम ॥४१॥

अश्विनी-शतभिषा अश्वयोनि रेवती भरणी गजयोनि कृतिका मेषयोनि, रोहिणी-मृगशिरा नागयोनि आर्द्रा मूल श्वानयोनि पूर्व फाल्गुनी मघा मषकयोनि, पुनर्बसु-आश्लेषा मार्जार योनि उ॰ भाद्रप उत्तराफाल्गुनी गौयोनि, स्वाती-हस्त महिषयोनि ज्येष्ठा-अनुराधा मृगयोनि, चित्रा-विशाखा व्याघ्रयोनि श्रवण-पूर्वाषाढा वानरयोनि धनिष्ठा पूर्वाभाद्रपदा सिंहयोनि, ओर अभिजित उत्तराषाढ़ी नकुल योनि में आते हैं ॥३८-४१।

योनिवैरम्

गोव्याघ्रं गजसिंहमश्वमहिषं वैरञ्च श्वोरगम् ।
वैरं वानरमेषकं च महतद्वविडालीन्दुरुः ।
लोकानां व्यवहारतोन्यदपि तज्ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं ।
दंपत्यो नृपभृत्ययोरपि सदा वर्ज्यं शुभस्थाभिभिः ।४२।

गाय बाघ का, हाथी सिंह का घोड़ा भैंस का नेवला सर्प का बानर मेढ़ा का और बिलाव व मूसे का बैर कहा है, यत्नपूर्वक पुरु और स्वामी सेबक का बैर विवाहादि में वर्जनीय है ॥४१॥

न॰	अश्वि	रे॰	पु॰	अ-	पूफ-	पू॰	उ फा	स्व	ज्ये	चि	पू-षा	ध॰	ऽभि
न॰	शत	भ-	कृ-	म-	म.	आ	उभा-	ह-	ऽनु	बि	श्र॰	पू॰	उ-षा
यो-	घोड़ा	ग॰	छा	ना	मूष	बि	गो॰	म	हि-	व्या	वान	सि	नकुल
यो-बै॰	महिष	सिंह	मर्कट	नकुल	मार्जार	मू॰	व्याघ्र	अश्व	श्वान	गौ	छाग	गज	सर्प॰

(भकुट) राशिमेलनम्

मरण पितृनाशोश्च संग्राह्यं नवपंचकम् ।
वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वरः ।।४३।।
एतत त्रिकोणके ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखायवहम् ।
षडष्टके भवन्मृत्युर्यत्न तस्य विचारयेत ।।४४।।

जो पुरुष की राशि से कन्या की राशि ९वीं हो तो पिता की मृत्यु हो और जो कन्या की राशि से पुरुष की राशि ५वीं हो तो माता की मृत्यु हो। वर की राशि से ५वीं राशि कन्या की हो और कन्या की राशि से ९वीं राशि वर की हो तो यह त्रिकोण शुभ है। यह पुत्र पौत्र के सुख को देने वाली हैं और जो परस्पर छठे आठवें हों तो मृत्यु हो षड्ष्टक का विचार अवश्य करना ।।४३-४४।।

विवाह में बल विचार त्रिबल विचार

वरस्य भास्करबल कन्यायाश्च गुरोर्बलम् ।
द्वयोश्चन्द्रबल ग्राह्यं विवाहो नान्यथा भवेत् ।।४५।।

वर को सूर्यबल, कन्या को बृहस्पति बल और वर कन्या दोनों को चन्द्रबल अवश्य चाहिए अन्यथा विवाह करना शुभ नहीं है ।।४५।।

वरस्य विबलविचारः

अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशे च दिवाकरे ।
विवाहितो वरो मृत्यु प्राप्नोत्यत्र न संशयः । ९४।।
च सन्यथ द्वितीये वा पञ्चमे सप्तमेऽपि वा ।
नवमे च दिनानाथे पूजया पाणिपीडितम् । ४७।।
एकादशे तृतीये वा षष्ठे वा दशमेऽपि वा ।
वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ।।४८।।

यदि वर की राशि से ४ । ८ १२ वे स्थान में सूर्य हो तो विवाह करने से वर की मृत्यु हो। यदि वर की राशि से १।६।५।७।९ वें सूर्य हो तो सूर्य की पूजा, दान, जपादिक करके विवाह शुभ है। और जो ११ । ३ । १० । वें सूर्य होय तो विवाह कल्याण कारक होता है ॥४६-४८॥

गुरुबलविचारः

अष्टमे द्वादशे वापि चतुर्थे वा बृहस्पतौ ।
पूजा तत्र न कर्तव्या विवाहे प्राणनाशकः ॥४९॥

यदि कन्या का बृहस्पति ४।८।१२ वें स्थान में होवे तो विवाह होने से मृत्यु हो ॥४९॥

षष्ठे जन्मनि देवेज्ये तृतीये दशमेऽपि वा
भूरि पूजापूजितः स्यात्कन्यायाः शुभकारकः ॥५०॥

यदि कन्या का बृहस्पति ६ । १ । ३ । १० वें स्थान में होवे तब बड़ी पूजा दानादि देकर विवाह करे तो शुभ हो ॥५०॥

एकादशे द्वितीये वा पंचमे सप्तमेऽपि वा ।
नवमे च सुराचार्यः कन्यायाः शुभकारकः ॥५१॥

जो कन्या का बृहस्पति ११ । २ । ५ । ७ । ९वें स्थान में होत विशेष करके कन्या को शुभ है ॥५१॥

कन्याया विवाहे वर्ष संख्या

अष्टाब्दका भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी ।
दशवर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥५२ ।

आठ वर्ष की गौरी संज्ञा होती है और इसके बाद कन्या को रजस्वला कहते है ॥५२॥

कन्याया रविबलविचार:

गौरी गुरोर्बले देया रोहिणी भास्करस्य च ।
कन्याचन्द्रबले देया सर्वदोषविवर्जिता ॥५३॥

गौरी को बृहस्पति का बल, रोहिणी को सूर्य का बल और कन्या को चन्द्रबल में दान करे ॥५३॥

चन्द्रबलविचार:

आद्ये चन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके ।
तृतीये धन सम्पत्तिश्चतुर्थे कलहागमः ॥५४॥
पंचमे ज्ञान बृद्धिश्च षष्ठे संपत्तिरुत्तमा ।
सप्तमे राजसम्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥५५॥
नवमे धर्मलाभश्च दशमे मानसेप्सितम ।
एकादशे सर्वलाभो द्वादशे हानिरेव च ॥५६॥

न्द्रबल विचार चक्रम

१	लक्ष्मीप्राप्त
२	मनसन्तोष
३	धनसम्पत्ति
४	कलहागम
५	ज्ञानबुद्धि
६	सम्पत्ति
७	राजसम्मान
८	मृत्युभय
९	धनलाभ
१०	मनोवांछ
	सर्वलाभ
	हानि

जन्म का चन्द्रमा हो तो लखमी प्राप्ति, चन्द्रमा द्वितीय हो तो मन सन्तोष तृतीय हो तो धन सम्पत्ति चौथा हो तो कलह, पाँचवा होय तो ज्ञानबुद्धि, छठा हो तो सम्पत्ति सातवाँ हो तो राजसम्मान, आठवाँ हो तो मृत्यु भय, नवां होय तो धन लाभ, दसवां हो तो मनोभिलाषित इच्छापूर्ण हो सर्वलाभ और बारहवाँ चन्द्रमा हानि करता है। ॥५४-५६॥

त्रिबल विचार

गुर्विन्द्वर्कबलागौरी गुर्बिन्दुबलरोहिणी ।
रवींदुबलचा कन्या प्रौढालग्नबलौस्मृता ॥५७ ।

गौरी को गुरु, गन्द और सूर्य का रोहिणी का, गुरु और चंद्रमा का, कन्या को रवि और चन्द्रमा बल व प्रौढ़ा को केवल लग्नबल ही आवश्यक है ॥५७॥

शुभाशुभ विचार

जीवो जीवप्रदाता च द्रव्यदाता च चन्द्रमा ।
तेजोदाता भवेत्सूर्या भूमिदाता महीसुतः ॥५८॥
जीवहीना मृतो कन्या सूर्यहीनो मृगो वरः ।
चंद्रहीते गतालक्ष्मीः स्थानहाहिने कुर्जविता ॥५९॥

बृहस्पतिजीवन के चन्द्रमा धन के सूर्य तेज के और मंगल भूमि के दाता है । बृहस्पति हीन हो तो कन्या की मृत्यु हो सूर्य हीन हो तो वर की मृत्यु हो, चन्द्रमा हीन हो तो लक्ष्मी की हानि हो मंगल-हीन हो तो स्थान की हानि करें ॥५८-५९॥

गौरीदानादिफलम

गौरी ददन्नागलोके बैकुण्ठे रोहिणी ददन ।
कन्या ददन्मृत्युलोके रौरवतु रजस्वलाम ॥६०॥

गौरीदान करने वाला पाताल लोक में, रोहिणी का दान करने वाला बैकुण्ठ में, कन्यादान करने वाला मृत्युलोक में सुख की प्राप्ति करे और रजस्वला दान करे तो रौरव नरक में पड़े ॥६०॥

रजस्वला कन्यालक्षम

संप्राप्तैकादशे वर्षे कन्या या न विवाहिता ।

मासे-मासे पिता भ्राता तस्या पिबति शोणितम् ॥६१॥

ग्यारहवें वर्ष में यदि कन्या का विवाह न करे तो महीने में रजस्वला होने पर उनका रज (रुधिर) पिता और ज्येष्ठ भ्राता पान करते हैं ॥६१॥

द्वादशैकादशे वर्षे तस्याः शुद्धिर्न जायते ।
पूजाभिः शकुनैवापि तस्य लग्नं प्रदापयेत ॥६२॥

जो कन्या की आयु ग्यारह बारह वर्ष की हो तो उसकी शुद्धि नहीं होती है। (बृहस्पतिका बल देखे) लग्न पूजा, करके शकुन से विवाह करना उचित है ॥६२॥

कन्यारजोदर्शने महादोषः

माता चैव पिता चैव ज्येष्ठभ्रातातथैव च ।
त्रयश्च नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम ॥६३॥

यदि अविवाहित कन्या घर पर ही रहे तो माता-पिता, ज्येष्ठ-भ्राता ये तीनों रजस्वला को देखे तो नरक के अधिकारी होते हैं ।६३।

नाड़ी विचारः

आदिमध्यान्तकं चापि अन्तमध्यादि भानि च ।
अश्विन्यादि मेणैवरेवत्यंतं सुसंलिखेत् ॥६४॥
ऊर्ध्वगा वेद रेखाः स्युस्तिर्यग्रेखा दशस्मृता ।
सर्पाकार लिखेन्द्वाना नाड़ीचक्र गवेद्बुधः ॥६५॥
नाड़ीदोषस्तु विप्रेषु वर्णदोषाश्च क्षत्रिये ।
गणदोष श्चवैश्येषु योनिदोषस्तु पादजान ॥६६॥

आदि-मध्यम-अन्त और अन्त मध्य आदि इसी प्रकार अश्विनी से रेवती तक गिने ।

चक्र का प्रकार-चार रेखा खड़ी और १९ रेखा पड़ी लिखें तो भी सर्पाकार नक्षत्र लिखें तो नाड़ी चक्र तैयार हो जाय। नाड़ी दोष ब्राह्मण का वर्ण विचार क्षत्रिय को, गण विचार वैश्य को, योनि विचार शुद्र को अवश्य करना चाहिए ॥६४-६६॥

नाडीचक्रम

आदि	आश्वि	आ०	पु०	उ-फा	ह०	ज्ये०	मू०	श०	पू भा
मध्य	भर ७	म	पु०	प-फा	च	अनु०	पूषा	ध०	उ०भा
अन्त्य	कृत	रो०	अश्ले	म०	स्वा०	वि	उषा	श्र०	रेवती

नाड़ीफलम

एका नाड़ीस्थलक्षत्रे भम्पत्योर्मरणं ध्रुवम् ।
विद्धायांच भवेद्धानिविवाहे चाशुभं भवेत् ॥६७॥

वर कन्या दोनों का जन्म एक ही नाड़ी के नक्षत्र में हो तो दोनों की मृत्यु हो, नाड़ी का बेध हो उसमें विवाह करे तो अमंगल होवें ॥६७॥

आदिनाड़ी वर हंति मध्यनाड़ी च कन्यकाम् ।
अन्त्यनाड़ी द्वयोर्मृत्युनाड़ीदोष त्यजेद्‌बुध ॥६८॥

जो आदि नाड़ी का बेध हो तो वर को अनिष्ट होता है मध्य बेध हो तो कन्या को अनिष्ट और अन्त्या नाड़ी का वेध हो तो दोनों की मृत्यु होती है।

नाड़ी दोष परिहार

एकनक्षत्रजातानां नाड़ी दोषो न विद्यते ।
अन्यर्क्षपतिवेधंषु विवाहो वर्जितः सदा ॥६९॥

वर कन्या का एक ही नक्षत्र में जन्म हो तो एक नाड़ी का दोष नहीं होता और दूसरे नक्षत्रों में जन्म हो तो विवाह सर्वथा वर्जित है ॥६९॥

विवाहे पंचशलाकाचक्र विचारः

पंचोर्ध्वा स्थापयेद्रेखा पंच तिर्यङ्मुखास्तथा।
द्वयोश्च कोणयोर्द्वे द्वे चक्रं पंचशलाकम् ॥७०॥

ईशाने कृत्तिका देया क्रमादन्यानि भानि च।
ग्रहास्तेषु प्रदातव्या ये च यत्र प्रतिष्ठिताः ॥७१॥

लग्नस्य निकटे या च गता भवति पूर्णिमा।
तन्नक्षत्रस्थितश्चंद्रो दातव्यो गणकोत्तमैः ॥७२॥

पाँच रेखा ऊर्ध्व, पाँच तिरछी और दो-दो रेखा कोनों में खींचें इसको पञ्चशाला का चक्र कहते हैं। ईशान दिशा से कृतिका आदि नक्षत्र को क्रम से रखे। एक रेखा में ग्रह और चन्द्रमा हो तो वेध होता है लग्न के निकट पूर्णिमा हो तो उस नक्षत्र पर पण्डितों को चन्द्रमा धरना योग्य है मुहूर्त अवश्य देखे ॥७०-७२॥

विवाहे दशदोषनामानि

लत्ता पातो युतिर्वेधो जामित्रं बुधपंचकम्।
एकार्गलोपग्रहौ च क्रान्तिसाम्यं निगद्यते ॥७३।

दग्धातिथिश्च विज्ञेया दशदोषा महाबलाः।
एतान्दोषान्परित्यज्य लग्नं संशोधयेद्बुधः ॥७४॥

लत्ता १, पात २, युति ३, वेध ४, जामित्र ५, बुधपंचक ६, एकार्गल ७, उपग्रह ८, क्रान्तिसंसाम्य ९, दग्धातिथि १०, ये दश दोष महाबलवान है, इनसे बचाकर विवाह का लग्न निश्चित करें ॥ ७३-७४ ॥

लत्तादोष विचार

नक्षत्रं द्वादश भानुस्तृतीयं लत्तया कुंजः।

षष्ट जीवोऽष्टमं मंदो हन्तिदक्षिणतः सदा ७५
वामेन सप्तमस्चान्द्रिनवमे सिंहिकासुतः ।
हन्ति भं पंचमं शुक्रो द्वाविंश पूर्णचंद्रमा ७६

जिस नक्षत्र का लग्न हो उसी नक्षत्र से दाहिनी ओर गिने सूर्य, भौम, गुरु व शनि ये चार ग्रह लात मारते हैं। १२ वे नक्षत्र को रवि २ रे को भौम, ६ठे को गुरु ८ वे को शनि लात मारते हैं और वामभाग होकर ७वे नक्षत्र को बुध लात मारता हैं, ९वे को राहु ५वे को शुक्र और बाईसवे नक्षत्र को चन्द्रमा भी लात मारता है।
॥७१-७६॥

लत्ताफलम

रवेर्लता हरे द्वतां कुजस्य कुरुते मृतिम ।
बृहस्पतेर्बंधन्धुनाश शनेः कुर्यात कुलक्षयम ॥७७॥
बुधस्य कुरुते त्रासं लता राहोर्विनाशनम ।
शुक्रस्य दुखदा नित्यं त्रासदा तु कलानिधेः ॥६८॥

सूर्य की लात सम्पत्ति को हरे, भौम की लात मृत्यु करे, बृहस्पति की लात बन्धु का नाश करे, शनि की लात कुल का क्षय करे, बुध की लात, त्रस करे, राहू की लात से सर्वनाश हो, शुक्र की लात दुःखदायक है और चन्द्र की लात भयकारक हो ॥७७-७८

पातदोषविचारः

सुयुक्तश्च नक्षत्राददोषपातो विधीयते ।
मघाऽश्लेषा च चित्रा च रेवती ॥७९॥
श्रवणोऽपि च षटकोऽथ पातदोषा निरध्यते ।
आश्विनीमवधि कृत्वा गणयेल्लग्नभावधि ॥८०॥

जिस नक्षत्र में सूर्य हो उसी नक्षत्र में फिर आ जाय तो पात दोष होता है। मघा, अश्लेषा, चित्रा, अनुराधा, रेवती श्रवण ये छः नक्षत्र पात के हैं। इन नक्षत्रों में सूर्य के संयोग से ६ प्रकार के पात दोष कहे जाते हैं। प्रथम बर्ष के नक्षत्र से २७ रेखा खींचें इसके बाद अश्विनी से लगन नक्षत्र तक गिने, जो उक्त नक्षत्र में गिनती पूरी हो जाय तो नक्षत्र पात होता है ।।७९-८०।।

पातलक्षणम्

पावक, पवमानश्च विकारः कलहोऽपरः ।
मृत्युःक्षयश्च विक्षयं पातषटकस्य लक्षणम् ।८१।

अब ६ प्रकार के पातों के नाम कहते है—पावक १, पवमान २, विकार ३, कलह ४, मृत्यु ५, और क्षय ६ ये छहों पात अपने नाम के अनुसार ही फल देते हैं ।।८१।।

पाताफलम

पातेन पतितो ब्रह्मा पातेन पतितो हरि, ।
पातेन पतितः शभुस्तस्मात्पात विवर्जयेत् ।८२।

पात से ब्रह्मा, विष्णु और शिव पतित हुए इसलिये विवाह पात-दोष वर्जित हैं ।।८२।।

देशभेदेन पातविचारः

चित्रां णतेपातविचित्रदे शेमंत्रेमघा मालवके निषिद्धः ।
पीक्षणभतो चीत्तरदेशजातः सर्वत्रवर्ज्यश्चभुजंगपातः ।८२।

चित्रा नक्षत्र का पात विचित्र देश में वर्जित है मैत्र) अनुराधा तथा मघा का पात मालवा देश में, रेवती और श्रवण का पात उत्तर में और अश्लेषा का पात सभी देशों में वर्जित है ।।८३।।

युतिदोषविचारः

यत्र गृहे भवच्चद्रो गृहस्तत्र यदा भवेत् ।

वेधदोष विचारः

एकरेखास्थितैर्वेधो विलग्नाद्यादिभिर्ग्रहैः ।
यदि तत्र मासं तु न जीवति कदाचन ॥८७॥

जिस नक्षत्र का लग्न हो उसी नक्षत्र की रेखा पर सूर्य आदि कोई ग्रह तो उसी ग्रह का बेध जानना चाहिए, यदि उससे विवाह हो होवे तो एक महीना भर में ही मृत्यु हो जाय ॥८७॥

वेधनक्षत्रज्ञानम्

अश्विनी पूर्वफाल्गुन्या भरणीचानुराधया ।
अभिजिच्चापि रोहिण्या कृत्तिका च विशाखया ॥८८॥

मृगश्चोत्तराषाढेन पूर्वषाढा तथार्द्रया ।
पुनर्वसुश्च मूलेन तथा पुष्यश्च ज्येष्ठया ।८९॥

धनिष्ठया तथाऽऽश्लेषा मघापि श्रवणेन च ।
रेवत्युत्तरफाल्गुन्या हस्तेनोत्तरभाद्रपात ॥९०॥

स्वात्या शतभिषा विद्धा चित्रया पूर्वभाद्रपात ।
विद्धान्येतानि वर्ज्यानि विवाहे प्राणि जीविते ॥९१॥

अश्विनी-पूर्वाफाल्गुनी एक रेखा पर है, भरणी-अनुराधा अभिजित-रोहिजी, कृतिका-विशाखा, मृग उत्तरापाढा, आद्रा-पूर्वषाढ़ा, पुनर्वसु-मूल, पुष्प-ज्येष्ठा धनिष्ठा आश्लेषा, मघा-श्रवण, रेवती-उत्तरा फाल्गुनी, हस्त उत्तराभाद्रपद स्वाती-शतभिषा, चित्रा-पूर्वाभादपद विद्ध होते हैं। ऐसे इन अट्ठाईसों नक्षत्रों का वेध होता है। इन वेधों का विवाह में अवश्य बर्जित करे ॥८८-९१॥

वेधफलम

रविवेधे च वैधव्यं कुजवेधे कुलक्षयम ।

युतिदोषस्तदा ज्ञेयो विना शुक्रं शुभाशुभम् ।।८४।।

जिस नक्षत्र का चन्द्रमा हो उसी नक्षत्र में अन्य और कोई ग्रह हो तो युतिदोष होता है। परन्तु शुक्र के बिना शुभ संयुक्त भी अति अशुभ है ।। ८४ ।।

युतिफलम्

रविणा संयुतो हानिं भौमे च निधनं शशी ।
करोति वंशनाशं च राहुकेतुशनैश्चरैः ।। ८५ ।।

जो चन्द्रमा सूर्य साथ में हो तो हानि करे, भौम चन्द्र हो तो मृत्यु करे और राहू केतु, शनैश्चर हो तो मूल का नाश करे । ८५।।

युति परिहार

वर्गो नगलश्चंद्रः स्वोच्चे वा मित्राशिरा: ।
युतिदोषश्च न भवेदवधूवरयोः श्रयसी सदा ।।८६।।

चन्द्रमा षड्वर्ग में श्रेष्ठवर्ग का हो अथवा उच्च का हों, मित्र-राशि का हो तो युतिदोष नहीं होता और वर-वधू दोनों सुखी रहते हैं ।। ८६ ।।

विवाहे पञ्चशलाका चक्रम

कृ. रो. मृ आ पु. पु. ऽऽश्ले

भ. | — म.
अ | — उ.
रे | — पू.
उ | — ह.
पू. | — चि.
श. | — स्वा
ध. |

श्र, ऽभि, उ, पू, मु, ज्ये, ऽनु

बुधवेधे भवेदवन्ध्या प्रव्राज्या गुरुवेधत: ।।९२।।
अपुत्राशुक्रवेधे च सौरे चन्द्रे च दुःखिता ।
परपतिरताराहो: केतो: स्वच्छन्दचारिणी ।।९३।।

जो सूर्य का वेध हो तो कन्या विधवा हो मंगल का हो तो कुल का क्षय हो, बुध का वेध हो तो वन्ध्या हो गुरु का वेध हो तो संन्यासिनी हो शुक्र का वेध हो तो पुत्रहीन, शनि व चन्दमा का हो वेध हो तो दुःखी, राहु का वेध हो तो पर-पुरुषगामिनी और केतु का वेध हो तो स्वच्छन्दचारिणी होती है ।।९२।।

युनिद्वेष

शनिराहुकुजादित्या यदा जन्मर्क्षसंस्थिता: ।
विवहिता च या कन्या सा कन्या विधवा भवेत ।।९४।।

शनि, राहु भौम, सूर्य इनमें से कोई भी ग्रह विवाह समय में जन्म नक्षत्र पर होवे तो कन्या विधवा होती है ।।९०।।

जामित्रदोषविचार

चतुर्दशं च नक्षत्रं जातीमर्क्षं लग्नभात्स्मलम् ।
शुभयुक्तं तदिच्छान्ति पापयुक्तं च वर्जयेत् ।।९५।।

जो लग्न के नक्षत्र से चोदहवे नक्षत्र पर कोई पापग्रह हो तो जामित्र दोष होता है, वह शुभ ग्रह के साथ ग्राह्य है और पापग्रह के साथ हो तो त्याज्य है ।।९५।।

चन्द्रश्चान्द्रिर्भगर्जीवो जामित्रं शुभकारक: ।
स्वभानुमन्दारा: जामित्रे न शुभप्रदा: ।।९६।।

चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति और शुक्र इन ग्रहों का जन्म नक्षत्र से जामित्र होवे तो शुभ और जो राहु, केतु सूर्य शनि तथा भौम ये जामित्र हो तो अशुभ होता है ।।९६।।

चंद्रदवा लग्नतो वापि ग्रहा वज्यद्वि च सप्तमे ।
तत्र स्थिता ग्रहा नूनं व्याधिवैधव्यकारका: ॥९७॥

चन्द्रमा से लग्न राशि से व सातवे कोई ग्रह हो तो व्याधि और वैधव्य करने वाला होता है ॥९७॥

बुधपंचाक (बाण) विचार

घा तिथिर्मासदशाष्टवेदा सक्रान्तियातविश्चायोज्या ।
ग्रहविभक्ता यदि पंचशेषा रोगस्तथान रुपचौरमृत्यु ॥९८॥

तिथि १५ मास १२, दिशा १० अष्ट ८, वेद ४ और सक्रान्ति के जो दिन बीते हों उनको जोड़ करके ९ का भाग दे, जो पांच शेष बचे तो पञ्चक जानिये। इस प्रकार पांचों का विचार कर रोग पंचक १५ में, अग्नि पंचक १२ में राजपंचक १० में, चोरपंचक ८ में और मृत्यु ४ में जानना चाहिये ॥९८॥

तद्यर्कबार किलरोगपंचाक सौमे च राज्य क्षितिजेच्चवन्हि: ।
सोर चामृत्युधिशणे च चौरोविवाहकालेपरिजनीया: ॥९९॥

रविवार को रोगपंचक, सोम को राजपंचक, मङ्गल को अग्नि पंचक, शनीचर को मृत्यु पंचक और शुक्र को और पंचक ये विवाह में वर्जित हैं ॥९९॥

दिनरात्रिभेदेन बाणपरिहार

रोग चौरंत्जेद्रात्रौ दिवा राजाग्निपंचकम् ।
उभयो:सन्ध्योमृत्युकाले न निन्दिता: ॥१००॥

रोगपंचक तथा चोरपंचक रात्रि को अशुभ है। राज्य पंचक, अग्निपंचक, दिन में अशुभ हैं, मृत्यु पंचक दोनों सन्धियों में निहित है। अन्य समय में वर्जित नहीं है ॥१००॥

उपग्रह

सूर्यभात्पंचमे विद्युन्नक्षत्रे शूलमाष्टमे ।
चतुर्दशे शनैः पातः चतुरष्टादशे तथा ॥१०१॥

उर्नविशे भवेदुल्का निर्घातश्च द्विविंशके ।
त्रयोविंशति के कंप.पंचविंशे तु बज्रकः ।१०२।

सूर्य के नक्षत्र से पाँचवे नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो, विद्युत दोष ८ वे शूलदोष, १४ वे पर शनिपात दोष १८ पर केतुदोष १९ वे पर उल्का, २० वे पर निर्घात २१ वे पर दो कांप, २५ वे पर बज्रदोष होते है ॥ १०२।

विद्युदादियोगफलम्

पुत्रनाशकरी विद्युत पत्य शूलो विनाशकः ।
शनैः पातो बंशघाती केतौर्दैवनाशकः ॥१०३॥

द्रव्यनाशकरी चोल्का निर्घातो ब धुनाशकः ।
कंपः कपयते नित्य वज्रो स्त्री व्यभिचारिणी ॥१०४॥

विद्युत दोष के विवाह में पुत्र का नाश, शूलदोष पति का नाश करे, शनि का पात वंशघात, केतु दोष में जेवर का नाश, उल्कादोष द्रव्य का नाश निर्घात दोष में भ्राता का नाश कप दोष में नित्य ही कंपावे और वज्रदोष में विवाह हो तो स्त्री व्यभिचारिणी होती है। ॥ १०३-१०४ ॥

एकार्गल विचार

योगांके विषमे चक्रो वेधोऽष्टाविंशति समे ।
अर्द्धकृत्याश्विनीपूर्वमेक र्मद्विन सुदीयते ॥१०५॥

जो योग के अंश विषम होतो १ और जोडिये यदि सम अं

हों तो २८ जोड़िये, फिर आधा करके अश्विनी से पूर्व जो अंक हो उसे माथे पर लिखिये ॥१०५॥

वि कुम्भे चाश्विनी देया प्रीतौ स्वातिर्निगद्यते ।
सौभाग्ये च विशाखास्ददायुष्मान्भरणीयुतः ॥१०६॥
शोभने कृत्तिका देया अनुराधा च गंडके ।
रोहिणी च सुकर्माख्ये धृतौ ज्येष्ठा प्रकीर्तिता ॥१०७॥
गण्डे मूल मृगः शूले वृद्धौ चार्द्रा निगद्यते ।
पूर्वाषाढ़ाध्रु वेप्रोक्ताव्याघाते चेत्पुनवसुः ॥१०८॥
हर्षणेचोत्तराषाणा वज्रे पुष्यः प्रकीर्तितः ।
अभिजिच्च तथा सिद्धावाश्लेषा व्यतिपातके ॥१०९॥
वरीयान्स श्रुतिर्देया परिघे च मघा तथा ।
शिवे धनिष्ठा दातव्या सिद्धौपूर्वा च फाल्गुनी ॥११०॥
साध्ये शतभिषा देया शुभे चतरफाल्गुनी ।
पूर्वा भाद्रपदा शुक्ले हस्तो ब्रह्मो प्रकीर्तितः ॥१११॥
उत्तराभाद्रपदचान्द्रे चित्रा देया च वधृतो ।
सूर्याचान्द्रमसोयोगे भवेदेकार्गल तथा ॥११२॥
त्रयोदशतिरोरेखा एकोर्ध्वात्रियंभिस्मृता ।
योगाके प्रप्तनक्षत्रो ज्ञयमेकार्गल बुधः ॥११३॥

एकार्गल चक्र की तेरह रेखायें तिरछी खींचे और एक रेखा खड़ी उन रेखाओं को काटती खींचे । योग के अंक जो नक्षत्र कहे हैं और वे सूर्य चन्द्र के योग एक रेखा में हो तो एकार्गल योग का दोष होता है विष्कुम्भ योग अश्विनी में कहा है । इसी क्रम से चक्र में समझना चाहिये ॥११३॥

आ पु. प. ऽश्ले म. पू. उ ह. चित्रा स्वा. ऽन ज्ये

मु | मू

रा. कृ भ अ. रे उ पू श ध. श्र. अ उ. पू

क्रान्तिसाम्यदोष

ऊर्ध्वा स्तिस्त्रस्तिरस्तिस्रो मध्ये मीन लिखद्बुधः ।
सूर्याचन्द्रमसौ दृष्टो क्रान्तिसाम्यं निगद्यते ।११४।।
मीनः कन्यकया युक्तो मेषः सिंहने सङ्गत ।
मकरेण वृषः क्रान्तिश्चापोऽपि मिथुनेन च ।।११५।।
कर्कं वृश्चिको विद्धो वेधश्च तुलकुम्भयोः ।
क्रान्तिसाम्ये कृतोद्वाहो न जीवति कदाचन ।।११६।।

तीन रेखा ऊर्ध्व (खड़ी) और तीन तिरछी रेखा खींचकर ऊर्ध्व की मध्य की रेखा पर मीन, कन्या और तिरछी मध्य रेखा पर मिथुन धन लिख के क्रम से सब लगनों के अङ्कों को रख कर चक्र बनाइये, उसमें एक रेखा पर चन्द्र, सूर्य पड़े तो क्रांतिसाम्य दोष होता है । जैसे मीन और कन्या का मेष और सिंह का, मकर और वृष का मिथुन धन का, कर्क से वृश्चिक का तुला से कुम्भ का परस्पर वेध होता है वेध में विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित है । कदापि नहीं करें ।११६।

कान्यिसाम्य फलम्

क्रान्तिसाम्ये च कन्याया यदि पाणिग्रही भवेत् ।
कन्यावैधव्यतां याति ईशस्य दुपिता यति ।।११७।।

यदि क्रान्तिसाम्य में विवाह करे तो कन्या बिधवा हो, यदि ईश्वर महादेव की कन्या हो तो भी इस दोष में तिवाह करने से विधवा होती है ।११७।

कटकादिदोष

मर्मवेध: कंटकश्च शल्य छिद्रं चतुर्थकम् ।
एतद्व फतत्स्कं तु परित्याय्यं प्रयत्नत: ।।११८।।

अव चार दोष कहते हैं मर्नवेध १, कंटक २, शल्य ३ और छिद्र ४, इनवेध चचुष्टय दोनों को त्यागना आवश्यक है ।११८।

लग्ले पापे मर्मवेध: कण्टको नवपञ्चके ।
चतुर्थें दशमे शल्य छिन्द्र भवति सप्तमे ।।११९।।

लगन में पापग्रह हो तो मर्मवेध, पञ्चम-नवम में पापग्रह हो तो कण्टक दोष, चौथे और दशवे स्थान में पापग्रह हो तो शल्यदोष, सप्तम स्थान में पापग्रह हो तो छिद्र दोष होता है ।११९।

कण्टकादिदोष फलम्

मरणं मर्मवेधे स्यात् कण्टके च कुलक्षय: ।
शल्य चा नृपतेभ तिः पुत्रानाशश्च छिद्रके ।।१२०।।

कर्मवेद के विवाह से मृत्यु, कण्टक में विवाह से कुटुम्ब का क्षय, शल्यदोष में विवाह होने से राजभय और छिद्र में होने से पुत्र का नाश होता है ।१२०।

जन्ममास तथा ज्येष्ठविवाहे विचार:

जन्ममासे जन्मभे च नैव ... दिष्टि ...

ज्येष्ठे न ज्येष्ठ गर्भस्य विवाहे कारयेत्क्वचित् । १२१॥

जन्म के मास में, जन्म के नक्षत्र में, जन्म के दिन में और ज्येष्ठ मास में जेठे लड़कों का विवाह वर्जित करना चाहिये ॥१२१॥

न कन्यवरयावयोर्ज्येष्ठतोः पाणिपीडनम् ।
द्वयोरेकतरे जेष्ठे न जेष्ठी दोषमावहेत् ॥१२२

वर-कन्या दोनों प्रथम गर्भ के हो तो ज्येष्ठमास में विवाह नहीं करना और कन्या या वर इनमें एक ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ में विवाह कीजिए दोष नहीं है क्योंकि तीन ज्येष्ठ नहीं होना चाहिए ॥१२२।

सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन ।
मेषस्थिते दिवानाथे सिंहेज्ये न शुभप्रदः ॥१२३

बृहस्पति के सिंहराशि में होने पर विवाह नहीं करना चाहिये यदि मेष का सूर्य हो जाय और सिंह राशि का गुरु हो तो भी विवाह शुभ फलदायक नहीं है ॥१२३॥

(विश्वाबल) विंशोपकफलम्

रवौ सार्द्धत्रयो भागाः पंच चंद्रे गुरौ त्रयः ।
द्वे द्वे शुक्रेन्दुपुत्रे स्याद्विश्वाभागप्रदायकाः ॥१२४॥
प्रत्येक सार्धभागाश्च मन्दभकुलराहुषु ।
गहा बलयुता विश्वाः प्रयच्छन्ति न दुर्बलाः ॥१२५॥

सूर्य के ३॥ भाग चन्द्रमा के ५ भाग, बृहस्पति के ३ भाग, शुक्र के २ भाग बुध के २ भाग, इन भागों के विश्वा शुभ हैं। शनि मंगल राहु और केतु ग्रहों के डेढ़-डेढ़ भाग जब तक बलिष्ठ रहते तब तक विश्वाबल शुभ फल देते हैं, जब ये क्षीण हो जाये तब निर्बल है निर्बल होने पर बल नहीं देते हैं ॥१२४-१२५॥

फलदग्रहाः

केन्द्रे सप्तमहीने च द्वित्रिकोणे शुभाऽशुभाः ।
धने शुभप्रदश्चन्द्र पापाः षष्ठे च शोभनाः ॥१२६॥
तृतीयैकादशे सर्वे सौम्याः पापाः शुभप्रदाः ।
ते सर्वे सप्तमस्थाने मत्युदा वरकन्ययोः ॥१२७॥

केन्द्रस्थान, (लगन, चतुर्थ, सप्तम, दशम) इसमें सप्तम स्थान को छोड़कर जो अशुभ है में जो शुभ ग्रह शुक्र, बुध, बृहस्पति और शुक्लदशमी से कृष्णपक्ष की ५ पर्यन्त का चन्द्रमा श्रेष्ठ और बली होता है लगन से धन का चन्द्रमा भी बलवान होता है। पाप ग्रह लगन के ६वें स्थान का शुभ है, ३.११ स्थानों में सब ग्रह शुभ है और वे सौम्य क्रूर (पापग्रह) ७वें स्थान में हों तो वर कन्या को अनिष्ठ फल देने वाले होते हैं ॥१२६-१२७॥

शुभाशुभग्रहाः

शनिः सूर्यं च लग्नेऽस्ते चन्द्रोलग्नेऽष्टमे रिपौ ।
कुजो लग्नेऽष्टमे कास्तशुक्रोऽष्टनेऽष्टमे रिपौ ॥१२८॥
गुरुमत्यौ सैंहिकेयो लग्ने तुर्ये च सप्तमे ।
बुधोऽष्टमे च जामित्रं विवाहः प्राणनाशकः ॥१२९॥
क्रूरयोरन्तरं लग्नं चन्द्रं च परिवर्जयेत ।
वर हन्ति ध्रुवं लग्नं शीतरश्मिश्च कन्यकाम ।१३०।

यदि शनि व सूर्य जो लग्न में हों या सातवें स्थान में हो चन्द्रमा १.६.८, भौम १.८.७ में और शुक्र ७.८.६ वें स्थान में हों बृहस्पति ८ वें में हो राहु । २.३.४। में हो ओर बुध ८.७ में हो तो निवास में प्राण का नाश करने वाले हैं और पापग्रहों के मध्य में चन्द्रमा अथवा

लग्न हो तो दोनों वर्जित करना चहिए पापग्रह युक्त लउन वर क
चन्द्रमा कन्या का शीघ्र नाश करता है इसे ही कर्तरीयोग कपते हैं।

विवाहे शुभमध्यमलग्नानि

तला च मिथुन कन्या पूर्वार्द्धौ धनुशो वृषः ।
एते लग्नाः शुभा न्त्या मध्यमाश्चरपरे स्मता ॥१३१॥

तुला, मिथुन, कन्या, वृष तथा धन का पूर्वार्ध ये राशियाँ विवा
लगन में शुभ है, येष लगन मध्यम हैं। मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, ध
का उत्तरार्ध मकर शुभ हैं ॥१३१॥

देशभेदेन-लग्नादिदोषाषवादः

लत्ता मालदके देशे षातश्च कुरुजांगले ।
एकार्गलं च का मोरे वेधोसर्वत्र वर्जयेत् ॥१३२॥

शत्तादोष सालवदेश में, पापदोष कुरु व जांगल देश में एका
र्गलदोष कश्मीर देश में और वेधदोष सभी देशों में वर्जित है।१३२।

नवमांलग्नचक्रम्

मेषे नयांशा मेवाद्या वषँ च मकराधिकाः ।
मिथुने च तुलाद्याः स्यु. कर्कटे कर्कटाक्रिदिक्रा ॥१३३॥
मेषाद्यौ च धनुःसिहौ गोकन्ये मकादिके ।
तुलाद्यौ युग्मकुम्भौ च कर्कादयौ मीनवृश्चिकौ ॥१३४॥
गोतुलीयांमकन्यानां नवांशाः शुभदान्स्मृताः ।
धनुष प्रथमो भागो विवाहेऽन्ये च मध्यमाः ।१३५॥

मेष आदि बारह राशियों से नवांशक करते हैं। लगन के न
भागु के १ भाग को नवांशक कहते हैं। मेष, सिंह, धन इन तीनों र
शियों में प्रथम नवमांश मेष से धन पर्यन्त वृष, कन्या, मकर इन ती

राशियों में नवमाँश मकर से कन्या तक मिथुन, तुला कुम्भ इन तीनों में नवमाँस तुला से मिथुन, तक और कर्क वृश्चिक, मीन, इन तीनों राशियों का नवमांस कर्क से मीन तक होहा है। वष, तुला मिथुन कन्या इनका नवमांश शुभ और धन का पहिला भाग शुभ शेष नव- मांस अशुभमिश्रत हैं और शेष नवमांस जो है वह भी विवाह में मध्यम हैं ।१२३-१२५।

नवमांश चक्रम्

रा न	म है	वृ २	मि ३	क ४	सि ५	क ६	तु. ७	वृ ८	ध. ९	म १०	कु. ११	मा १२
१	म	म	तु	क	म	म	तु	क	म	म.	तु	क
२	वृ.	कु.	वृ.	स	वृ.	कु.	वृ'	सि	वृ.	कु	वृ.	सि
२	मि	मी	ध.	क.	म	मी	ध.	क.	मि	मी	ध.	क
४	क	मे	म.		तु.	क.	मे.	म.	क.	मे.	म.	त
५	सि	ब	कु	बृ			कृ	द.	सि	ब	क	त-
६	क.	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध.	क	मि	मी	ध
७	तु.	क.	मे		तु.	क.	मे.	म.	तु	क.	मे	म
८	ब.	स.	ब.	क.	बृ.	सि	व.	क.	ब.	मि	ब.	क
९	धृ	क.	मि	मी	ध.	क.	मी.	मी'	ध	क.	मि	क।मी

अंशस्य पतिरशे च तन्मित्रं या शुभोऽपि वा ।
पश्यतीह शुभोज्ञेयः सर्वदोषाश्च निष्फला ॥०३६॥

नवांस का स्वामी अपने नवमाँस में हो और स्वामी का मित्र और सुभग्रह उसे देखते हो तो शुभफल कारक होता है और सब दोषों को निष्फल करता है।१३६।

होलाष्टकम्

शुक्लाष्टमी समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टम् ।

पूर्णिमामवधि कृत्वा त्याजयं होलाष्टकं बुधैः ॥१३८॥
शतुद्रयांच विपाशायामैरावत्यां त्रिपुष्करे।
होलाष्टकं विवहादौ त्याजयमन्यत्रशोभनम् । १३८॥

फाल्गुन शुक्लपक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा पर्यन्त आठ दि
होलाष्टकदोष कहते हैं। वह शतुद्री नदी विपाशा नदी और इराव
नदी से तटके देशों में और त्रिपुष्कर क्षत्र में विवाहादिक शुभकार्य
वर्जित है अन्य देशों में शुभ होता है ॥१३७-१३८॥

अन्ध-बधिर कुब्जलक्षम्

दिने सदांधावृषमेषसिंहा रात्रौ कन्यामिथुनकुलीरः।
मृगस्तुलालिबधराऽपराह्णेसन्ध्यासुकुब्जाधटचान्विमीना ।१३

बुष, मेष, सिंह, लग्न दिन में अन्ध है, कन्या, मिथुन, कर्क लग
रात्रि में अन्धे हैं, मकर, तुला, वृश्चिक लग्न अपरान्ह में बहरे हैं औ
धन, कुम्भ. मीन लग्न ये सन्ध्या में कुबड़े हैं ॥१३९॥

दिवांधो वरहन्ता च रात्र्यंधो धननाशकः।
दुःखदो बधिरो लग्नः कुब्जा वंशविनाशकः ॥१४०॥

दिन के अन्धेलग्न में विवाह करने से वर की हानि हो, रा
के अन्धे लग्न में विवाह से धन का नाश हो, बहरे लग्न में विवाह
तो दुःखदायी हैं और कुबड़े लग्न में विवाह करने से वंश का ना
होता है ॥१४०॥

गोधुलिलग्नविचारः

यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयकः।
गोधलिकः सविज्ञेयः शेषाधूलिमुखाः स्मृताः ॥१४१॥

जो ग्यारहवें स्थान में अथवा दूसरे तीसरे स्थानों में चन्द्र

हो तो गोधूलि लग्न है और शेष स्थान में चन्द्र के होने से धूलिमुज लग्न कहे जाते हैं ॥१४१॥

गोधूलिदोषः

कुलिकः क्रांतिसाम्य च लग्नेऽष्टेऽष्टमे शशी ।
तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पञ्चदोषैश्चदूषितः ॥१४२॥

कुलिकयोग और कान्तिसाम्य लग्न से छठवें तथा आठवें चन्द्रमा हो तो वह गोधूलि लग्न विवाह में त्यागना चाहिए क्योंकि यह लग्न पाँच दोषों से दूषित है ॥१४२॥

गोधूलिप्रमाणसमय

यदा नास्तङ्गतो भानुर्गोधूल्या पूरितं नभः ।
सर्वमंगलकार्येषु गोधूलिश्च तु शस्यते ॥१४३॥

जब सूर्य अस्त न हुआ हो और गायों के खुरों की धूलि आकाश में छाई हो तब यह गोधूलि मुहूर्त सब कार्यों में मंगलकारी होता है ॥१४३॥

गोधूलिनाशकयोग

अष्टमे जीवभौमौ च बुधौवाभार्गवोष्टमे ।
लग्नो षष्ठाष्टमे चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशकः ॥१४४॥

जो लग्न से आठवें गुरु, भौम, और शुक्र हों तो यह गोधूलि नाशक दोष हैं, उस मुहूर्त में सब कार्य वर्जित होता है ॥१४४॥

लग्नपुष्टिकराः ग्रहाः

लग्नोदैकादशे सर्वे लग्नपुष्टिकरा ग्रहाः ।
तृतीये चाष्टमे सूर्य सूर्य पुत्रश्च शोभनः ॥१४५॥
चन्द्रो धने तृतीये च कुजः षष्ठे तृतीयके ।
बुधज्यौ नवषट्द्वित्रिचतुः पंचदेशे स्थितौ ॥१४६॥

शुक्रो द्वित्रिचतुः पञ्च धर्मकमतनुस्तित ।
हाहुर्दशाष्ट षट पञ्च त्रिनवद्वदशोशुभः ॥११७॥

लगन से ग्यारवे स्थान में सब ग्रह शुभ हों, सूर्य ३, शनि
चन्द्रमा २।३, भौम ३ ६, बुध व बृहस्पति ९ ६।२।४।५ १० स्थानों
शुक्र २।३।४।५।९।१०।११ स्थानों में शुभ फलदायक हैं और राहु
१०।८।६।५।३।९।१२ स्थानों में शुभ फलप्रद हैं ॥१०-१३७॥

दिनमागइष्ट कालज्ञाम्

छायापावै रसोपेतैरेकविंशशतत भजेत् ।
लब्धांके घटियज्ञ या शेषांके च पला स्मृता ॥१४८॥

अब दिनमान नापने का प्रकार कहते हैं। अपने शरीर की
छाया को अपने पाँव से नापीये जितनी संख्या हो उसमें ६ औ
मिलावे, भिर १२१ में भाग देवे, जो लब्धि आवे घड़ी जानना। यदि
दिन बढ़ता हो तो चढ़ता दिन जानना और गतरंता हो तो शेश दिन
जानगा। भाग के देने से पीछे जो शेष रहेगा उसे साठ से बढ़ाक
पल कर लीजिये तो वही फल होगा।

उदाहरण—अपनी छाया को अपने चरण से नापा तो ८ हुआ
इससें ६ और मिलाया तो १४ हुआ इसका भाग १२१ में दिया तो
८ लब्धि मिली शेष को ६० से गुणा तो ५४० हुआ, इसमें १४ का
भाग देने से २८ पल मिले, फिर शेष में ६० का गुणाकर १४ का भाग
दिया तो शेष ३३ विपुल मिले-अर्थात् ८ घटी ३८ पल ३४ विपुल
इष्ट समय हुआ ॥१४८॥

आत्रिमामज्ञनम्

पूर्वाषाढानुराधा च थ्येष्ठाश्लेषा चरेवती ।
विशाखा च यदा मध्नि तदास्यादष्टमोदया ॥१४९॥

सूर्यभान्मौ लिम गण्यं सप्तहीनच शेषकम् ।
द्विगुणचद्विहीनं च दता रात्रि स्फुटा भवेत् ॥१५०॥
मस्तके मृगशीर्षे च मूले च नवमोदयः ।
अन्यदृक्षं तदा मृध्न यदा स्यादष्टमोदय ॥१५१॥

अब रात्रिमान निर्णय का प्रकार कहते हैं। पूर्वाषाढ़ा, अनुराधा येष्ठा, आश्लेषा-रेवती विशाखा नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र माथे पर हो तो आटवे नक्षत्र पर उदय जानिए और सूर्य के नक्षत्र से शिर के नक्षत्र तक गिनकर सात से भाग दें जो शेष बचे उसे दूना करके दो घठावे, जो शेष बचे उसे गुणा करके फिर दो घटा देवे तो वह रात्रिगत भाग्य होगा। जो मृगशिरा बा मूल माथे पर हों तो नवम नक्षत्र का उदय जानिये और जो अन्य नक्षत्र माथे पर हो तो आठवा नक्षत्र का उदय जानिये ॥१४६-१५१॥

केन्द्रस्य गुरोर्महत्वम् परिहार

किं कुर्वन्ति ग्रहाः लव मस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ।
मत्तमातङ्गयुथानां शतहन्ति च केशरी ॥ ५२॥

जिसके केन्द्र १।४।७।१० स्थानों में बृहस्पति अकेले हों तो और सब ग्रह क्या कर सकते हैं। अर्थात् कोई ग्रह अनिष्ट करके नहीं होते है—जैसे केल सिंह सैकड़ों हाथी का समूह नाश करता है वैसे ही वह और ग्रह जनित अरिष्टों का नाश भी कर देता है ॥१५२॥

जो लगन में शुक्र हो तो दस हजार दोषों का बुध हो तो हजार दोषों का और गुरु लग्न में होती लाख दोषों का नाश करता है।१५३।

शुक्रो दशसहस्राणिबू बुधो दशशतानि च ।
लणमेकं तु दोषाणां गुरुलग्ने व्यपोहन्ति १५३॥

सर्पाकार (त्रिनाड़ी) चक्रम्

अ.	आ	पुन:	उफा.	ह.	ज्ये	म.	शपूभा.		आदि
भ.	मृ	पु.पू.	फा.	चि.	अनु.	पूषा.	ध.	उ भा.	मध्य
कृ.	रो.	श्ले	म.	स्वा	वि	उ. षा.	श्र.	रे	अनन्त्य

सर्पाकारं लिखेच्चक्रं विवाहे च त्रिनाडीकम् ।
अश्विनीप्रमुखं मंच दत्त्वा साम्य विचारयेत ॥१५४॥
एकनाडीस्थनक्षत्रे दंपत्योर्मरण ध्रुवम् ।
सेवायां च भवेद्धानिर्विधाहेत्वशुभं भवेत् ॥१५५॥

सर्पाकार त्रिनाड़ी लिखकर अश्विनी आदि नक्षत्र की गक्षनाक्रम से २७ नक्षत्र रखे ऐसे ६ स्थानों में पूंछ तक सत्ताइसों नक्षत्र रखिये एक नाडी में यदि विवाह लग्न नक्षत्र पड़े तो वर कन्या की मृत्यु होती है और सेवाक्रम (चाकरी, में हानि होती है। अतः विवाह में शुभ नहीं होता है ॥१५५॥

वर्ज्या योगघट ३:

परिघार्द्धं व्यतीपात वैधृति सकलं त्यजेत् ।
विष्णुकुम्भे घटिका: पंचशूले सप्त मुकीर्तिता: ॥१५६॥
षड्गडे चातिगडे च नव व्याघाथातवज्रयो: ।
एतेतु नव योगाश्च दर्ज्या लग्ने सदा बुधै: ॥१५७॥

इन विषिद्ध नौ योगों को, पण्डितों ने वर्जित किया है। इसमें परिघियोग की ३० घटी, व्ययोपात और वैधृति की सम्पूर्ण विश्कुम्भ की ५ घटी, शुल की ७ घटी, गड तथा अतिगड की ६ घटी, व्याघात की ६ घठी, और वज्र की घटी ये (नवयोग विवाहादि शुभकार्यों में वर्जित है ॥१५६॥

वज्रयोगों का फल

व्यतीपाते भवेन्मृत्यु गण्डांते मरणं ध्रुवम् ।
अग्निदासी भवेद्वज्रे रुजश्चैवापि गंडके ॥१५८॥
वर्धव्य वैधतौ चैव निष्कुम्भे कामादचारिणी ।
वीर्यहीनोऽतिगडं च व्याघाते मतवत्सका ॥
परिघे च भवेद्दासी मद्यमाँसरता सदा ॥१५९॥

व्यतीपात्त और गंडांत विवाह करे तो मृत्यु हो, वज्र में आग से जले, गंड में रोग होवे, वैधृति में विधवा हों, निश्कुम्भ में कामातुर अतिगंड में बल रहित, व्याघात में मृतवत्सा अर्थात् पुत्र नहीं जीव परिघ में विवाह करे तो कन्या पराई दासी होकर मांस-मदिरादि का सेवन करे ॥१५८-१५९॥

पट्टाकारं चक्रम्

पट्टाकारं लिखेच्चक्रमष्टकोणसमन्वितम् ।
यस्मिन्नृक्षे भवेत्सूर्यस्तदाद्यं मध्यमं त्रयम् । १६०॥
त्रय त्रयंच सर्वत्र ततः पूर्वादितो लिखेत् ।
नक्षत्रत्रितये मध्ये पक्षद्वयविनाशनम् ॥१६१॥
पूर्वस्थाने भवेल्लक्ष्मीर्धनधान्यसमागम ।
अग्निकोण भवेन्मृत्युर्नारी कुलविनाशनी ॥१६२॥
दक्षिणेदुर्भगा नारी दारिद्रयमृत्युमाप्नुयात् ।
नैऋत्ये पुत्रलश्च सुखं सौभाग्यमेव च ॥१६३॥
पश्चिमे विधवाकन्या वायव्येव्यभिचारिणी ।
उत्तरे धनधान्यानि ऐशान्ये सुखसम्पदः ॥१६४॥

मांगल्यं सर्वकार्येष पट्टचक्रम् विचरयेत ।
गर्गाचार्येण संप्रोक्तं सर्वसिद्धप्रदायकम् ॥१६५॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिनिये, पुनः पट्टाकार चक्र मध्य कोठे में ३ नक्षत्न रखिये, इसी क्रम से पुर्वादि आठों दिशाओं में ३-३ नक्षत्र रखिये। जिस दिशा में दिन का नक्षत्र पड़े उसका फल इस प्रकार है मध्य में हो तो दोनों कुल का नाश। पूर्व में हो तो लक्ष्मी-धनधान्य की प्राप्ति हो। अग्निकोण में मृत्यू तथा कुल बिनाशिनी स्त्री। दक्षिणमें अभाग्नि स्त्री, दारिद्रय, मृत्यु। नैऋत्य में पुत्र-लाभ, सौभाग्य, सुख, पश्चिम में वैधव्य होवे, वायव्य में व्यभिचारिणी उत्तर में धनधान्य सुख और ईशानकोण में सुख-सम्पदा मिलती है। यह मङ्गल देने, वाला चक्र सब कार्यो में विचारे, क्योंकि सब कार्यो में सिद्धि देने वाले इस चक्र को गर्गाचार्य ने बताया है ॥१६०-१६५॥
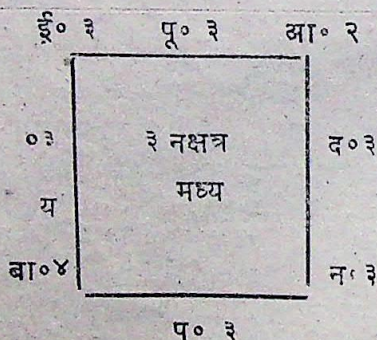
इति प्रथम विवाह प्रकरण समाप्तम्

वधूप्रवेशमुहूर्तः

हस्तत्रये ब्रह्मयुगे मघायां पुष्ये घनिस्टश्रवणोत्तरेष ।
मूलानुराधाहृयरेवतीषु स्थिरेषतग्नेषु वधुप्रवेशः ॥१॥

ह० चि० स्व० रो० मृ०, पुष्य, ध० श्र०, उत्तरा तीनों, म०, अनुष्ठा अश्वि०, रे० इन नक्षत्रों में और वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ इन लग्नों में वध प्रवेश करना शुभ है ॥१॥

द्विरागमनमहुर्त्तः

धातुयुग्मं हयो मैत्रं श्रुतियुगमं करत्रयम् ।
पुनर्वसुद्वयं पुषा मुल चाव्ययुत्तराव्यम् ॥२॥
विषमे वत्सरे मांभे मार्गे मेषे च फाल्गुने ।
मकरे मिथने मीने लग्ने कन्या तुला धनुः ॥३॥
भौमार्किवर्जिता वारा गृह्यन्ते च द्विरागमे ।
षष्ठोरिक्ता द्वादषी च अमावश्या च वर्जिता ॥४॥

रोहिणी, मृगशिरा, अश्विनी, अनुराधा श्रवण, घनिष्टा, हस्त, चिता, स्वाती, पुनवृसु, पुष्य, रेवती, मल और तीनों उत्तरा उसने नक्षत्रों में तिरागमन श्रेष्ठ है। नियम वर्ष तथा अगहन, फाल्गुन, वैसाख मास श्रेष्ठ है। मकर, मिथुन, मीन, कन्या, तुला, धन लग्न श्रष्ठ है मङ्गल और शनिवार तथा षष्ठी, रिक्ता (४-९-४) त्तदशी अमावस्या ये तिथियाँ वजित हैं ॥१-४॥

गर्भाधानमहुर्टः

श्रुतत्रये मृगे हस्ते मित्रभे ध्रुवसंज्ञकः ।
सद्वारे सत्तिथौ शुद्धस्थिरे लग्ने हौमुरा ॥५॥

शुभे त्रिकोणे केन्द्रस्थे पापे षष्ठेत्रिलोमक ।
युत्रकास: स्त्रियं गच्छेन्नरो युग्मासु रात्रिसु ॥६॥

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मृगशिरा हस्त अनुराधा तीनों रोहिणी नक्षत्रों में शुभवार शुभतिथि में स्थिर लग्न में त्रिकोण ५ ६ केन्द्र १।४।७।१० इनमें सौम्यग्रह और २।६।११ इनमें पापग्रह हों तो उस समय जो स्त्री प्रसङ्ग करे तो सन्तान अवश्य होवे, परन्तु राध्यर्ब लग्न त्याज्य है। पुत्र की इच्छा वालों को युग्मरात्रि में ही स्त्री प्रसङ्ग करना चाहिए ॥५-६॥

पुंसवनादिमहूर्त्त:

अर्द्रात्रयं भाद्रयुगम् मग: पूषा श्रुतिः कर: ।
मलेहि गुरौसूर्ये भौमे रिक्ता बिना तिथि: ॥६॥
आद्ये द्वये त्रयै मासे लग्ने कन्या जये स्थिरै ।
चापे पुंवनं कुर्वात् सीमान्तं चाष्ये तथा ॥८॥

आर्द्रा पुन: पुष्य पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, मृगशिरा रेवती। श्रवण, हस्त, मल, पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा इन १२ नक्षत्रों में पुंसवन संस्कार और इसमें गुरु रवि मङ्गलवारों में परन्तु रिक्ता ४।६।१४ तिथियाँ वर्जित है। इसमें १।२।३ मास और ६।१।२।७।५।११।८ इन लग्नों में पुंसवन करे और सीमान्त ८ वे मास ही करें।

नामकरण मुहूर्त्त:

पुनर्वसुद्वये हस्तत्रये मैत्र द्वये मगे ।
मूलोत्तराधामनिष्ठासु द्वाशकादशे दिने ॥९॥
अन्यत्रापि शुभे योग बारे बुधशशांकयो: ।
भालोगुरो: स्थिरे लग्न बालनामकृतं शुभ ॥१०॥

पु पु चि. अनु. ज्येष्ठी मृगशिरा, मल ३ उत्तरा, धनिष्ठा नक्षत्रों में और ११।१२ व दिन बुध, चन्द्र, रवि० गुरुवार और २।५।८ ११ लग्नों में बालक का नामकरण शुभ होता है।१०।

बालनिष्क्रमणमुहूर्तः

मैत्रत्रये हरिद्वन्द्व विधिद्वन्द्वेऽदितिवये ।
स्वाती हस्तोत्तराषाढ़ा पुर्वायंसहयेष च ।११।
सिंहत्रये घटे लग्ने भासयोस्त्रिचतुर्थयोः ।
यात्रातिथौ चनिष्कास्यः शिशुर्न वार्किभौमयो ।१२।

अनु ज्येष्ठा मूल. श्र ध: रोहिणी मृ, पुन, पुष्य, स्याती हस्त उत्तराषाढ़ा रेवती उत्तराफा अश्विनी ये नक्षत्र सिंह कन्या तुला, कुम्भ ये लग्न तीसरे चौथे मास में और यात्रा मुहूर्त में कही हुई तिथियों में पहले कन्या व पुत्र को बाहर निकालना शुभ है, परन्तु भौम शनिवार का वर्जित ही है।११-१२।

प्रसूतिकास्नानेत्याग

पुनर्वसुदयं चित्रा विशाखा भरणीद्वयम् ।
मुलमार्द्रा मघा हेया श्रवणो दशभस्तथा ।१३।
सोमशुक्र बुधा नारी प्रसूतिस्नानकर्मणि ।
हेया प्रतिपदा षष्ठी नवमी च तिथिक्षयम् ।।१४।

पु.वसु. पुष्य, चित्रा, बिशाखा, भरणी कृ, मूल आ, म, श्रवण ये दश नक्षत्र प्रसूति स्नान में वर्जित हैं। सोम, शुक्र, बुध ये वार वर्जित है और १।६।९।२९ ये तिथियाँ वर्जित है। अतः इसमें प्रसूपी स्त्रियाँ स्नान नहीं करें।१३-१४।

प्रसूतिकास्नाने जलपूजन मुहूर्त

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूल स्वात्यनुराधयो ।

धनिष्ठा च त्रय पूर्वा ज्येष्ठायां मृगशीर्षके ।१५।
एते यत्रागताभानि प्रसनि स्नानकोविदं ।
बारे भौमार्कयोर्जीवे स्नानयुक्तं सदैव हि ।१६।

रोहिणी तीनों उत्तरा, रेवती, मल स्वाती अनुराधा, पूर्वात्रय, ज्येष्ठा, मृगशिरा ये १४ नक्षत्र लें और भौम रवि गुरु ये वार प्रसूती स्नान में विशेष शुभ है ।१५।

नवाम्बरधारणं

हस्तादिपञ्चकेऽश्विन्यां फनिष्टां च पौष्णभे ।
गुरोशुक्रे बुधे वारे धार्यं स्त्रीभिर्नवाँबरम् ।१७।
लग्ने भाने च कन्या मिथुने चं वृष ।
पुंभिः पुपर्वसुद्वन्धे रोहिण्युत्तरभेष च ।१८।

हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा अश्वि धनिष्ठा रेवती पुण्य पुनर्वसु रोहिणी तीनों उत्तरा इन १० नक्षत्रों गुरु, शुक्र, बुध ये वार, मीन कन्या, मिथुन, वष ये लग्न स्त्री को नवीन वस्त्र धारण करने के लिए शुभ है ।१७-१८।

जलपुजनम

मूला दतिदवयं ग्राह्यं श्रवण न मृगा.कर ।
जलावाप्यर्चनं हेया: शुक्रमवाकभूमिजा : ।१९।

मल पुन पुष्य अनुराधा श्रवण मृग हस्त ये नक्षत्र ग्राह्य शुक्र हैं, शनि, रवि, भौम ये वार त्याज्य है । ऐसे मुहूर्त में प्रसता स्त्री कूप जलाशय का पूजन करे ।१९।

नवान्नभोजनमुहुर्त:

नवान्नभोजने ग्राह्यं वस्त्र प्रोक्तामशेषकः ।
वारादिको सूर्यसोमो नक्षत्र श्रवणो मृगः ।२०।

वस्त्र धारण करने के मुहूर्त में और श्रवण मृग नक्षत्र तथा वस्त्र धारण के बग में और सूर्य चन्द्रवार ये नवीन भोजन करना उत्तम है।२०।

अन्नप्राशनमुहुर्तः

अदयान्नप्राशने पूर्वाः सर्पार्द्रा कृतिका यमः ।
ध्रुवारे रोहिणी मैत्रे द्विवेन्द्राश्चराक्षसः ।२१।

नक्षत्राणि परित्यज्य वारौ भौमार्कनन्दनौ ।
द्वादशीसप्तमीरिका पर्वनन्दास्तु वर्जिताः ।२२।

लग्नेषु च झषो ग्रहणो वृषः कन्या च मन्मथः ।
शुक्लपक्षे शुभे योगे सग्राह्यः शुभचन्द्रमाः ॥
मासे षष्ठाष्टमे पुसां स्त्रियो मासि च पञ्चमे ।२३।

बालक के अन्न प्रासन मुहूर्त में पूर्वा तीनों अश्लेषा, आर्द्रा, कृतिका व भरणी तीनों उत्तरा रोहिणी अनु०, विशाखा ज्येष्ठा मल ये नक्षत्र और भौम शनि ये वार २।५।६।१४।३०।१।११ ये तिथियाँ व्यतीपातादि दुष्ट योग ये सब वर्जित है और मीन, वृष, मिथुन, कन्या लगन शुभ है और शुक्लपक्ष तथा शुभ योग में और शुभ चन्द्रमा रहने पर तथा छठ तथा आठवे मास में पुत्र के अन्न प्राशन में ग्राह्य हैं और कन्या का अन्नप्राशन पांचवे मास में करें।२१-२३।

चूड़ाकर्म तथा आभूषण धारण

पुनर्वसुद्वय ज्येष्ठ मृगरेव श्रवणत्रये ।
हस्तत्रये च रेवत्यां शुक्लपक्षोत्तरायणे ।२४।
लग्ने गोस्त्रीधनुः कुम्भो मकरो मन्मथस्तथा ।
[illegible] ।२५।

हस्तेत्रये हेरिद्वयद्वे पूर्वाद्य मृगएचके ।
मूले पौष्णो च नक्षत्रे बुधऽर्कं गुरुशुक्रयोः ।२६।

पुनवसु पुष्य, ज्ये० मृ० श्र० ध० हस्त, चित्रा स्वाती रेवती येन-क्षत्र शुक्लपक्ष, उत्तरायण वृष कर्क, कुम्भ, धन, मिथुन ये लगन और चन्द्र, बुध, शुक्र ब्रहस्पति वार लर्वाङ्क मुण्डन में श्रेष्ठ हैं । जना मास रिक्ता ४।८।१४ ये मुण्डन और आभूषण धारण में वर्जित है । हस्त चित्रा स्वाती श्रवण धनि,पुन पुन्य मघा अभि पुन पुष्य ऽश्लेमल रेवती ये नक्षत्र रवि, बुध, गुरु, शुक्र ये दिन आभूषण धारण करने में शुभ है ।२४-२६।

विद्यारम्भमुहूर्त

देवोत्थाने मीनचापे लग्ने वर्षे च पञ्चमे ।
हस्तत्रये हरिद्वन्द्वे पुर्वाश्रिमूगपञ्चके ।२७।

मूले पौष्णौ च लोपेशे बुधेर्के गुरुशुक्रयोः ।
विद्याऽरभोऽत्र वर्ज्यश्च षष्ठयनध्यायरिक्तकाः ।२७।

रिक्तायाँ च आयायाँ च प्रतिपत्सु विवर्जयेत् ।
बुधेन्दुवासरे मौखं च शनिर्भौमौ मृतिप्रदौ ।२८।

विद्यारम्भे गुरुः श्रेष्ठो मध्यमौ भृगुभास्करो ।
बुधन्तू चोर्पोवद्यायाँ शनिभौमो परित्यजेत् ।३०।

देवोत्थान कार्तिक शुक्ल ११ से आषाढ़ शुक्ल ११ तक ह चि स्वा. श्र ध. तीनों पूर्वा अ. पु. श्ले म. रे. श. नक्षत्र में ब्र. सू. ब्र शु बार में मीन धन लगन और पांचवे वर्ष में विद्यारम्भ करना चाहिये इसमें षष्ठी, अमावस्या, परिवा, चतुर्थी, नौमी चतुर्दशी ये तिथियाँ वर्जित हैं । यदि बुध व चन्द्रवार में विद्यारम्भ करे तो बालक मूर्ख हो शनि भौम में मृत्यु हो विद्यारम्भ में गुरुवार श्रेष्ठ है, शुक्र रवि

मध्यम है। बुध भोग उपविद्या में श्रेष्ठ है, शनि मङ्गल सर्वथा त्याज्य है। किसी किसी के मत से बुधवार वर्जित भी है।२७-३०।

यज्ञोपवीत मुहूर्त:

रोहिणी रसभेंऽश्विन्यां ह्युत्तरे पूर्विकात्रये।
हस्तत्रये श्रुतिद्वन्द्वे पौष्ण मैत्रे जलेशभे।३१।

द्वितीयाया तृतीयायां पञ्चम्यां दशमीत्रये।
बुधेशुक्रे ज्याकचन्द्रे वारे पक्षे तथासिते।३२।

लग्ने वृषे धनुः सिंहे कन्यामिथुनयोरपि।
व्रतबन्ध शुभे योगे ब्रह्मक्षात्र विशां ते।३३।

पापौ भौम शनिः केतुः क्रूरोराहूर्हरित्रणा।
सौम्यः सोमो बुधश्चैव गुरुः शुक्रस्तथैव च।३४।

रोहिणी मृग, आ. पुन पुष्य श्लेषा, अश्विनी, तीनों पूर्वा तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती श्रवण धनिष्ठा अनु शत, रेवती नक्षत्र में उत्तरायण सूर्य में २।३ ५।१०।११।१२ तिथि, रवि चन्द्र, बुध शुक्र गुरुवार, शुक्लपक्ष और वृष, धनु, मिथुन लग्न तथा शुभ योग ये व्रत बन्ध में शुभ है इनमें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनों का व्रत बन्ध शुभ ही कहा है, किसी के मत से मल में व्रत बन्ध होना शुभ है और पुनुमु का त्याज है किन्तु बड़े ग्रन्थों में चारों वेदों के ब्राह्मण के मुहूर्त पृथक-२ लिखे गये हैं।३१-३४।

कर्णवेध मुहूर्त:

श्रुपित्रयेऽविद्वन्द्व मैत्रे हस्तत्रयोत्तरे।
भगे विधियुते मले पूशाश्वे सौम्यवासरे।३५।

द्विस्वभावघटे लग्ने कर्णवेधः प्रशस्यते ।
चैत्रेपौषौ हरिस्वाप वर्षं च युगलं त्यजेत् ।३६।

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा, ह
उत्तरा, पूर्वा फा, चित्रा, अनु, रोहिणी, मृगशिरा, मूल, रेवती अश्वि-
वनी ये नक्षत्र सौम्यवार और मिथुन कर्क, धन, मीन, कुम्भ, लग्न,
शुभ है। चैत्, पौष, आसाढ़ शुक्ल १ और समवर्ष कर्णवेध में त्याज्य
हैं ॥ ३६ ॥

वास्तुकर्म मुहुर्त

पूर्वाषाढ़ादितिद्वन्द्वं विधियुग्मं हरित्रयम् ।
उत्तराफाल्गुनीहस्तवयं मूलं च रेवती ।३७।

मैत्राऽश्विनी च लग्नानि सिंह कन्या घटोऽथ: ।
मिथुन मकरो ग्राह्य वास्तुकर्मण कोविदैः ।३८।

श्रावणश्चाथ बैशाखः कार्तिकः फाल्गुनस्तथा ।
मासेषु मार्गशीर्षश्च वास्तुकर्मणि शस्यते ।३९।

वज्रव्याघातशूलानि व्यतीपातश्च गण्डकः ।
विष्कुंभ परिघो वर्ज्योवारो भौमश्चभास्करः ।४०।

पूर्वासाढा, पुन-पुष्य रोहिणी, मृग श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा,
उ. फा. हस्त, चित्रा स्वाती, मूल, रेवती अश्विनी, ये नक्षत्र और सिंह
कन्या, कुम्भ, वृष, मिथुन, मकर ये लग्न श्रावण वैशाख कार्तिक
फाल्गुन, मार्गशीर्ष ये मास वास्तुकर्म में शुभ है। वज्र, व्याघात, व्यती-
पात, गण्ड विश्कुम्भ परिघ ये योग और मङ्गल रविवार ये वास्तु
कर्म में त्याज्य हैं ॥ ३७-४० ॥

वापीकूपतडागदेवालयानां मुहुर्ताः

आर्द्रा शतभिषग्श्लेषा विशाखा भरणीद्वयम् ।

त्याज्यौ च द्वादशीरिक्ता षष्ठी चन्द्रक्षयोऽष्टमी ।४१।
प्रतिपच्च तिथिवारो त्याज्यौ शनिकुजौ तथा ।
देवमूर्तिप्रतिष्ठायां स्थिरे लग्नोत्तरायणे ।४२।

आर्द्रा शतभिषा, आश्लेषा विशाखा भरणी कृतिका ये नक्षत्र १।४।६।१४ ३०।६।१।८ ये तिथि, शनि भौमवार ये सब त्याज्य हैं। स्थिर लग्न वृश्चिक, कुम्भ तथा उत्तरायण का सूर्य इनमें वाप्यादि तथा देव प्रतिष्ठा करे ।४१-४२।

गृहप्रवेशमुहूर्तः

विशाखा भरणी हेया श्लेषाख्या च मघा तथा ।
अमावस्या च रिक्ता वारे भौमे रवौ तथा ।४३।
गृहप्रवेशो वैशाखे श्रावणे फाल्गुने तथा ।
आश्विने च स्थिरे लग्ने ग्राह्यः पक्षो बुधैः सितः ।४४।

विशाखा, भरणी श्लेषा, मूल, ये नक्षत्र, ३० ४.९।१४ ये तिथि भौम रवि ये सब वार गृह प्रवेश में वर्जित हैं वैशाख श्रावण, फाल्गुन अश्विनी ये मास, वृष- सिंह वृश्चिक, कुम्भ ये स्थिर लग्न हैं और शुक्लपक्ष गृहप्रवेश में उत्तम कहा गया है ।४३-४४।

हलचक्रमुहूर्तः

अनुराधाचतुष्कं च मघादितियुगे करे ।
स्वातिश्रुतिविधिद्वन्द्वे रावत्यामुत्तरात्रये ।४५।

गोस्त्रीरूपे हलं कार्यंहेयः सूर्यः शनिः कुजः ।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च हितीया पर्वयुग्मकम् ।४६।

त्रिभिस्त्रिभिः पत्र त्रिभिः पञ्चभिर्द्वयम् ।
सूर्यभादिनम यावद्भानि हि ले क्रमात् ।४७।

अनु. ज्ये. मूल. पूर्वा मघा पुनर्वसु पुष्य हस्त स्व. श्रवण रोहिणी मृग, रेवती तीनों उत्तरा, इन नक्षत्रों में हल चलाने में शुभ है। वृष, मीन कन्या ये लग्न और रवि शनि मङ्गलवार ६।४।१४।६।१२।३०। १५।२ तिथि व्यतीपातयोग ये हल कर्म में त्याज्य है। सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिने, इस क्रम से हल चक्र में प्रथम हानि फिर वृद्धि इसी प्रकार उसका फल जानना चाहिये।४५-४७।

यात्राविचार:

अनुराधात्रयं हस्तो मृगाऽश्वौ चादितिद्वयम्।
यात्रायां रेवती शस्ता निद्यार्द्राभरणीद्वयम्।४८।

मघोत्तरा विशाखा च सर्पश्चान्ये न मध्यमाः।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च पर्वाणि च विवर्जयेत्।४९।

लग्ने कन्यामन्मथश्च मकरश्च तुलाधरः।
यात्रा चन्द्रबले कार्या शकुनं च विचारयेत्।५०।

अनु ज्ये. मूल. ह. मृग. अश्विपुन पुष्य रेवती ये नक्षत्र यात्रा में शुभ है, आर्द्रा, भरणी कृतिका मघा तीनों उत्तरा विशाखा आश्लेषा नक्षत्र अधम हैं शेष नक्षत्र रोहिणी, पू० फा० पू० षा०, स० ध० श० योग वर्जित हैं। कन्या मिथुन तुला मकर ये लगन शुभ हैं। चन्द्रबल शकुन आदि का विचार अवश्य कर यात्रा करें।४८-५०।

दिक्शूलज्ञानम्

शनौ चन्द्रेत्यजेत्पूर्वां दक्षिणां च दिशेगुरौ।
सूर्ये शुक्रे पश्चिमायां बुधं भौमे तथोत्तराम।५१।

दिशाशूल में शनि-सोम को पूर्व दिशा में गुरु दक्षिण दिशा में

रवि-शुक्र का पश्चिम और मङ्गल-बुध को उत्तर में दिशाशूल रहता है। इन दिनों में उस दिशा से यात्रा वर्जित है।५१।

सर्वदिक्यात्रानक्षत्राणि

सर्वदिग्गमने हस्तः पुषाश्वौ श्रवणी मगः
सर्वसिद्धिकरः पुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा ।।५२।

हस्त रेवती अश्वि मृग, पुष्य श्रवण ये नक्षत्र सभी दिशाओं में शुभ है। उनमें पुष्य नक्षत्र ऐसा सिद्धिप्रद हैं जैसे विद्या में बृहस्पति होता है।५२।

योगिनीवासनिर्णयः

प्रतिपत्सु नवम्यां च पूर्वस्यां दिशि योगिनी।
अग्निकोणे तृतीयायेकादश्यां तु सा स्मृता ।।५३।।
त्रयोदश्यां च पंचम्या दक्षिणास्यां शिवप्रिया।
द्वादश्यां च चतुर्थ्यां च नैर्ऋत्यां कोणगामिनी।५४।
चतुर्दश्यां च षष्ठां च पश्चिमायां च योगिनी।
पूर्णिमायां च सप्तम्यां वायुकोणं तु पार्वती ।।५५।।
दशम्यां च द्वितियायुत्तरस्यां शिवा वसेत्।
ऐशान्यां दश चाष्टम्यां योगिनी समुदाहृता ।।५६।।

१-९ को योगिनी पूर्व में ३-११ को अग्निवाण में ५-१३ को दक्षिण में १२-४ को नैऋत्य में १४-६ को पश्चिम में १५-७ को वायव्य में १०-२ को उत्तर में ३०-८ को इशान्य कोण में योगिनी वास करती है।५३-५६।

योगिनीफलम्

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी।

दक्षिणं धनहन्त्रीं च सम्मुखे मरणप्रदा ॥५७॥

अब अमृतसिद्धि योग भी कहते हैं हस्त नक्षत्र रविवार को पड़े जो अमृतसिद्धि योग होता है। मृग० सोम को, अश्विनी मङ्गल को ऽनु० बुध को, पुष्य को गुरु, रेवती शुक्र रोहिणी शनि को हो तो अमृतसिद्धि योग होता है। ऐसा पुरातन पण्डितों ने कहा है।

ई०	पू०		आ
	१ ९	।३। ११	
	८।३०।		
	२।३३। योगिनी	।५। १३	द०
उ०	१।२९। ६। १४	।४ १२	
वा०	प०	नै	

यात्रातिथयः

मासस्य प्रतिपद्दृष्टा द्वितीया कामकारिणी ।
आरोग्यदा तृतीया च चतुर्थी कलहप्रदा ॥५८॥
पंचमी च श्रिया युक्ता षष्ठी कलहकारिणी ।
भक्ष्यपानसमायुक्ता सप्ती सुखदा सदा ॥५९॥
अष्टमी व्याधिदा नित्यं नवमी मृत्युदा स्मृता ।
दशमी भूरिलाभ स्यादेकादशी च हेमदा ॥६०॥
द्वादशी प्राणसंदेहा सर्वसिद्धा त्रयोदशी ।
शुक्ला वा यदि वा कृष्णा वर्जनीया चतुर्दशी ॥६१॥
पौर्णिमायाममायां च प्रस्थानं नैव कारयेत् ।
तिथिक्षये च मासांते ग्रहणान्ताद दिनत्रयम् ॥६२॥

·मासारम्भ कृष्णपक्ष का १ दो श्रेष्ठ, २ या कामकारिणी ३ या आरोग्यप्रदा, ८ मी व्याधिप्रदा, ६ मी मृत्युदा १० मी लाभप्रदा, ११ मी स्वर्गप्रदा, १२ मी प्राणसन्देहा, १३ मी सिद्धिप्रदा है दोनों पक्षों की ११ मी और अमावस्या पूर्णिमा त्याज्य हैं। २५-३० में भूलकर भी यात्रा न करें और क्षयतिथि मासांत और ग्रहण के तीन दिन बाद तक भी यात्रा त्याग देवें ।।५८-६२।।

राहुविचार:

अष्टसु प्रहरार्द्धेषु प्रथमाद्येष्वहानशम् ।
पूर्वस्यां वामतो राहुस्तुर्याशं तु यदिशि व्रजेत् ।।६३।।
राहु प्राच्यां ततो वायुदक्षिणेशानपश्चिमे ।
आग्नेयोत्तरनैर्ऋत्ये प्रहरार्द्धं च तिष्ठति ।।६४।।
जयश्च दक्षिणे राहुर्योगिनी वामतः शुभा ।
पृष्ठतो द्वयमाख्यातं चन्द्रमाः सम्मुखे शुभ ।।६५।।

राहु की चौघड़ियों जिनमें आठों दिशाओं में राहु दिन रात्रि में चलता है, उसे चक्र में विचार करें। यात्रा में राहु दक्षिण में शुभ हैं योगी बाम शुभ है, और पीछे दक्षिण दोनों शुभ है पर चन्द्रमा सन्मुख और दक्षिण ही शुभ हैं ।।६३-६५।।

दिवा पर्वादिवासचतुर्थघटिकाराहुचक्रम्

पू	बायु	दक्षि	ईशा	पश्चि	अग्नि	उत्तर	नर्ऋ		दिशा
३॥	७॥	११।	१५।	१८॥	२२॥	२६।	३०	१०	घटी उपरा
आवत	या	या	या	या	या	या	या	न्त	३॥ यावत

रात्रि चातुर्थघटिकारहु विभागचक्रम

पूर्व	वायु	दक्षि	ईशा	शशिव	अग्नि	उत्तर	नऋ	दिशा
२२ पावत	७।। या	४१।। या	४५ या	४८।। या	२२। या	६ या	६० या	३० घटी उपरन्त ३।। यावत

चन्द्रमा पूर्वादी क्रम से चारों दिशाओं में चलता है वह यात्रा में मेषादि क्रम से सम्मुख तथा दाहिने शुभ होता है। अर्थात मेष सिंह धन का चन्द्रमा पूर्व में रहता है वृष, कन्या, मकर का चन्द्रमा दक्षिण में मिथुन तुला और कुम्भ का चन्द्रमा पश्चिम में, कर्क, बृश्चिक मीन का चन्द्रमा उत्तर दिशा में वास करता है।६६-६७।

चन्द्रवासज्ञानम्

चन्द्रश्चरति पर्वाजिक्रमेणे दिक्चतुष्टयम् ।
मेषादिकेषु यात्रायां समुखे दक्षिण शुभः ।६६।

मेष च सिंहे धन पूर्व भागेः वृष च कन्या मकरे च याम्ये ।
युग्मे तुलायां च घटे प्रतीच्यां कर्कालिमीनेदशि चोत्तरस्याम्

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
राशि	मे.ध.सि.	वृष कन्या म.	मि. तु कु	कर्क बृचिमीन

चन्द्रवासफलम्

सम्मुखेचार्थलाभाय पृष्ठे चन्द्रे धनक्षयः ।
दक्षिणे सुखसंपत्तिर्वामे तु मरणं भवेत् ।६८।

सम्मुख चन्द्रमा से धनलाभ, पीठ पीछे हो तो धन की हानि, दाहिने हाथ हो तो सम्पति और बांये हो तो मृत्यु होती है।६८।

रवि विचारः

यामयुग्मे च रात्रौ च वामे पुर्वादिगो रविः ।
यात्रायां दक्षिणे वामे प्रवेशे पृष्ठके द्वयम् ।।६६।।

पिछले प्रहर रहते हुए १ प्रहर दिन चढ़ते सूर्य पूर्व में बसते हैं फिर दो-दो प्रहर दक्षिण में १ प्रहर दिन रहते तथा एक प्रहर रात्रि तक पश्चिम में फिर दो-दो प्रहर उत्तर में सूर्य वास करता। वह यात्रा में दाहिने और बाँये शुभ है और गृह प्रवेश में सम्मुख और पीछे का चन्द्रमा शुभ है।६९।

कुलिकयोगः

मनुभानुर्दिशासर्पस्सवेवांशिवनः क्रमात:।
रविवारान्मुहूर्ताऽथ कुलिको निंदितः स्मृता ॥७०॥

रविवार को १४ वाँ मुहुर्त कुलिक है, सोम को १२ वाँ भौम को, १० वाँ बुध को, ८ वाँ गुरु को ६ वाँ शुक्र को तथा शनि को, २ रा कुलिकयोग मुहुर्त होता है, यह कुलिक योगशुभकार्य में वर्जित है।७०।

कालहोरा विचार:

गता नाड्यो द्विगुणिता: पञ्चभिश्चविभाजिता:।
शेष त्याज्यं युतश्चैकः सप्तशेषं सुशासितम्।७१।
कालहोरेति विख्याता सौख्य सौम्यफलप्रदः।
सूर्य शुक्रबुधश्चन्द्रो मन्दोजीवकुजाः क्रमात्।७२॥
यो वारो यत्र दिवसे तदादि गणयेत्क्रमात।
शुभग्रहस्य सुखदो मुहूर्तोऽनिष्टदुःखद।७३।

कालहोरा में रवि आदि ७ वारों का चक्र घूमता है सूर्योदय से गत घटी को दूना करके उसमें पाँच भाग दे, जो शेष बचे उसको घटाकर एक जोड़े फिर सात का भाग दे जो शेष बचे वही होरा होता है। या बचे तो रवि २ में चन्द्र, ३ मंगल, ४ में बुध ५ में गुरु ६ में शुक्र, ७ में शनि को क्रम से शुक्र, बुध, चन्द्र, शनि, गुरु, मंगल, इस प्रकार प्रतिदिन होरा दिवस होता है। शुभ ग्रह होरा में सुख, अनिष्ट मुहूर्त में दुःख होता है।६१-७३।

तिथि शुकल पक्ष की प्रतिपदा से
वार रविवार से.
नक्षत्र अश्विनी से.

सर्वकमुहूर्त साधनम्

तिथिर्वारं च नक्षत्रं नामाक्षरेसमन्वितम् ।
द्वित्रिचतुर्भिर्गुणितं रससप्तअष्टभाजितम् ।।७४।।
आदिशून्ये भवेद्धानिर्मध्यशून्येरिपोभयम् ।
अन्त्यशून्ये भवेन्मृत्युः शेषांके विजयी भवेत् ।।७५।।

तिथि बार नक्षत्र और नाम के अक्षरों को जोड़कर पिण्ड बनावे उसे ३ स्थानों में रखे १ ले में २ का गुणा दूसरे में ३ का गुणा तीसरे में ४ का गुणा करके प्रथम में ६ का दूसरे में सात का और तीसरे में ८ का भाग दे जो प्रथम स्थान में शून्य आवे तो हानि होवे मध्य स्थान में शून्य में भय, अन्त्य स्थान में शून्य में मृत्यु हो और जो तीनों में शेष अंक बचे तो विजयी होवे ।७४-७५।

उदाहरण तिथि ५ बार ५ नक्षत्र ५ नाम राजा का २ है उसको एकत्र जोड़ा तो १७ हुआ, इसको ३ जगह रखा । १७ × २ = ३४ हुए दूसरी जगह १७ × ३ से गुणा तो ५१ हुआ, तीसरे जगह १७ × ४ से गुणा तो ६८ हुआ दो से गुणे अंक ३४ में ६ का भाग दिया तो २ शेष बचा तीनों जगह अंक शेष बचे हैं अतः विजयी होगा ।

चन्द्रसूर्यस्वरशकुनविचार:

शशिप्रवाहे गमनादिशस्तं सूर्य प्रवाहे न हि किंचनाऽपि ।
प्रष्टजंघःस्याद् बहुमानभागेः रिक्ते च भागेविफलसतम ।७६।

जो चन्द्रस्वर बायां चले तभी यात्रा करे, सूर्य स्वर (दाहिनी) चले तो अशुभ होने से यात्रा न करे और जो दोनों स्वर (शून्य भाग) चले तो सब कार्य निष्फल हो जाता है ।।७६।।

यात्रायांसम्मुखादिशुक्रविचार:

वर्जितो खलःशुक्रः सम्मुखे हन्ति लोचनम् ।
वामे पृष्ठेगूलो नित्यं राघवेचवास्तगः शुभः ।।७७।।

जो यात्रा में शुक्र दाहिने हो तो दुःख देता है सम्मुख हो तो नेत्र पीड़ा और बाँये और पीछे हो तो शुभ फल देते हैं। शुक्रांत में कोई भी शुभ कार्य न करे।७७।

क्रय विक्रयमुहूर्त:

पुष्ये भाद्रपदायुग्मं मैत्रेश्रवणविश्वनी ।
हस्तोत्तरा मृगस्वातिस्तथा तथाऽऽश्लेषा च रेवती ॥७८॥
ग्राह्याणि भानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधः ।
चन्द्रभार्गवजीवाश्च वारः शकुनमुत्तमम् ॥७९॥

पुष्प पूर्वाभा उत्तराभा० अनुराधा, श्रवण, अश्वि० हस्त, तीनों उत्तरा, मृग, स्वाती, ऽश्ले० रेवती ये नक्षत्र क्रय-विक्रय कार्य में शुभ है ऐसा पण्डितों ने कहा है और चन्द्र शुक्र बृहस्पति में बार तथा शुभ शकुन विचार कर क्रय-विक्रय करना ही शुभ है।७८-७९।

धनिष्ठापंचकविचार:

धनिष्ठापंचकं त्याज्यं तृणकाष्ठादिसंग्रहे ।
त्याज्या दक्षिणदिग्यात्रा गृहाणां छादनं तथा ।८०॥

धनिष्ठा से रेवती तक पाँचों नक्षत्रों में पंचक कहलाते हैं, इनमें तृण काष्ठादि का संचय, दिशा की यात्रा, घर का छवाना, प्रेतदाह खाट का बुनवाना आदि कार्य न करे।८०॥

तैलाभ्यङ्गविचार:

तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः ।
बुधे धनं गुरौ हानिं शुक्रे दुःखं शनौ सुखम् ॥८१॥
रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका ।
गोमयं भृगुवारे च तैलाभ्यंगे न दोषभाक् ॥८२॥

रविवार को तेल लगाने से ताप हो सोमवार को शोभा बढ़े मंगलवार को मृत्यु, बुध को धन, गुरु को हानि शुक्र को दुःख और शनि को सुख होता है। यदि अवश्य तेल लगाना ही हो रवि का पुष्प वृहस्पति को दर्या मंगलवार को मिट्टी शुक्र को गोकरड ले २ कर तेल लगाने से दोष नहीं होता ।८१-८२।

रोगीस्नानमुहूर्तः

आश्लेषाद्वितयं स्वातौ रोहिणी च पुनर्वसुः ।
रोगिस्नाने रेवती च वर्जयेदुत्तरत्रियम् ॥८३॥
रिक्तातिथौ चरे लग्ने वारे च रविसौम्ययोः ।
स्नानं च रोगिणां प्रोक्तं द्विजभोजनसंयुतम् ।८४।

अब रोगी के स्नान में वर्जित नक्षत्र कहते हैं आश्लेषा मघा, स्वाती, पुनर्वसु, रेवती, तीनों उत्तरा नक्षत्रों में रोगी को स्नान न करावे ४-९-१४ तिथियों में मेष, कर्क, तुला मकर, लग्न में और रवि, मंगलवारों तथा शुभ चन्द्र में ब्राह्मण को भोजन कराकर स्नान करावे तो शुभ होता है ।८३-८४।

अनन्दादियोगः

आनन्द कालदण्डश्च धूम्राक्षश्च, प्रजापतिः ।
सौम्यो ध्वांक्षोऽध्वजश्चापि श्रीवत्सोवज्रमुद्गरौ ।८५
छत्रं मित्रं मानसाख्य पद्माख्य लुम्बकस्तथा ।
उत्पातमृत्युकाणश्च सिद्धिश्चार्थः शुभोऽमृतः ।८६।
मुशलो गदातङ्कराक्षसाश्च चरः स्थिरः ।
वर्द्धमानश्च विज्ञेयो अष्टाविंशतिरित्यपि ॥८७।
फलं तु नामसदृशं योगदैवज्ञभाषिताः ।
अश्विनी रविवारे व योगो ह्यानसंज्ञकः ॥८८॥

मृगशीर्षे शीतरश्मिः श्लेषायां क्षितिनंदनः ।
बुधे हस्तोनुराधा च देवराजपुरोहिते ।८९।
विश्वेदेवोऽभ्रुगुर्वारे शनौ वारुण सञ्ज्ञकः ।
तदानंदाख्ययोगः स्यात्कालदंडायः क्रमाथ ९०।

(ज्योतिषियों) ने इन योगों के फल नाम के अनुसार ही कहे हैं रविवार को अश्विनी, सोम को मृगशिरा, भौम को अश्लेषा बुध को हस्त, गुरु को अनुराधा, शुक्र को उत्तराषाढ़ा शनि को शतभिषा होता है तो आनन्दादि योग होता है। इसी प्रकार कालदण्डादि योग भी जानने चाहिए ।८५-९०।

आनन्दादियोगचक्रम्

आनन्दादि	सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु	श.	फल
आनन्द	अ.	म.	श्ले.	ह.	ऽनु.	उषा	शत	सिद्धि
कालदण्ड	भा.	आ.	म	चि	वि	ज्ये.	अ.	मृत्यू
धूम्र	कृ	पु	पू.	स्वा.	मु	सू	श.	भय
धाता	रो	पु	उ.	वि	पू.	ध	रे.	सौख्य
सौम्य	मु	श्ले	ह.	उ	श.	अ	श.	अ शुभ
ध्वा	आ	म	चि.	ज्ये	अ.	पू.	भ	अरिष्ट
केतु	पु.	पू	स्वा	मू	सू.	उ	कृ.	सिद्धि
श्रीवत्स	पू	उ	वि.	पू.	ध	रे	रो	शुभ
वज्र	ऽले	ह	ऽनु	उ	श	अ	म	कलह
मुद्गर	म.	चि	ज्ये	अ.	पू	भा.	आ	हानि
छत्र	पू	स्व	मू	श्र	उ.	कृ	पु	सिद्धि
मित्र	उ.	वि.	पू	ध.	रे.	रो	पु.	सौख्य
मानस	ह	ऽनु	उ	श	अ	म	ऽश्ले	धन

अमृतसिद्धियोगः

हस्तः सूर्ये मृग सोमे वारे भौमे तथाऽश्विनी ।
बुधे मैत्रं गुरौ पुष्य रेवती भृगुनन्दने ।९१।

रोहिणी रविपुत्रे च सर्वसिद्धि प्रदायकः ।
अय चामृतसिद्धः स्वाद्योयः प्रोक्तपुरातनः ।.६२।।

यात्रा में बायीं ओर की योगिनी सुखप्रदा, पीछे की वांछित फलप्रदा, दाहिनी ओर की धननाशक है और सम्मुख की योगिनी मरणप्रद होती है ।५।

यमघण्ट योगः

मघादित्ये विशाखेन्दा भौमे चार्द्राऽनिलोगुरौ ।
बुधसल विधिः शुक्रतमघण्टः शनौः करः ।।६४।।

पदम	चि	ज्ये.	अ	पू.	म.	म.	म.	शुभ । कर्म
लुम्ब	स्वा	मू	स्र	उ	कृ.	पू.	यु.	हानि
उत्पात	बि.	पू.	ध.	प.	रा.	पु.	उ	बिघन
मृत्यु	ऽनु	उ.	श.	अ.	म	ले	ह	मृत्यु
कोण	ज्य.	अ.	पू.	भ	आ.	म.	चि.	धनहानि
सिद्धि	म.	स्र.	उ.	कृ	यु.	प	स्वा	मनकामना
शुभ	प.	ध.	रे.	रो	प.	उ.	चि.	सबसौख्य
अमृत	उ.	श.	अ	भ	ह	ऽनु	शुभ	
समुशल	अ	प.	भ.	आ.	म	चि	ज्ये	मानहानि
गद	स्र.	उ.	कृ	प.	यु	स्वा	म.	रोग
तङ्ग	ध.	रे	रो	प.	उ	बि	प	वाहन
चर	पू	भ	आ	म	चि	ज्य	अ	चलन
प्रवर्ध	रे	रो	प	उ	बि	प	ध	घृद्धि

रविवार को मघा, विशाखा सोम को, आर्द्रा मङ्गल को, मूल बुध को, स्वाती गुरु को, रोहिणी शुक्र को और शनि को हस्त हो तो यमघट योग होता है ये योग शभ कार्य में वर्जित किए हैं ।६३।

अब अमृतसिद्धियोग चक्रम्								अथ यमघण्टायोग चक्रम्							
र०	च०	म०	बु०	गु०	शु	श०	वार	सू०	च०	म०	बु०	गु०	शु०	श०	वार
ह०	मं०	ऽशिव	ऽनु	पुय	रे	रो.	नक्षत्र	म०	बि०	आ.	म.	स्व	रों,	ह०	नक्षत्र

मृत्युयोग:

नन्दा सूर्ये च भौम भद्रा भद्रा भार्गवचन्द्रयो: ।
बुधे जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ।६४।

रवि भौम में नन्दा, शुक्र और सोम में भद्रा बुध में जया, गुरु में रिक्ता शनि में पूर्णा तिथियाँ हों तो मृत्युयोग होता है यह योग शुभ कार्य में वर्जित हैं ।।६४।।

मृत्योगचक्रम्

रवि भौम	शुक्रचन्द्र	बुध	गुरु	शनि	बार
१।६।११	२।७।१२	३।८।१३	४।९।१४	५।१०।१५।३०	तिथि

क्रकचयोग:

तिथ्यङ्केन समायुक्तो वारांको यदि जायते ।
त्रयोदशांक: क्रकचो योग: प्रोक्त पुरातन ।६५।

यदि तिथि और वारों की संख्या का जोड़ १३ हो जाय तो क्रकच योग होता है ।।६५।।

अथ क्रकचयोग चक्रम्							
सू०	च०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	बार
१२	११	१०	९	८	७	६	तिथि

अन्धदिनक्षत्राणि

अन्धाक्षश्चिकाणाक्षोदिव्यलोचनः ।
गणयेद्रोहिणीपूर्वं सप्तवारयनुक्रमात् ।९६।
अन्धे च लभते शीघ्रं मन्दे चैव दिनत्रयम् ।
काणाक्षे मासमेकं तू सुनेत्रे नैव लभ्यते ।९७।

अब अन्धाक्ष. चिपिटाक्ष, काणाक्ष और सुलोचन इन चार प्रकार के नक्षत्रों की सजा नष्ट वस्तु में विचारने के लिए कहते हैं । रोहिणी आदि सात बार गिने, रो० अन्ध, मृग०, चिपि, आर्द्रा काणा, पुन० सुलोचन, इस रीति से और भी समझ लें । अन्ध नक्षत्र की नष्टवस्तु जल्दी मिलें, जो चिपिटाक्ष और मन्द नक्षत्र में जाय तो महीने से मिलें और सुलोचन में जाय तो कभी भी न मिलें ।।९६-९७।।

अथ अन्धादिनक्षत्राणि चक्रम्

रा०	पु०	उ०	वि०	पू०	घ०	र०	अन्ध
मृ०	श्ले०	ह०	ऽनु०	उ०	श०	अ०	चिपि०
आ	म०	चि०	ज्ये०	अ०	पू०	भ०	काणा
पु०	पू०	स्वा०	म०	स्र०	उ०	कृ०	सुलो०

दक्षिणादिचारनक्षत्राणि

पुनर्वसुमृगश्चार्द्रा ज्येष्ठा मैत्रं करस्तथा ।
पूर्वाषाढ़ोत्तराषाढ़े मूलं दक्षिणचारिणः ।९८।
कृत्तिका रोहिणी पुष्यश्चित्राश्लेषा च रेवती ।
शतं घनिष्ठा श्रवणो नव मध्यमचारिणः ।९९।
अश्विनी भरणी स्वाती विशाखा फाल्गुनीद्वयम् ।
मघा भद्रपदा युग्म नव चोत्तरचारिणः ।१००।

पुन० म० आ० ज्ये० अनु० ह० पू० षा० उ० षा० मू० ये नौ नक्षत्र पू० दक्षिणचारी है । कृ० रो० पु० चि० ऽले० रे० श० घ० श्र० ये मध्यामचारी है । अश्वि० भ० स्वा० वि० पू० फा० उ० फा० म० पू० भा० उ० भा० ये नौ नक्षत्र उत्तराचारी है ।

अथ नक्षत्रचार

पु	मं	आ.	ज्ये.	अनु	ह	पू.	षा	उ षा	दक्षिण
कृ.	रा.	पू.	चि.	श्ले.	रे.	श	ध.	स्र.	मध्य
अ.	भ.	स्वा.	वि.	पू.फा.	म.	पू	भा.	उ भा.	उत्तर

वत्सयोगः

भ्रमतीद्रदिशोवत्सो मासाना च त्रिक त्रिकम् ।
आदौ भाद्रपदं कृत्वा सुव्यतो दिक्चतुष्टयम् ।१०१।
यात्राविवादसम्बन्ध द्वारे च गृहहर्म्ययोः ।
मूललेर्मेलने युद्धे वत्सस्याभिमुख त्यजेत् ।१०२।

पूर्व आदि चारों दिशाओं में वत्सरूप तीन-तीन मास में सत्यक्रम से घूमते हैं। भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक पूर्व में, मार्ग, पौष, माघ दक्षिण में, फा० चैत्र, वैशाख, पश्चिम में और ज्ये०, आ. श्रा० उत्तर में घूमते हैं। यात्रा विवाद, सम्बन्ध, गृहद्वार राजभिवन और युद्ध इन कार्यों में देखना चाहिए, इस योग का सामने और दाहिने होना वर्जित हैं। १०२।।

वत्स चक्रम्
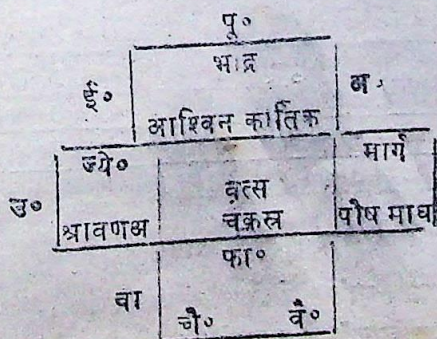
नक्षत्रतारासंख्या

त्रयमेऽश्वे थाग्नौ षडविधौ पंच मृगेत्रयम् ।
एकमार्द्रा च नक्षत्रं चत्वारि च पुनर्वासौ ।१०३।
पुष्ये त्रयं रसाः सार्पे मघायां चैव पचकम् ।
द्वयं द्वय च फाल्गुन्या अथ हस्ते तु पंचकम ।१०४।
चित्रास्वात्योरेककं चतुष्कं च द्विवसते ।
त्रयंस्यादनुराधायां ज्येष्ठायां च त्रयं स्मृतम् ।१०५।
मूले रुद्रश्चतुष्क च पूर्वाषाढ़ तथोत्तरे ।
त्रयं चाभिजितः प्रोक्तः श्रवणे च त्रयं तथा ।१०६।
घनिष्ठायां च चत्वारः शत शतभिषासु च ।
द्वयं द्वयं भाद्रयोश्च द्वातिंशदपि चात्यके ।१०७।

अश्विनी आदि नक्षत्रों की तारायें लिखते हैं अ० के ३, भ० के ३ कृ०, के ६, रो० के, ५, मृ के ३ आ० के पु० के ४, पु० के ३ आश्ले० के ६, म० के ५, पूफा० के २ उफा० के २, ह०, के चित्त के १, स्वा० के १, वि० के ४ ऽनु० के ३, ज्ये० के ३, मूल के ११, पूषा के ४, उषा के ४ अभि के ३, श्रवण के ३, ध० ४, श० १००, पूभा० २, उभा० २, रे० ३ ये नक्षत्र तारायें हैं ।।१०३-१०७।।

अ० । भ० कृ० । रा । प आ । पु० पु० आ० म । पू० फा उ० फा ह० चि
३ । ३ । ६ । ५ । ३ । १ ४ । ३ । ५ । २ । ५ । १
स्वा । वि ऽनु । ज्ये । मू० । पू० । उ० । अ० । श्र० । ध० । श० । पू० उ० । रे०
१ । ४ । ३ । ११ । ४ । ४ । ३ । ४ । १०० । २ । २ । ३२

ग्रहजन्यदोषज्ञानम्

लग्नेऽष्टमे व्यये सूर्ये क्षेत्रपालस्य दषणम् ।
आकाशदेव्याश्चन्द्रे तु लग्ने षष्ठऽस्टमे व्यये ।१०८।

द्वादशे दशमे भौमे डाकिनीदूषणं स्मृतम् ।
वनदेव्युद्भवो दोषः सप्तमे द्वादशे बुधे ॥१०९॥
जामित्र द्वादशे जीवे देव दोषो निगद्यते ।
अस्ते व्यये दैत्यपूज्ये जलदेव्याश्च दूषणम् ॥११०॥
शनैश्चरे व्यये चास्ते दोषः स्यादामवातजः ।
जामित्रे द्वादशे राहुः कुमतिजातिदूषणम् ॥१११॥

यदि सूर्य १।८।१२ में होवे तो क्षेत्रकाल का दोष हो उस समय क्षेत्रपाल की पूजा करे। जो चन्द्रमा १।६।८।१२ हो तो आकाश देवी का दोष हो उसकी पूजा करे, जो मङ्गल १०।१२ में हो तो डाकिनी दोष हो और बुध ७।१२ में हो तो वन देवी दोष हो, जो बृहस्पति १२।७ हो तो देवदोष हो, जो शुक्र, ७।१२ हो तो जलदेवी दोष हो जो शनिवार १०।७ में हो तो आमवात दोष, जो राहु ७।१२ में हो तो कुमति से दोष की उत्पत्ति होती है।

लग्नपरत्वेराशिदोषज्ञानम्

पितृदोषो भवेन्मेषे क्षुधानानिविवर्णता ।
वृषे गगनदेव्यास्तु ज्वरो ह्रु स्वप्नभक्षिरुक् ॥११२॥
मिथुने च महामाय दोषो वेलाज्वरोऽनिलः ।
कर्के च शनिकन्यादोषी हात्यरोदनभीनता ॥११३॥
सिंहे जलेप्रेतदोषो दिवा शीतज्वरोऽरुचिः ।
गृहदोषश्च कन्यायां क्रोधालस्ये तथारुचः ॥११४॥
क्षात्रपालभवो दोषस्तुले तन्तनपीडनम् ।
वृश्चिके नागदोषश्च ज्वालादेहे कुबुद्धिता ॥११५॥
चापे देहे भवेद्दोषो ज्वरः शोकोदरव्यथा ।

मकरे चण्डिकादोषो देहभगो ज्वरोऽनलः ११६।
मलितप्रेतदोषश्च कुम्भे देहस्य पीडनम्।
मीने चपिंगलादोषो ज्वरो जजाल शकम् ।११७।

जो मेष राशि या लग्न में जन्म हो तो पितृदोष होवे और कुरूप होवे, जो वृष में जन्म हो तो आकाशदेवी दोष करे ज्वर हो, भयानक स्वप्न देखे नेत्रपीड़ा पावे। मिथुन में हो तो महामाया दोष करे, सामयिक ज्वर आवे, अग्निमय होवे। कर्क हो तो शाकिनी दोष से रोवे, हंसे, कभी मूक (गूंगा) हो जो सिंह में हो तो दुष्टग्रह दोष से शारीरिक बाधा, क्रोध, आलस्य, अरुचि होवे। तुला में जन्म हो तो क्षेत्रपाल दोष करे, सन्तान की पीड़ा हो। जो वृश्चिक में हो तो सर्प से भय, देहपीड़ा ज्वर को उत्पन्न करे कुबुद्धि होवे। धन में जन्म हो तो देहदोश ज्वर, शोक, पेटपीड़ा शूल होवे। और जो मकर लग्न में जन्म हो तो चन्डकादोष हो अङ्ग-भङ्ग हो और बात ज्वर हो। कुम्भ हो तो प्रेतदोष हो मलिन रहे देह पीड़ा हो, मीन में जन्मे तो पिंगलायोगिनी महाज्वर करे।११७।

क्षेत्रदोष

व्यये धर्मे तृतीये च षष्ठे पापग्र हो यदा।
हतो गरैर्जलैः शस्त्रैस्त य दोषः कुलोदभवः।११८।
शनौ जले कुजे शस्त्रैर्युते सूर्ये स्वबन्धुजः।
राहो बिक्रमतो नेष्टः शांतिपूजा द्विजार्चनैः।११९।
स्वक्षेत्रे गोत्रदोषोऽपि परक्षेत्रे परोदभवः।
शत्रुक्षत्रं शत्रुदोषो मित्रे स्वजनसंभवः।१२०।

जो १२।९।३।६ इनमें पापग्रह हो तो विष जल तथा शस्त्र से मृत्यु पायें, या कुल दोष हैं। जो इन स्थानों में शनि हो तो जल में डूबे

मङ्गल हो तो हथियार से मरे, सूर्य हो तो अपने वंश वालों के हाथ से या विष से मरे और राहु हो तो कुत्सित प्रकृति उपजे चोर और कुमार्गगामी होय तो ब्राह्मणों की पूजा करने से शांति हो जाय, जो स्वक्षत्री ग्रह पड़े तो गोत्रद्वेष हो और जो परक्षत्री दूषित ग्रह पड़े तो पर मनुष्य जनित पीड़ा हो जो शत्रु क्षेत्री हो शत्रु से क्लेश पावे और मित्र क्षत्री हो तो मित्रों से भी दुःख पावे ।१२०।

तिथिवार नक्षत्रशुभाशुभयोगः

आदित्ये चाश्विनी हस्तमूलपुष्य त्तरात्यम् ।
सिद्धयोगो धनिष्ठा च तिथिरप्यष्टमी तथा ।१२१।

सूर्ये विशाखा भरणी ज्येष्ठा मत्रै मघा तथा ।
चतुर्दशी द्वादशी च विरुद्धा सप्तमी तिथिः ।१२२।

सोमे पुष्योऽनुराधा च श्रवणो रोहिणी मृगः ।
नवमी दशमी चापि सिद्धयोगाः प्रकीर्तिता ।१२३।

चन्द्रे चित्रः विशाखा च तथाषाढ़द्वयं बुधैः ।
एकादशी तथा षष्ठी वर्जनीया त्रयोदशी ।१२४।

भौमे मलाश्विनी सार्पे मृगाश्चोत्तरभाद्रपात ।
सिद्धाऽष्टमी तृतीया च सप्तमी च त्रयोदशी ।१२५।

सिद्धा शतभिशार्द्रा च धनिष्ठा पूर्वभाद्रपात ।
मघा चोत्तरषाढ़ा च द्वितीया दशमी कुजे ।१२६।

बुधे अनुराधा पुष्ये च कृत्तिका रोहिणी मृगः ।
द्वादशी सिद्धयोगाश्च द्वितीया सप्तमी तिथिः ।१२७।

बुधे मूलं धनिष्ठा च रेवती चाश्विनी मृगः ।
तृतीय नवमी चापि वर्जयेत प्राहुप्ततिथिः ॥१२८॥
गुरौ च दशमी पञ्च पौर्णमासी विशेषतः ।
पोष्णविश्वअनुराधा च सिद्धि पुष्य पुनर्वसु ॥१२९॥
जीवे षताभषार्द्रा च कृत्तिकोत्तरफाल्गुनी ।
विधिर्मृगोऽष्टमी षष्ठी चतुर्थी च विवर्जिता ॥१३०॥
शुक्र चित्राऽर्यमा पूषा श्रवणस्च पुनर्वसुः ।
सिद्धा चैकादशी षष्ठी प्रतिपंच त्रयोदशी ॥१३१॥
भार्गवे रोहिणी पुष्यो ज्येष्ठाश्लेषा मघा तथा ।
द्वितीया सप्तमी चापि वर्जनीया सदा बुधैः ॥१३२॥
शनौ च रोहिणी स्वाती श्रवणः पूर्वफाल्गुनी ।
मघा च नवमी सिद्धा चतुर्थी च त्रयोदशी ॥१३३॥
शनौ हस्तोत्तराषाढ़ा चित्रा चोत्तरफाल्गुनी ।
रेवती च सदा वर्ज्या तिथिः षष्ठी च सप्तमी ॥१३४॥

यदि रविवार को अश्विनी, हस्त, मूल, पुष्य तीनों उत्तरा धनिष्ठा नक्षत्र ८वो तिथि होय तो सिद्धि योग । रविवार को विशाखा, भरणी ज्येष्ठा, अनुराधा, मघा और १४।७।१२ तिथियां हो तो कुयोग । सोमवार को पुष्य अनुराधा श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, ९।१० तिथि हो तो सिद्धियोग । सोमवार को चित्राविशाखा, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़-आश्लेषा, मृगशिरा उत्तराभाद्रपद और ८।९।७।१३ तिथि हो तो सिद्धि और १।१३।८ तिथि हो तो कुयोग । यदि मङ्गलवार को मूल, अश्विनी योग हो । मङ्गलवार को शतभिषा, आर्द्रा, धनिष्ठा—पूर्वाभाद्रपदा,

मघा, उत्तराषाढ़ और २।१० यिथि हो ती कुयोग। बुध को अनुराधा, पुष्प, कृत्तिका, रोहिणी-मृगशिरा और १२,२।४ तिथि हो तो सिद्धि-योग। बुध को मूल, धनिष्ठा, रेवती, अश्विनी मृगशिरा ३।६।१ हो तो कुयोग होता है। वृहस्पतिवार को--अश्विनी, रेवती, अनुराधा, पुनवसु, पुष्य ५।१०।१५ तिथि हो तो सिद्धियोग। गुरुवार को-शत भिषा आर्द्रा, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, रोहिणी, मृगशिरा और ८।४।६ तिथि हो तो कुयोग होता है। शुक्र को चित्रा—उत्तरा फाल्गुनी, रेवती, श्रवण, पुनर्वसु, ११।६ १३ तिथि हो तो सिद्धि-योग। शुक्र को रोहिणी पुष्य, आश्लेषा, ज्येष्ठा, २।७ तिथि हो तो कुयोग। शनिवार को-रोहिणी, स्वाती, श्रवण, पूर्वाफाल्गुनी मघा—६ ८।१।३ तिथि हो तो सिद्धियोग तथा शनि को हस्त, उत्तराषाढ़ा, चित्रा—उत्तराफाल्गुनी, रेवती, ६।७ तिथि हो तो कुयोग होता है ॥१३४॥

चर चलं स्मृतं स्वाती पुनवश्रुतित्रयम् ।
क्रूरमुग्रं मघा पूर्वात्रितय भरण तथा ॥१३३॥
ध्रूव स्थिरं विनिविष्ट रोहिणी चोत्तरात्रयम् ।
तीक्ष्णदारुणमाश्लेषा ज्येष्ठार्द्रा मूलमेव च ।
लघुक्षिप्रं स्मृत पुष्यो हस्तोऽश्विन्यभिजस्मृतम् ।
मृदु मैत्र चित्राऽनुराधा रेवती मृगः ॥३५॥
मिश्रं सा साधारणं प्रोक्त विशाखा कृत्तिका तथा।
नक्षत्रेश्वेषु कर्माणि नामतुल्यानि कारयेत् ॥३६॥

२८ नक्षत्रों की सतासंज्ञा भिन्न-२ हैं उनमें प्रथम स्वाती पुन०, श्रवण० धनि० शतभिषा० ये नक्षत्र चर चल धर कार्य में शुभ है, पूर्वा तीनों-पूर्वाफा० पूर्वाषा० पूर्वाभाद्र, मघा, भरणी ये क्रूर संज्ञक क्रूर-कार्य में रोहिणी, उत्तरात्रयु-उत्तराफा, उत्तराषा, उत्तराभाद्र ये ध्रुव

बार	तिथि	नक्षत्र	योग	फल
रविवार	८	अश्वि०, हस्त, मूल, पुष्प, धनिष्ठा, तीनों उत्तरा	सिद्धियोग	शुभ
रविवार	१०, १२,७	विशाखा, मघा, ज्येष्ठा, भरणी, अनुराधा	कुयोग	अशुभ
सोमवार	६, १०	पुष्या, अनुराधा, श्रवण रोहिणी मृगशिरा	सिद्धयोग	शुभ
सोमवार	११,६, १३	चित्रा, बिशाखा,पूर्वाषाढ़ा	कुयोग	शुभ
मंगल०	८,३,७,१२	मूल, अश्विनी,आश्लेषा मृगशिरा, उत्तरा, भाद्रपद	सिद्धयोग	शुभ
मंगल०	८,१०	शतभिषाआर्द्रा धनिष्ठापूर्वा भाद्रपद मघा उत्तराषाढ़ा	कुयोग	अशुभ
बुधवार	१०,२,७,१०	अनुराधा, पुष्य, कृत्तिका रोहिणी, मृग	सिद्धयोग	शुभ
बुधवार	३,६,१	मृग, मूल,धनिष्ठा, रेवती अश्विनी	कुयोग	अशुभ
गुरुवार	१०,५,१५	रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु पुष्य, अनुराधा	सिद्धयोग	शुभ
गुरुवार	८,६,४	शतभिषा, आर्द्रा, कृत्तिका शिरा उत्तराफाल्गुनी रोहि	कुयोग	अशुभ
शुक्रवार	११,६,१३	चित्रा उत्तराफाल्गुनी रेव० श्रवण, पुनर्वसु	सिद्धियोग	शुभ
शुक्रवार	२, ७	रोहिणी, पुष्य, आश्लेषा ज्येष्ठा	कुयोग	अशुभ
शनिवार	६,४,१,३	रोहिणी स्वाती,श्रवण,पूर्वा फा० मघा	सिद्धियोग	शुभ
शनिवार	६, ७	हस्त, उत्तराषाढ़ा, चित्रा उत्तरा फाल्गुनी रेवती	कुयोग	अशुभ

संज्ञक नक्षत्र स्थिर कार्य में शुभ है. आश्लेषा, ज्येष्ठा आर्द्रा मूल ये तीक्ष्णसंज्ञक नक्षत्र तीक्ष्ण काय में ग्राह्य हैं, हस्त, पुष्य, अश्विनी, अभिजित ये लघु-क्षिप्र संज्ञक नक्षत्र शीघ्र स्वल्प कार्य में शुभ है। चित्रा अनुराधा मृगशिरा रेवती ये मृदु मैत्रसंज्ञक नक्षत्र केवल मैत्री कार्य में शुभ है। और विशाखा कृतिका ये मिश्र व साधारण नक्षत्र सामान्य कार्य में शुभ हैं इन सब नक्षत्रों का फल संज्ञानुसार जानना चाहिए।३३-३६।

नक्षत्राणां संज्ञाबोध चक्रम्

स्वा.	पु	श्र.	ध.	श.	चर	चल
म०	पू०	पू०	पू०	भ०	क्रूर	उग्र
रो	उ०	उ०	पू०	ध्रु	स्थिर	
श्ले	ज्ये०	आ०	०	ती	दरु	
ह०	पु०	अ०	०	लघु	क्षिप्र०	
चि	ऽनु	मृ	रे	०	मैत्र	
वि	कृ०	०	०	०	मिश्र	सामा

शनिचक्रं नराकारं लिखेद्यत्र शनिर्भवेत् ।
तन्नक्षत्रं मुखे दत्वा यावन्नाम नरस्य च ।३७।

तद्वद्विचारयेत्तत्र तथा ज्ञयं तत्र शुभ शुभम् ।
एक मुखे च नक्षत्रं चत्वारि दक्षिण करे ।३८।

त्रयं त्रयं पादयश्च वामपस्ते चतुष्टयम् ।
ललाटे द्वि त्रयं नेत्रे हृदि पञ्च गुदेद्वयम् ।३९।

एकं त दक्षिणे कुक्षौ दक्षत्राणि क्रमेण च ।
हस्तद्वये नक्षत्रे लाभो व मे न रोगदा ४०।

हृदि श्रीर्मस्तके राज्यं पादे पर्यटन फलम् ।
नेत्रं सुखे गुदे मृत्युः कु । शोक दिविजयेत् ।।४१।।
जदापिपुजनार्चाः कल्याणं जायते सदा ।
अन्धान्येव विचार्याणि वाहनानि बहूनि च ।।४२।।

अब शनिचक्र का विचार करते हैं शनिचक्र नराकारचक्र लिखे जिस नक्षत्र में शनि हो वह नक्षत्र मुख पर लिखकर जन्मनक्षत्र तक गिने फिर शनि तक नक्षत्रादि क्रम से प्रत्येक अङ्ग पर सब नक्षत्र बैठावे जिस अङ्ग में जन्मनक्षत्र पड़े वहाँ का फल कहे १ मुख में ४ दाहिने हाथ में, ३ दक्षिण पांव, ३ वामपांव ४ बांये हाथ, २ ललाट २ नेत्र, ५ हृदय, २ गुदा और १ दक्षिण काँख में इसी क्रम पूर्वक धरे १ मुख में जन्मनक्षत्र हो तो हानि करे बाये हाथ पर रोग हृदय में लक्ष्मी, ललाट में राजपद, दक्षिण हाथ में लाभ, चरणो में भ्रमण, नेत्र में सुख, गुदा में मृत्यु और कांख में पड़े तो शोक हो। इसकी शांति के लिये जप, दान, पूजा, ब्राह्मण भोजनादि से कल्याण होता है। इसी प्रकार अन्य ग्रन्थों से अनेक वाहनादि का भी विचार करें ।।३७-४२।।

देशविशेषण शनिराशिफलम्

मेषे शनौ गुर्जरेषु प्रभासे चार्बुदेबृषे ।
मिथुने जायते पीड़ा स्थले मूलस्थलेषु च ।।४३।।
कर्के काश्मीरके बाधा शक्रप्रस्थे मृगाधिपे ।
शनैश्चरे चकन्यायां मालवाख्ये च सक्षयम् ।।४४।।
तुलावृश्चिकचापेषु यदि याति शनैश्चरः ।
न वर्षन्ति तदा मेघ पृथ्वी दुर्भिक्षपीड़िता ।।४५।।

सुभिक्षं मकरे कुम्भे जायते बहुधा शनै ।
स ने च सर्वलोकानां दुर्भिक्षं तु क्षयो भवेत् ॥४६॥

मेष का शनि गुर्जर देश में पीड़ा देता है, वृष का प्रभाप क्षेत्र में और अबुन्द देश में मिथुन का मूलस्थल देश में, कर्क का काश्मीर देश में सिंह का इन्द्रप्रस्थ देश में, कन्या का मालबा देश में पीड़ा करे, तुला, वृश्चिक व धन का हो तो कम वर्षा हो दुर्भिक्ष हो, कुम्भ-मकर का हो तो सुभिक्ष हो, मीन का हो तो सर्वत्र अकाल और दुर्भिक्ष से सब लोगों को पीड़ा होवे ॥४३-४६॥

एकस्मिन्मासे पंचवारानुसारेणफल

यत्र मासे रवेर्वारा जायते पंच संततम् ।
दुर्भिक्षं छत्रभगश्च तदाऽऽस्ते चमहद्भयम् ॥४७॥
सोमस्य पंचवाराश्च यत्र मासे भवन्तिहि ।
धनधान्यसमृद्धिश्च सुखयुक्तास्ति मेदिनी ॥४८॥
यत्र मासे महीसूनोर्जायस्ते पंचवासराः ।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभङ्गस्तदा भवेत् ॥४६॥
बुधस्य पंचबाराश्चज यन्ते च निरन्तरम् ।
प्रजाश्च सुखसम्पन्नाः सुभिक्षं च प्रजायते ॥५०॥
यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पते ।
विग्रः पश्चिमे देशे पीड़ युद्धं च जायते ॥५१॥
शुक्रस्य पंचवाराश्च यत्र मासे निरन्तरम् ।
प्रजा बृद्धिः सुभिक्षं च सुखं यत्र प्रवर्तते ॥५२॥
शनिवारा यदा पंच पातले कम्पते फणी ।
ईशानदेशभङ्गश्च वह्निदाहो महघता ॥५३॥

जिस महीने में पांच रविवार हो तो अन्न मंहगा, छत्रभङ्ग तथा महाभय होवे। जिस महीने में पाँच सोमवार हो तो धनधान्य का वृद्धि और सब प्रजा सुखी, एक ही मास में पाँच मङ्गलवार पड़े तो पृथ्वी रुधिर से पूरित (विप्लव) तथा छत्र-भङ्ग हो। १ मास में पांच बुधवार पड़े तो प्रजा सुखी हो सुभिक्ष रहे। १ मास में पाँच गुरुवार पड़े तो पश्चिम में विग्रह, पीडा और युद्ध, होना सम्भव है। महीने में पाँच शुक्रवार पड़े तो प्रजा बढ़े सुभिक्ष और सुखी हों। १ मास में पांच शनैश्चर पड़े तो पाताल में शेषनाग कांप जाय ईसान जेश का भङ्ग हो अग्नि प्रकोप (आग अधिक लगे) और अन्न मंहगा होवे।४७-५२।

अभिजिन्मुहूर्तफलम्

शंगुल्यो विंशतिः सूर्ये शंकुः सोमे च षोडश।
कुजे पचदशांगुल्यो बुधवारे चतुर्दश।५४।
त्रयोदजगुरोर्वारि द्वादशाजशुक्रयोर्कः।
शंकमले यदा छाया मध्यान्हे च प्रजायते।५५।
तदा चाभिजिदाख्याता घटिकैका स्मृता बुधैः।
अत्र कार्याणिसर्वाणिसिद्धिंयाति कृतानि च।५६।
जातोऽभिजात राजास्यादव्यापार सिद्धि रत्तमा।
महकरवियोगेन सर्वमंगलदायिनों।५७।

रविवार को २० अंगुल की सींक और सोमवार को १६ अंगुल की, मङ्गल १५ अंगुल की, बुध १४ अंगुल की, बृहस्पति १३ अंगुल की, शुक्रवार १२ अंगुल की, शनि को १२ अंगुल की शकु सीकखड़ी करे। जब दोपहर के अन्त में अभिजित मुहुर्त एक गढ़ी का होता है, वह सभी कार्य से सिद्धिप्रद होता है।

यदि अभिजन मुहूर्त में जन्म हो तो जातक राजा हो और सब प्रकार के व्यापार में सिद्धि प्राप्त होती है ।।५४-५७।।

अथाभिजन्मधुहूर्त चक्रम्							
वार	र०	च०	मं०	बु०	गु०	शु०	शनि०
अ०	२		६१	१४	१		१२

शुक्रोदयफलम्

अन्नवृद्धि: फाल्गुने स्याच्चैत्रं च धनसंपद ।
बैशाखे विग्रहो ज्येष्ठे वृष्टिश्च श्रयसी ।।५८।।
आषाढ़े चदिते शुक्रे जलं भवति दुर्लभम् ।
श्रावणे च पशोः पीड़ा भाद्रे धान्यसमृद्धयः ।।५९।।
आश्विने सर्वसम्पत्तिः शुभः कार्तिकमार्गयो: ।
पौषे माये छत्रमङ्गो यद्युदेति भृगोः सुतः ।।६०।।

जो शुक्रोदय फाल्गुनी में हो अन्न सस्ता, चैत्र में धन सम्पत्ति हो बैशाख में उदय हो तो राजाओं में लड़ाई, ज्येष्ठ में उदय हो तो विशेष वर्षा करे। आषाढ़ में हो तो जलमध्यम होवे, श्रावण में उदय हो तो पशुओं को पीढ़ा, भादों में हो तो अन्न बहुत हो। और आश्विन में उदय हो तो सर्व सम्पत्ति करे और कातिक या अगहन में हो तो सभी प्रकार से शुभ है पर जो पौष या माघ में उदय हो तो छत्र भङ्ग अवश्य करे ।।५८-६०।।

होलिकाधुमफलम्

पुर्वेवायुर्होलिकायाः प्रजाभुपालयो सुखम् ।
पलायनं च दुर्भिक्ष दक्षिणे जायते ।।६१।।
पश्चिमे तृणसम्पत्तिरुत्तरे धान्य सम्भवः ।
यदि खेच शिखावाद्दुर्भराज्ञोऽपि सक्षयेत् ।।६२।।

यदि होलिका दहन के समय पूर्व की हवा चले तो राजा प्रजा-सुखी, दक्षिण की हवा चले तो देश भर में दुर्भिक्ष पड़े, पश्चिम की हवा चले तो धन धान्य बढ़े उत्तर की हवा चले तो धान्य वृद्धि हो और जो होली का धुआं आकाश को सीधा उड़े तो राजा तथा जिला नाश होता है ॥६१-६२॥

वर्षाशकुनः

एकादश्यां कार्तिकस्य यदि मेघः सनीक्ष्यते ।
आषाढ़े च तथा बृष्टिर्जायते नात्र संशयः ॥६५॥
मार्गशीर्षस्य चाष्टम्यां दृश्यन्त विद्युतो यदा ।
तदा वृष्टिः श्रावणे च मासि सजायत ध्रुवम् ॥६६॥
कृष्णपक्षो दशम्यां च दृष्टिः पौष च जायते ।
तदा भाद्रपदे मासे वृष्टिर्भवति भयसी ॥६७॥
वृष्टिश्केमाघसप्तम्यां ज्येष्ठे मले च वर्षति ।
नक्षत्र वारिवाहश्क तदाऽन्नः पूर्यते मही ॥३६॥
पंचम्यां प्रथमे पक्षे श्रावण चप्रवर्षते ।
पयोवाहस्तदाधान्यैरा व्याप्ता जलैरपि ॥६७॥

जो कार्तिक की एकादशी को मेघ छाया रहे तो आषाढ़ में वृष्टि अवश्य हो। मार्गशीर्ष अष्टमी को विद्युत चमके तो श्रावण में वर्षा हो, पौष कृष्ण दशमी को दृध बरसे और ज्येष्ठ में मूल नक्षत्र बससे तो वर्षा नबो मक्षत्र उत्तम बससे और अन्न अधिक उपजे। श्रावण कृष्ण पंचमी में जल बरसै तो अन्न और जल अच्छा अधिक होवे ॥६३-६७॥

आषाढे पूर्णिमायां नक्षत्रत्वेन फलम्

आषाढ़े पूर्णिमायां तु यन्नक्षत्रं विचारयेत ।
पूर्वाषाढ़े सुभिक्षं च मूले दुर्भिक्षमुच्यते ॥६८॥

अब आषाढ़ पूर्णिमा को शेष नक्षत्र हो उस पर विचार करे जो

पूर्वाषाढ़ा में सुभिक्ष, मूल में दुर्भिक्ष और उत्तराषाढ़ा में घोड़ों का पीड़ा होती है ॥६८॥

ज्येष्ठप्रतितफलम्

उत्तराषाढ़केऽश्वानां लीदा कटकसंगतिः ।
ज्येष्ठस्य प्रथमे पक्षे प्रतिपच्च यदा भवेत ॥६६॥
रवेर्वा: स्तदा वायुर्वा त वृक्षतकारकः ।
अत्यन्तविग्रहो भोमे बुधे दुर्भिक्षमुच्यते ॥७०॥
अनावृष्टि शनेर्वारे चलं क्वापि न लभ्यते ।
सोमशुक्रसुरेज्यानां यदि वार प्रजायते ॥७१॥

ज्येष्ठा कृष्ण प्रतिपदा रविवार पड़े तो वायु वेग से चले और वृक्ष टूटे, भौमवारी पड़े तो यिग्रह हो, बुधवारी पड़े तो दुर्भिक्ष हो, शनिवारी पड़े तो कहीं जल न हो सोमवार शुक्रवारी और गुरुवारी प्रतिपदा पड़े तो धन धान्य और सन्तान से सुखी हो ॥६६॥

पौषसंक्रान्तिफलम्

धनधान्यसुतोत्पत्तिर्गे नेह महोत्सवः ।
पौषमासस्य संक्रांतौ रविवारो यदा भवेत् ॥७२॥
धान्यानां त्रिगुणं मूल्य भौमवारे चतुर्गुणम् ।
त्रिगुणां शनिवारे च बुधे शुक्रे समं भवेत् ॥७३॥
तुराचार्ये न सोमे च मुल्यमर्घ सुनिश्चितम् ।
क्रूरोहि लाभकृदधान्येसौम्यो हानिप्रदो भवेत् ॥७४॥

पौष संक्रान्ति रविवारी पड़े तो अन्न का दाम तिगुना हो, भौमवारी हो चौगुना, शनिबारी हो तिगुना बुधवारी, शुक्रवारी ही समान और गुरुवारी-सोमवारी हो आध मूल्य में तथा, संक्रान्ति के दिन शुभ वार पड़े तो घाटा और क्रूरवार पड़े तो मुनाफा ॥७२-७४॥

मीनसंक्रान्ति फलम्

मीनसंक्रमणे सूर्ये वारे वाति समीरण: ।
भौमे पीड़ा पशूनां च दुर्भिक्षं च शनैश्चरे ।।७५।।
वृक्षपातः प्रजापीडा मिथ्या सचरते महीम् ।
हिंसाकामातुरा लोकेयदि वृष्टिश्च तद्दिने ।।७६।।
संक्रान्तौ यदि मीनस्य बुधवारः प्रजायते ।
छत्रभङ्गो महामारी रोदनं भयचिंतया ।।७७।।
संक्रान्तौ सोमवारश्चेत्प्रजानां परम सुखम् ।
भानुभौमार्किवारेषु पापयुद्धं महर्घता ।।७८।।

जो मीन की संक्रान्ति रविवारी हो तो वर्ष भर रहता चले, मङ्गल की हो तो पशुओं को पीड़ा शनि की पड़े तो दुर्भिक्ष और उन दिनों में वर्षा हो तो पृथ्वी पर वृक्ष गिरे प्रजा दुःखी मिथ्यावादी हिंसक और कातुर होवे। बुध की पड़े तो छत्रभंग, महामारी, चिन्ता और भय उहजावे सोम की पड़े तो सुख हो, रवि, भोम, और ।।७३-७८।।

संक्रान्तिदिननक्षत्र फलम्

संक्रान्त्याचारनक्षत्रादात्मभावोधिगस्यते ।
त्रिक षटकं त्रिक षटकं पुनः पुनः । ७९।।
पन्था भोगो व्यथा वस्त्र हानिश्च बिपुल धनम् ।
षटके भागे फलं श्रेष्ठ मासे विचारयेत् ।८०।

संक्रान्ति नक्षत्र चक्रम

धनलाभ ३ भोम
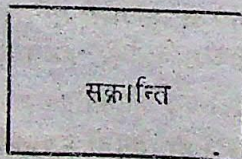
संक्रान्ति

३ हानि ६ वस्त्र ३ व्यथा

सक्रान्ति समय जो नक्षत्र हो उसके पहले नक्षत्र से अपने नाम के नक्षत्र तक गिने ३ तक हो तो रास्ता चलावे फिर ६ (अर्थात् ९) हो तो सुख भोगे फिर ३ (अर्थात् १२, व्यथा, फिर ६।१८ तक) वस्त्र से सुखी फिर ३ (अर्थात् २) तक हानि और फिर ६ (अर्थात् २७ तक विपुल धन तथा सुख भोग मिले इस प्रकार मास का विचार करे ॥७९-८०॥

रोहिणी निर्णय

राशिचक्रं लिखित्वादौ मेषसक्रान्ति आदिकम् ।
अष्टाविंशतिक तत्र लिखेन्नक्षसकुलम् ।८१।
सिंधौ द्वय द्वय द्वय दद्यादन्यत्रैकैकमेव च ।
चत्वारः सागरास्तत्र सधयश्चाष्टसंख्याः।८२।
श्रृङ्गाणि तत्र चत्वारि तटान्यष्टौ स्मृतानि च ।
रोहिणी पतित यत्र ज्ञेय तत्र शुभाशुभम् ।८३।
जाता जलप्रदस्यथा चन्द्रस्य परमप्रिया ।
समुद्रे ति महावृष्टिस्तटे वृष्टिश्च शोभना ।
पर्वते विंदुमात्रा च खण्डवृष्टिश्च संधिषु ॥८४।

अब वर्षा का निर्णय मुख्य विचार में पहले रोहिणी का हवन कहते हैं। पहिले १२ कोष्टक कुण्डली चक्राकार रोहिणी चक्र में मध्य में रखे तब रोहिणी चक्र में २८ नक्षत्र स्थापित करे। दो-दो समुद्र में एक-एक श्रृङ्ग में एक-एक नक्षत्र सम्बन्धियों में और एक-एक नक्षत्र तटों में रखे। मेष की संक्रान्ति जिस नक्षत्र में हो उसी नक्षत्र से, गिनती करके क्रम से समुद्र में श्रृङ्ग में तट में धरे, फिर विचारे कि जो रोहिणी समुद्र में पड़े तो वर्षा हो, श्रृङ्गों में पड़े तो थोड़ी वर्षा हो संधियों में पड़े तो कभी न बरसे, तट में रोहिणी पड़े तो अच्छी वृष्टि होवे, अश्विनी के स्थान में संक्रान्ति के दिन का नक्षत्र रखकर विचार करे ॥८१-८४॥

उदाहरण–मेष की संक्रान्ति धनिष्ठा नक्षत्र में हैं, वहाँ से ९ वाँ रोहिणी होता है तो पूर्व समुद्र में मजा नक्षत्रों को जहाँ पर जिस प्रकार से लिखे हैं उसी प्रकार लिखने पर रोहिणी दक्षिण के समुद्र में पड़ती है अतः महावृष्टि को योग है।

नरचक्रम्

नराकारं लिखेच्चक्रं सूर्यो यत्र व्यवस्थितः।
तन्नक्षत्रादिकं कृत्वा ययंदद्याच्च मस्तके ।८५।
मुखे त्रय स्कन्धयोश्च दद्यादककमेव च।
बाहुद्वये तथैकैक पाण्योरेकैकमेव च ।८६।
हृदि पंच गूदे चैक नाभो चैक प्रदापयेग्।
जघयोरेकनेक च षडमानि पादयोर्द्वयोः ।८७।

अथ रोहिणी पतन चक्रम्

सन्धि	सिन्धु		सन्धि
उ० भा० तठ		तठ	रोहिणी
पू० भा०			मृ०
सन्धि			
रे		क्र	सन्धि
शतभिषा			आर्द्रा

घनिष्ठा श्रृ

सिन्धु

शभिजत

श्रवण

३ ८ १२ ९ ३ ४ १० १ ७ ५ ८ ६

सिन्धु

पुण्य
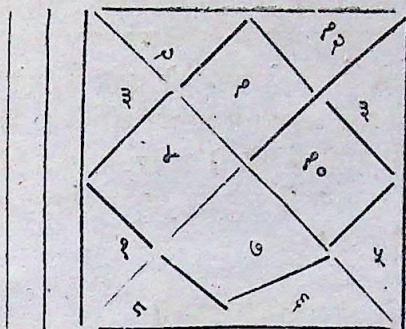
उत्तराषाढ़ श्र श्रृ

सन्धि पू० षा०	सिन्धु	त ठ	सन्धि पूर्वाभा०
मूल	स्वाती विशाखा	चि	उ० फा०
सन्धि ज्येष्ठा		त्रा	साध हस्त

मस्तके पट्टबधीस्यान्मुखे मिष्ठान्नभजम् ।
स्कंधेगजेन्द्रगामीस्यादबाहौ स्नेहच्युत्तं भवेत् ॥८८॥
पाणौ च जायते चारो हिरदयेऽपीश्वरो नरः ।
स्वल्पतोषी भवेन्नाभौ परदाररतो गुदे ।८९।
स्यात्प्रबासी तु जानौ चपादे स्वल्पायुषरतथा ।
नरचक्र सूर्यनक्षत्राज्जन्मभावोधिगप्यते ॥९०॥

अब नरचक्र कहते हैं सूर्य के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिने जिस अङ्ग में नक्षत्र पड़े उसी पर से फल जाने। मस्तक पर ३, मुख पर १, दोनों कन्धों पर २, दोनों बाहुओं पर २-२ हाथ में, ५ हृदय में, १ गुदा में, १ नाभि, १ जंघा, ६ पैरों में लिखना चाहिए।

जो माथे पर जन्म नक्षत्र पड़े तो कुटुम्बनाशक, जो मुख में पड़े तो मीठा भोजन मिले, कन्धहर पड़े तो हाथी पर चढ़े, भुजाओं में पड़े तो स्थान भङ्ग हो हाथों में पड़े तो चोर हो हृदय में पड़े तो मालिक हो, नाभि में पड़े तो थोड़े भोजन में सन्तुष्ट और गुदा में जन्म नक्षत्र पड़े तो परगामी हो, जांघों में पड़े तो परदेश में बास करे और चरणों में पड़े तो थोड़ी ही अवस्था में मृत्यु हो, यही नराकार चक्र में नक्षत्रों का शुभाशुभ फल है ।८५-९०।

ग्रामवासफलम्

ग्रामनाम्नोभवेदृक्षं तदाद्या सप्त मस्तके ।
पष्ठे सप्त हृदि सप्त पादयोः सप्त तारकाः ॥९१॥

मस्तके च धनी मान्यः पृष्ठे हानिश्च निर्धनः ।
हृदये सुखसम्पत्तिः पादे पर्यटनं फलम् ॥९२॥

जिस ग्राम में या नगर में वसना चाहे, उस ग्राम के नाम से नक्षत्र चक्र बनावे जो ग्राम के नक्षत्र से ७ नक्षत्र ग्राम के माथे पर, ७ पीठ पर, हृदय पर, ७ पैरों पर, यदि अपना नक्षत्र जो हो वह माथे पर पड़ जाय तो धनी हो मानस सम्मान पावे, पीठ में पड़ने से परदेश भ्रमण करे। जो कांधे पर पड़ तो धनी होवे, सम्मान पावे ।९१-९२।

मूलवृक्षफलम्

मलेऽष्टो मूलवृक्षस्थ घटिकाः परिकीर्तिताः ।
स्तम्भेषु षटकघटिकास्त्वचि कक्षावशरमृताः ॥९३॥
शाखायां च नव प्रोक्ताः पत्रे प्रोक्ताश्चतुर्दश ।
पुष्पे पंचवेदाः फलेवेदाः शिखायां चत्रयं स्मृतम् ।९४।
मूले नाशो हि मूलस्थ स्तम्भे हानिर्धक्षनधः ।
त्वचि भ्रातुर्विनाशश्च शाखायां मातुपीडनम् ।९५॥

परिवारक्षयं पत्रं पुष्पे मन्त्री च भूपतेः ।
फले राज्यं शिखायंचेदल्पजीवो च बालकः ।६६।।

अब मूलसंज्ञक जो नक्षत्र हैं उन्हें मूलचक्राकार रीति से विचारने का क्रम कहते है मूल वृक्ष बनाकर ८ घटी में धरे ६ घटी स्तम्भ ११ घठी त्वचा, ९ घठी शाखा, १४ घटी पक्ष ५ घटी पुष्य, ४ घटी फल और ३ घटी शिखा में इस प्रकार ६० घटी का की स्थापना करे मूल की ८ घटी में बालक जन्मे तो मूल नाश हो स्तम्भ की ६ घटी में हो तो धन नाश होवे, त्वचा की १२ घटी में हो तो भ्राता का नाश । शाखा की नौ घटी में हो तो पीड़ा करे जो पक्ष की १४ घटी में हो तो परिवार का क्षय हो, फलों की पांच घटी में हो तो राज-मन्त्री हो, फलों की ४ घटी में जन्म हो तो राजा होय अथवा वश में देश में श्रेष्ठ हो और शिखा को ३ घटी में जन्मे स्वल्पाय होता है ।
।६३-६६।

मूल वृक्ष चक्रम्

शिखा	फूल	पुष्प	पत्र	शाखा	त्वचा	स्तम्भ	मूल
३	४	५	१४	९	११		८
पायु	राज्य	राज्यमन्त्री		भ्रातृनाश	व्यवहार		मूलनाश

शुक्रान्ध्यविचारः

रेवत्यादिमृगांत च यावत्तिष्ठदि चन्द्रमाः ।
तावच्छुक्रो भवेदंधः सुम्मुखे दक्षिणं शुभः ।।६७।।

रेवती से मृगशिरा तक जब चन्द्रमा रहते हैं तब शुक्र अंध रहते हैं । वह सम्मुख और दाहिने शुभ होता है ।६७।

प्राक्तश्चादुदितः शुक्रः पंच सप्त दिने शिशः ।
विपरीतं तु वृद्धाण्तम् तद्वदेव गुरोरपि ।।६८।।

शक्रस्य बालवृद्धत्वज्ञानम्

शुक्र पूर्व में उदय हो तो ५ दिन, पश्चिम में उदय हो तो सात दिन तक बाल रहता है और पूर्व में शुक्र का अस्त हो तो सात दिन पहिले से बृद्ध कहलाता हैं और पश्चिम में अस्तु हो तो ५ दिन पहले ही वृद्धता रहती है, इसी प्रकार वृहस्पति का भी बाल और वृद्धत्व जाना ।९८।

तृतीये दशमे षष्ठे प्रथमे सप्तमे शशी ।
शक्लेपक्षां द्वितीयस्तृ पंचमे शुभः ॥९९॥

चन्द्रमा कृष्णपक्ष में ३।१०।६।७ में शुभ है और शुक्ल पक्ष में २।५।६ शुभ हैं ।९९।

तारा विचार

तारा शुभप्रदाः सर्वासिपंचसप्तवर्जिता: ।
प्रथमे दशमे षष्ठे तृतीयकादशे तथा ॥१००॥
यदि स्यात्सबलन्चद्रस्तारापि क्लेशदायिनी ।
तृतीया पंचमी तारा सप्तमे च नृणां भवेत् ॥१०१॥

ताराएं सभी शुभ होती हैं, केवल तीसरी, पांचवीं, सातवीं तारा अशुभ है। जो प्रथम दशम, षष्ठ, तृतीय एकादश स्थानों में चन्द्रमा हो तो तृतीय, पांचवा, सातवां तारा भी मिषिद्ध होते हुए भी सुखद होती है ।१०१।

ताराज्ञनम्

जन्मभाद् गणवेद्धीमान् कमाच्च दिनभावधि ।
नवमिस्तु हरेद्भागं शेष तारा विनिर्दिशेत् ॥२॥
जन्मसंपद्विपत्क्षेमंप्रत्प्ररिः साधको बधः ।
मैत्रातिमंत्र ताराः स्युसिरावृत्या नवव हि ॥३॥

खरो नन्दनमामा च बिजयश्च जतोऽपरः।
मन्मथो दुर्मुखश्चैव हेमलम्बोविलम्बिको ।१७।
विकारो शबरो च प्लवश्च शुभकृत्तथा ।
शोभनश्च तथा क्रोधी विश्वावसुस्तणापरः ।१८।
पराभवाख्यो ह्यपरो विष्णोरित्येव विंशतिः ।
प्लवग कीलकः सौम्यस्तथा साधारणोऽपरः ।१९।
विरोधकृत्मरतमाख्यगतः परिधावी प्रमावकृत् ।
आनन्दो रा श्चाथ नलश्च पिंगलस्थता ।२०।
कालः सिद्धार्थिरौद्रौ च दुर्मतिर्दुन्दुभिस्तथा ।
अपरो रुधिरोद्गारी रक्ताक्षा क्रोधनस्तथा ।२१।
क्षयकृत्परनश्चान्यो रुद्रस्यापि तु विषतिः ।
वत्सरा षष्टिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ।२२।

प्रशव १ विभव २ शुक्ल ३ प्रमोद ४ प्रजापति ५ अङ्गिरा ६ श्रीमुख ७ भाव युवा ९ धाता १० ईश्वर ११ ब्रहधान्य १२ प्रमाथी १५ विक्रम १४ वृषभ १ चित्रभानु १६ सुभानु १७ में तारण १८ पार्थिव १९ और व्यय २० (इति ब्रह्मविंशतिः) सर्वजित् १ सर्वधारी २ विरोधी ३ विकृति ४ खर ५ नन्दन ६ विजय ७ अय ८ चन्मथ ९ दुर्मुख १० हेमलम्बो ११ विलम्बो १२ विकारी १३, शर्बरी १४ प्लव १५ शुभकृत १३ शोभन १७ क्रोधी १८ विश्वसु १८ और पराभव ।२०। इति विष्णुविंशतिः)। प्लवर्ग १ कीलक सौम्य ३ साधारण ४ विरोधकृत ५ परिधावी, प्रमाथी ७ आनन्द ८, राक्षस, ९, नल १० पिंगल ११ काल ११, सिद्धार्थ १३, रौद्र १४, दुमति १५ दुन्दुभि १६, रुधिरोद्गारी १७, रक्ताक्षी १८, क्रोधन १९, क्षय २०। ।इति रुद्रविंशतिः)। ये ६० सम्वत्सर अपने नाम के अनुसार ही फल देते हैं।।२२।।

राशिनास्वामिनः

मेषवृश्चिकयोर्भौमः वुक्रौ वृषतुलाधिपः ।
बुधः कृन्यामिथुनयो कर्कस्य पति चन्द्रमा ।२३।

धनुर्मीन गुरुः स्वामी शनिर्मकरकुम्भयोः ।
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ॥२४॥
कन्याराहुग्रहं प्रोक्त कतोश्च मिथुन स्मृतम् ।
राहोर्वो चं धनुश्चव केतोस्तस्मा.च्च सुप्तमम् ॥२५॥

मेष – वृश्चिक के स्वामी मङ्गल, वृष तुला के शुक्र कन्यामिथुन के बुध, कर्क के चन्द्रमा मीन धन के गुरु मकर कुम्भ के शनि, सिंह, के सूर्य, कन्या के राहु और मिथुन के स्वामी केतु हैं धन का राहु नीच और उससे सातवी मिथुन का केतु होता हैं । ।२३-२५ ॥

नक्षत्रज्ञानम्

कार्तिकाद्यिगुणामासा गताभिस्तिभिर्युताः ।
सप्तविंशत्तिभिस्तष्टा दियतारेकसंयुता ॥२६॥

कार्तिक से गतमास तक गिनकर दूना करे और उसमें गत तिथि जोड़कर २७ का भाग देवे जो शेष बचे वही नक्षत्र जाने उसे अश्विनी से गिनकर नक्षत्र जाने ॥२६॥

संक्रान्तिक्रिया

वारे रूपं तिथौ रुद्रा घटुआ पंचदशैव च
एकत्रिंशत्पले दद्यात्सूर्यसंक्रमणं भवेत् ॥२७॥

अब संक्रान्ति क्रिया कहते । प्रथम वर्ष की संक्रान्ति के वारे में १ जोड़ और तिथियों में ११ जोड़े तथा घड़ियों में १५ जोड़े और पल में ३१ जोड़े जोड़े अगले वर्ष की संक्रान्ति की वार तिथि आदि होंगे विपुल में २० जोड़े ।

शुक्रोदयदिनिर्णयः

सार्धाब्दमासे पूर्वस्मिन्नुदितो दृश्यते भृगुः ।
सार्धम.सद्वय सूर्ये मण्डले च ततो भवे ॥२८॥
उदितः पश्चिमे नवमास च वीक्ष्यते ।
दशाहं सूर्यमध्ये तु ततश्चास्तमितो भवेत् । २९॥

साढ़े आठ मास पूर्व में शुक्र उदय रहते हैं, अढ़ाई मास सूर्य मण्डल में रहते हैं और इसके बाद ९ मास पश्चिम में उदय होते हैं, फिर दस दिन सूर्य मण्डल में फिर पूर्व में उदय होते हैं ॥२८-२९॥

परिहारः

एकग्रामे पूरे वापि दुर्भिक्षे राजविग्रहे।
तीर्थयात्राविवाहादौ शुक्रदोषो न विद्यते ।३०।

एक ग्राम में शुक्र दोष नहीं होता दुर्भिक्ष, राजविग्रह विवाह और तीर्थ यात्रा में शुक्रदोष को न गिने। यही शुक्र दोष का परिहार है ॥३०॥

नक्षत्रसंज्ञा

दशार्द्रादयस्त्रियस्तातारा विशाखादया नपुंसका:।
तिस्त्रस्तश्च मूलादया: पुरुषाश्च चतुर्दशा ।३१।
स्त्री पुंसयोर्महावृष्टि: स्त्रीनपुंसकयो क्वचित्।
स्त्रीत्रियो: शीतलाच्छाया योग पुरुषयोर्न च ।३२।

आद्रादि १० नक्षत्र स्त्री संज्ञक हैं। विशाखादि ३ नक्षत्र नपुंसक संज्ञक हैं। मूलादि १४ नक्षत्र पुरुष संज्ञक नक्षत्र है। स्त्री पुरुष नक्षत्र में सूर्य आवे तो मह वृष्टि हो। स्त्री नपुंसक में थोड़ा जल बरसे। स्त्री-स्त्री में मेघ की छाया मात्र रहे और पुरुष-पुरुष में वर्षा ही न होवे।

नक्षत्रग्रहभेदन वृष्टियोग:

उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः।
जलराशिस्थिते चन्द्रे पक्षान्ते सक्रमे तथा ।३३।
बुध: शुक्रसमोपस्थ करोत्येकार्णवां महीम्।
तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत् ।३४।
चलत्यगारके वृष्टिस्त्रिधा वृष्टि: शनैश्चरे।
वारिपूर्णा मही कृत्वा पश्चाऽसचरत गुरुः ।३५।

भानोरग्रे महीपुत्रो जलशोषः प्रजायत ।
भानो पश्चाद्धरासनुवृष्टिभवति ॥३६॥

शुक्र बुध से उदय और अस्त में वर्षा होती है और जलराशि पर चन्द्रमा में, पक्ष के अन्त में संक्रान्ति पड़े तो वर्षा हो जो बुध शुक्र समीप हो तो पृथ्वी भर में बरसे यदि उनके वीच में सूर्य आ पड़े तो समुद्र के जल को भी सोख लेता है, मङ्गल चलें तो मेघ बरसे शनि के उदय अस्त तथा चलने में जहाँ-तहाँ जल बरसे और उसके पीछे गुरु आवे तो पृथ्वी भर में जल बरसे, सूर्य के आगे मङ्गल हो तो जल न बरसे, पीछे हो तो और वर्षा करे ॥३४-३६॥

गृहद्वार मुहूर्तः

कर्के कुम्भे च सिंह च मकरे च दिवाकर ।
पूर्वे वा पश्चिमे वापि द्वारं कुर्याच्चवेस्मनः ।३७
मेषे वृषे वृश्चिके च तुले चापि यदा रविः ।
गृहद्वारं नदा कुर्यादुत्तरचापि दक्षिणम् ।३८
धनुर्मिथुनकन्यायां मीने च यदि भानुभान् ।
न कर्त्तव्य तदानारं कृते दु.खमवाप्नुयात् ।३९।

कर्क, कुम्भ, सिंह और मकर के सूर्य में गृह वनावे तो घर का द्वार पूर्व-पश्चिम में शुभ है मेष वृश्चिक और तुला के सूर्य में उत्तर-दक्षिण घर का द्वार शुभ हैं धन-मिथुन कन्या और मीन के में गृह-निर्माण करना अशुभ और दुःखप्रद होता है ।३७-३८।

एकजासेनग्रहणद्वफलम्

यद्येकमासे ग्रहणं जायते शशिशर्पयोः ।
शस्त्रकोपे क्षयं यान्ति राजानो हिपरःपरम् ।४०।

जो एक ही मास में चन्द्र और सूर्य दोनों ग्रहण पड़े तो राजाओं में क्रोध युद्ध हो ।४०।

ग्रस्तोवितौ च प्रस्तालौ धान्यभपालनाशकौ ।
सर्वग्रस्तौ च द्रसूर्यौ दुर्भिक्षरसरणप्रदौ ।४१।

जो सूर्य तथा चन्द्रमा ग्रहस्त हुए ही उदय हो तो राजा का नाश करे सर्वग्रस्त हो तो दुर्भिक्ष पड़े तथा मरण होता है ।४१।

उपरागो यदा मेष पीडयन्ते च तदा जना ।
कांबोजाश्च किरातास्च पांचालास्च कलिगका ४२।

जो मेष राशि पर ग्रहण पड़े तो कांबीज, किरात, पांचाल कलिंग देश को पीड़ा करे ।४२।

वृषे च ग्रहणे पीड़ा पशव, पथिका जना ।
महातो मनुजास्चैव तै पीडयन्ते च सर्वदा ।४३।

जो वृष राशि पर ग्रहण पड़े पशु, पथिक और बड़े मनुष्यों को पीड़ा करे ।४३।

रविचन्द्रमसौ ग्रस्तौ मिथुने च वरांगना ।
पीडयन्त वाह्निका मत्स्य यमुनातटवासिन ।४४।

जो मिथुन राशि पर ग्रहण पड़े तो श्रेष्ठ स्त्री, वाल्हीक देश, मत्स्यादि जीव जन्तु व मत्स्य देश यमुना तटवासियों को पीड़ा हो । ।।४४।।

कर्कटे ग्रहने पीडा मल्लादीनां च जायते ।
अन्तर सर्वराज्ञा च तदा मत्स्यानिवासिनाम् ।४५।

जो कर्क राशि पर ग्रहण पड़े तो मल्लादिकों को अन्तर्वेद राजा, वा मत्स्य देश को पीड़ा हो ।४५।

सिंहे च ग्रहणे सर्वेषां वनवासिनाम् ।
नृप्राणां नृपतुल्यानां मनुजानां च जायते ।४६।

जो सिंह राशि पर ग्रहण पड़े तो सभी वनवासी राजा और सभी मनुष्यों को पीड़ा हो ।४६।

कन्यायां ग्रहणे पीड़ा त्रिपुष्करनिवासिनाम् ।
कवीनां लेखकानां च जायते पीडेन तथा ।४७।

जो कन्या राशि पर ग्रहण पड़े तो कवि और चतुरों को और लेखक-चित्रकारों को भी पीड़ा हो ॥४७॥

तुलायायामुपरागे च पीडनं च काकयोः ।
कौकणस्थाः पराश्चैव पीडयन्ते साधवश्च ये ।४८।

जो तुला राशि पर ग्रहण पड़े तो काक, बक आदि पक्षियों को कोकण देशवासियों को और साधुओं को पीड़ा दे ॥४८॥

वृश्चिके ग्रहणे पीड़ा सर्पजातेश्च जायते ।
औदुम्बरस्य मद्रस्य चोलबोधयकस्य च ।४९।

जो वृश्चिक राशि पर ग्रहण पड़े तो जातियों, को, औदुम्बर को चोल देशवासियों को पीड़ा हो ॥४९॥

यदोपरागश्चापे च तदा मत्स्याश्च वाजिनः ।
विदेहमल्लपांचालाः पीडयन्ते भिषजो विशः ।५०।

धन राशि पर ग्रहण पड़े तो मत्स्य, घोड़ा, तपस्वी, मल्ल पांचाल वासी, मिथिलावासी, वैद्य और पण्डितों को पीड़ा करे ॥५०॥

मकरे ग्रहणे पीड़ा नीचानां मन्त्रवादिनाम् ।
स्थावराणां जगमानां ।कत्रकूटस्य सक्षमः ।५१।

जो मकर राशि पर ग्रहण पड़े तो नीच मंत्रिवादियों को पीड़ा और स्थावर, जङ्गम, पशु को पीड़ा हो और चित्रकूटवासियों का नाश हो ॥५१॥

कुम्भे चैवोपरंगे च पश्चिमस्यास्तथाऽवुबाः ।
तस्करा रोगिणो भृत्याः पीडयन्तेवहुधायुधाः ।५२।

जो कुम्भ राशि पर ग्रहण पड़े तो अर्कदेश और पश्चिम पर्वतवासी लोगों को पीढ़ा हो और पीड़ित हो जाये ॥५२॥

मीनोपरागे पीडयन्ते जलद्रव्याणि सागरः ।
जलापजीयिनो लोका ये च तत्र प्रतिष्ठिताः ।५३।

यदि मीन राषि पर ग्रहण पड़े तो जलजन्तु और जलद्रव्य का नाश हो जावे ।।५३।।

परिवेषफलम्

गृहत्या सुधष्टिश्च नोहारश्च भयंकरः ।
विद्युत्पातोऽपातोग्निदाहोथ परिवेषश्च रोगकृत ।५४।

बिना हवा के आकाश में भयंकर धूल उड़े मनुष्य न दिखाई दे, बिना मेघ बिजली चमके अग्निदाह हो सूर्य में रक्त-मण्डल हो तो रोग अधिक होवे ।।५४।।

दिग्दाहफलम्

द्रिष्दाहोऽग्निभयं कुर्यान्त्रिर्धातो नृपभीतिवः ।
झंझावायुस्चन्डशब्दस्चौरभीतिदायक ।५५।

जो सूर्यास्त के बाद फिर दिशाओं में अग्नि लगी सी देखे वा पीले रङ्ग का आकाश दिखाई पढ़े तो अग्निभय हो सूखे मेघ गरजे तो राजाओं को भय हो, अति वेग से प्रचन्ड शब्द सहित वायु चले तो चोरों का भय हो ।।५५।।

ग्रहयुद्धफलम्

गृहयुद्धे राज्ययुद्धे केतुदृष्टे तथैव च ।
ग्रहणान्ते महावृष्टिः सर्वदोषविनाशिनी ।५६।

गृहों का युद्ध वा, केतु का उदय हो तो राजाओं में युद्ध अवश्य हो गृहण लगने के बाद अच्छा जल बरस जाय तो सर्व दोष नष्ट हो जाते हैं ।५६।।

केतु-उदयफलम्

अश्विन्यामेदिते केतौ हन्यात्स लकपालकम् ।
भरण्यां च किरातेशं कृतिकाया कृतिगकृन् ।५७।

जो अश्विनी में केतु का उदय हो तो बंका देश के राजा को पीड़ा

करे, भरणी में उदय हो तो किरात देश के कृतिका में हो तो कलिंग देश के राजा को पीड़ा करे।५७।

रोहिण्यां शु सेनेशं मृगे काशिनराधिपम्।
आर्बायां जलजाधोश भास्करेश पुनर्वसौ।५८।

रोहिणी में केतु का उदय हो तो शूरसेन देश के राजा को मृगशिरा में काशिराज को आर्द्रा में जलयोनि अर्थात् पद्मा देश के राजा को पुनर्वसु में भास्कर देश के राजा को पीड़ा करे।५८।

पुष्ये च मगधाधाशं सार्पस्थ काशिकाधिपम्।
मगया बंगनाथं च पुर्वायां पाडनायकम्।५९।

पुण्य में केतु का उदय हो तो मगधदेश के राजा को, आश्लेषा में काशीराज को,मघा में वगदेशाधिपति को पुर्वा फाल्गुनी में पांडुदेश के राजा को पीड़ा करे।५९।

उज्जयिन्यां नृपं हन्ति उत्त फाल्गुनीगत।
गडकन्धवधि हस्ते चित्रायां कुरुभुजम्।६०।

उत्तराफाल्गुनी में उज्जैन के राजा को, हस्त में हो तो गंड की नदी के राजा को पीड़ा करे, चित्रा में कुरुक्षेत्र के राजा की मृत्यु करे।६०।

स्वात्यां काश्मीरकम्बोजभुपतीआं विनाशक।
इक्ष्वाकुकुरुदेशाना विशाखाया विनाशकः।६१।

स्वाती में हो तो काश्मीर के राजा को कांगोज देश के राजा का विनाश करे, विशाखा में हो तो इक्ष्वाकु देश के राजा और कुरुदेश के अधिपति का नाश करे।६१।

जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर उसमें ६ का भाग देवे जो शेष बचे उसको, तारा जाने। जन्म सम्वत, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, उध, मैत्र, अतिमैत्र ये संज्ञा तीन आवृति में होती हैं।

गोचरग्रहफलम्

त्रियष्ठ दशमे भौमो राहूः केतुः शनिः शुभः।
षष्ठऽष्टमे द्वितीये वा चतुर्थ दशमे बुधः ॥४॥
द्वितीये पंचमे जीवः सप्तमे नवमे शुभः।
विहाय शुक्रो दशमे षष्ठ स्याप्सप्तमे शुभः ॥५।

एकादशेग्रहा सर्वे कार्येषु शोभना।
ग्रहाणां गोचरं ज्ञयं फलं विज्ञैः शुभाशुभमम् ॥६॥

३।६।१० इन स्थानों में भौम, राहु, केतु और शनि शुभ है, ६।८।२।४।१० में बुध और १।७।९ में गुरु शुभ है, ६, ७, १० वे स्थान को जोड़कर शुक्र शुभ है। ११वे में सभी ग्रह शुभ हैं, यह ग्रहों का गोचर फल पण्डितों ने शुभाशुभ कहा है।३-६।

पूर्वक्षीणचन्द्रनिर्णयः

दशम्यावधिकृष्णे तु पक्षो पूर्णो हि चन्द्रमाः।
ततः परं क्षणचन्द्राःशुभकार्ये विवर्जितः ॥७॥

कृष्ण पक्ष की दशमी तक पूर्ण चन्द्रमा रहता है फिर इसके उपरान्त १० दिन क्षीण रहता है—यह सभी शुभ कार्यों में वर्जित है। ।७।

नित्यक्षौरनिर्णयः

नित्यर्वसुद्वयं क्षौरे श्रुतियुग्मे करत्रयुम्।
रेवतीद्वितय ज्येष्ठा मृगशीर्ष च गृह्यत ।।८।।
क्षौरे प्राणहारास्त्वाज्या मघा मैत्र च रोहिणी ।
उत्तरा कृत्तिका वारा भानुभौमशनैश्चराः ।।९।।

रिक्ता षष्ठयष्टमी ज्ञेया क्षौरं चन्द्रक्षयोनिशि ।
सन्ध्या विष्टिश्च गण्डान्ते भोजनान्ते च गोगृहे ॥१०॥

पुन०, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठ, चित्रा, स्वाती, रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, मूल ये नक्षत्र क्षौरकर्म में ग्राह्य हैं और नक्षत्र प्राणहर्ता हैं उन्हें त्याग दे। मघा, अनु०, रा० ३, उत्तरा कृ० नक्षत्र और भौम, शनि रवि दिन ९।४।६ ८।१४ ये तिथियां, रात्रि और सन्ध्या के समय और गंगान्त मूल, भद्रा, भोजन करने के बाद तथा गोशाला में क्षौर-कर्म भूलकर भी न करे, ये स्थान भी वर्जित है।८-१०।

राज्याभिषेक मुहूर्तः

रेवतीयुगले पुष्ये रोहिण्यां मृगमैत्रयोः ।
श्रवणोत्तरशुक्रेषु राज्ञां स्वादभिषेचनम् ॥११॥

रे० अश्विनी पुष्य रो० मृ० अनु० तीनों उ० और ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में राज्याभिषेक करना होता।११।

रेवतीयुगलं ज्येष्ठा मैत्रं हस्तत्रयं मृगः ।
पुनर्वसश्च विज्ञयो गणस्तिर्यङ्मुखो बुधैः ॥१२॥
वृक्षारोपणवाणिज्ये सर्वसिद्धिश्च कारयेत् ।
वाहनानि च यन्त्राणि गमनं च विधीयते ॥१३॥
पूर्वात्रय मघाश्लेषा विशाखा कृतिकायमः ।
मूलं घाघोमुखो ज्ञेयो नवकोऽयं गणो बुधैः ॥१४॥
भक्षार्थं प्रकार्यं च खननं विवरस्य च ।
युद्धं चाधोमुखं यच्च तत्कार्यं कारयेद्बुधः ॥१५॥
उत्तरात्रितय पुष्यो रोहिण्यार्द्राक्षु तित्रयम् ।
ऊर्ध्वैवक्त्रो गणोज्ञेयो नक्षत्रणां मनीषिभिः ॥१६॥
प्रासादच्छत्रनेहानि प्राकारध्वजतोरणम् ।
राज्याभिषेकश्च च कुर्याद्ध्वमुखे गणे ॥१७॥

रेवती अश्विनी ज्येष्ठा अनुराधा हस्त चित्रा स्वाती मृगशिरा

पुनर्वसु इन तिर्यङ् मुखी नक्षत्रों में वृक्षारोपण, वाणिज्य वाहन, यन्त्र सिचाई इत्यादि यन्त्रों रहठों से और गमनकार्य शुभ। पूर्वात्रय मघा आश्लेषा, विशाखा, कृत्तिका वरणी मूल इन अधोमुखी नक्षत्रों में भूमिग्रामादिकाथ उग्र, संघा खनन, कूपादि कार्यों को करे शुभ है। उत्तरा, पुष्य रोहिणी आर्द्रा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा इन ऊर्ध्वमुखी नक्षत्रों में प्रसाद निर्माण छत बनाना राज्याभिषेक घोड़े आदि पर चढ़ना शुभ है।१२-१७।

अथ तिर्यङ्मुखोऽधोर्ध्वमुख-चक्रम

ग्रहाणां मुख चक्रम.

रेवती	आऽव:	ज्येष्ठा	अनु	चित्रा	स्वाती	मृग	पून	तिर्यङमुख	
पू.	फा.	पूषा.	पू.भा	आश्ले	त्रिशा	कृत्तिका	भरशी	शूल	अधोमुख
उ.फा.	उ षा	उ भा	पूष्य	रोहिणी	आर्द्रा	श्रवणधितष्ठा	शमभिषाद्ध्व		

भषज्य मुहुर्तः

पुगर्वसुद्धयँ पौष्ण मृगाश्वी च करत्रयम्।
मलं श्रुतित्रयं मैत्र भिषक्कर्मणि गह्यते ॥१८॥
सोमशुक्रसुर ज्यानां वारा: शकुनमत्तापम्।
लग्नेषु चापमीनेषु वृषो गृह्यस्तुलाधरः ।१९।

पुन० पुष्य रे० मृग अश्वि हस्त चित्रास्वाती मश श्रवण गनि- शतभिषा और अनु० ये नक्षत्र सोम, शुक्र, गुरुवार घन, मीन, वृष, तुला लग्न उत्तम है। शकुन विचारे तब वैद्य से औषधि करावे।

।१८-१९।

मेषज्यमुहूर्तयन्त्रम्

पु.	पुं.	रे	मृ	अश्वि	ह.	चि.	स्वा.
म	स्र	ध.	श.	ऽनु	०	०	०
च	शू	गु.	१०	१२		२	ल०

पशुनिर्गमननिर्णयः

अमावास्याऽष्टमी त्याज्या पूर्णिमाच चतुर्दशी ।
रविवारो वर्जनीयो गो पशुनां च निर्गमः ।२०।
चित्रोत्तारा रोहिणी च श्रवणोऽपि विवर्जित: ।
एतेषु पशुजातीनामशुभो निर्गमो भवेत् ।२१।।

३०।८।१५।१४ ये तिथियाँ रविवार और तीनों उत्तरा, श्रवण रोहिणी, चित्रा इन नक्षत्रों में पशुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना वर्जित है । इसके अतिरिक्त पशु गमन शुभ है ।।२०-२१।।

पशुग्रहण त्याज्या मुहुर्तः

उत्तरायां विशाखायां रोहिण्यां च पुनर्वसौ ।
नवम्यां च चतुर्दश्यामष्टम्यं नानयेत् पशून ।२२।

तीनों उत्तरा, विशाखा, रोहिणी पुनर्वसु इन ६ नक्षत्रों में और ९।१४८ तिथियों में पशु ग्रहण न करे ।।२२।।

क्रयविक्रय मुहुर्तः

पूर्वा मैत्रद्वय मूलं वासवं रेवती करः ।
पुनर्वसुद्वय गाह्यं पशुनां क्रयविक्रये ।२३।

तीनों पूर्वा अनुराधा, ज्येष्ठा, मूला, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, पुनर्वसु पुष्य नक्षत्रों में पशु को खरीद बिक्री करे ।।२३।।

वस्तुक्रय-विक्रयमुहुर्त

पुष्यौ भाद्रपदायुग्मं स्वाती श्रुतिरथाश्विनी ।
हस्तोत्तरा मृगो मैत्रं तथाश्लेषा च रेवती ।२४।
ग्राह्याणि भानि चतानि क्रयविक्रयणे बुधैः ।
चन्द्रभार्गबजीवानां वाराः शकुनमत्तमम् ।२५।

पुष्य, पूर्वा भाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, स्वाती, श्रवण, अश्विनी, हस्त-उत्तरा, तीनों मृगशिरा, अनुराधा, आश्लेषा, रेवती नक्षत्रों में चन्द्र बुध शुक्र ये दिनों तो क्रय-विक्रय में शुभ होते हैं ।।२४-२५।।

तिथिगण्डांतम्

नन्दामिथेश्च नामादौ पूर्णानां च तथांतके ।
घटिकैका शुभा त्याज्जा तिथिगंडे घटीद्वयम् ।२६।

नन्दा १।६।११ तिथि के आरम्भ को और पूर्णा ४।१०।१५ तिथि के अन्त की एक-एक घड़ी शुभ है और तिथि मण्डात में २ घटी अशुभ हैं ।।२६।।

तिथिगंडान्त चक्रम्

५	अन्त	घटी २	आ	घ	२
१०	अन्त	घटी २	आ	घ	२
११	अन्त	घटी २	आ	घ	२

नक्षत्रगंडातम्

ज्येष्ठाऽलेषा रेवती च नामांते घटिकाद्वयम् ।
आदौ मूलेमघाशिवन्योर्भगंड घटिकाद्वयम् ।२७।

ज्येष्टा आश्लेषा, और रेवती इनके अन्त की २ घड़ी, मूल, मघा और अश्विनी के आदि की २ घड़ी नक्षल गण्डात हैं इन्हें शुभ कार्य में छोड़ देना शुभ है ।।२७।।

लग्नगतम्

मीनवृशिचकर्कान्ते घटिकार्घं परित्यजेत् ।
आदौ मेषस्य चापस्य सिंहस्य घटिकार्द्धकम् ।२८।

तीन, वृश्चिक कर्क के अन्त की और मेष, धन, सिंह के प्रारम्भ की आधी-आधी घड़ी को शुभ कार्य में त्याग दे ।।२८।।

गंडान्तफलम्

तिथिगंडे भंगडे च लग्नगंडे च जातकः
न जीवति यदाजातो जीवितेशच धनोभवेत् ।२९।

उपरोक्त तिथि, नक्षत्र और लग्न के गण्डान्त में पैदा हुआ बालक नहीं जीता, यदि जीवे तो धनी होता है ।२९।।

संवर्त्तयोग

सप्तम्यां च रवेर्वारो बुधश्च प्रतिपद्दिने ।
संवर्तास्तदा योगौ वर्जनीयौ सदा बुधैः ।३०।

सप्तमी रविवार की तथा प्रतिपदा तिथि बुध को पड़े तो संवर्ताख्य योग होता है । यह शुभ कार्यों में नवा वर्जित है ।।३०।।

सिद्धियोग:

शुक्रे नन्दा बुध भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया ।
पूर्णागुरौ तिथिर्ज्ञेया सिद्धियोग उदाहृतः ।३१।

शुक्र और नदा, बुध को भद्रा शनि को रिक्ता, भीम को जया और गुरु को पूर्णा तिथि हो तो सिद्धियोग होता है । यह शुभ कार्यों में सिद्धिप्रदप्रद हैं ।।३१।।

अथ सिद्धियोग चक्रम्

वार	गु.	श.	मं.	बु.	शु.
तिथि	५	४	३	२	१
तिथि	१०	९	८	७	६
तिथि	१५	१०	१३	१२	११

विश्कुम्भादि २७ योगाः

विश्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान सोभनस्तथा ।
अतिगण्डः सुश्र्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ।३२।
गण्डो वृद्धिध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणेस्तथा ।
वज्रसिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः ।३३।
सिद्धि साध्यः शुभ शुक्लो ब्रह्मान्द्रोवैध्रतिः क्रमात् ।
सप्तविंशातिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ।३४।

विश्कुम्भ १. प्रीति २. आयुष्मान ३. सौभाग्य ४. शोभन ५. अतिगण्ड ६. सुकर्मा ७. धृति ८. शूल ९. गण्ड १० वृद्धि ११. ध्रुव १२.

व्यागात १३, हर्षण १४, वज्र, १५, सिद्धि १६, व्यतीपात १७, वरीयान १८, परिध १९, शिव २०, सिद्धि २१, साध्य २२, शुभ २३, शुक्ल २४, ब्रह्म २५, ऐन्द्र २६, वैधृति २७ हैं। वे योग अपने-अपने नाम के तुल्य ही फल देते हैं ।।३२-३४।।

करणानि

तिथि तु द्विगुणीं कृत्वा हीनमेकेन कारयेत् ।
सप्तभिस्तु हरदभाग शेषं करणमुच्यते ।३५।

शुक्ल प्रतिपदादि से वर्तमान तिथि तक गिने दूना करे १ घटाये सात का भाग दे और जो अंश शेष बचे उस तिथि को दूसरी करण जान ले। प्रत्येक तिथि में दो कारण होते हैं।

उदाहरण – वर्तमान तिथि ८ हैं इसको दो से गुणा किया १६ हुआ इसमें १ घटाया तो १५ हुआ, इसमें ७ का भाग देने से १ शेष बचे अत: शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि में उत्तरार्द्ध में पहला बढ़कर होना निश्चय हुआ तिथि को दूनी, एक ऊनी साते हरण शेषे करणन्।

बवश्च बालवश्चैव कौलवस्ते तिलस्तथा ।
गरश्चवणिजो विष्टिः सप्तते करणानि च ।३६।
कृष्णपक्ष चतुर्दश्यां शकुनि. पश्चिमेदले ।
चतुष्पदश्च नागश्च अमावास्या दलद्वये ।३७।
शुक्लप्रतिपदायां च किंस्तुघ्न: प्रथमे दले ।
स्थिराण्येतानि चत्वारि करणानि जगुर्बुधा: ।३८।
शुक्लप्रतिपदांते च बवाख्या: करणो भवेत् ।
एकादशे च विज्ञे याश्चरस्थिरावभागत: ।३९।

बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज विष्टि ये कारण चर संज्ञक है। कृष्णपक्ष चतुर्दशी के अन्तदल में शकुनि नामकरण और अमावस्या के पूर्वदल में चटुदल में नामक करण तथा अन्तदल में नामकरण जाने। शुक्ल प्रतिपदा के पूर्व दल को किंस्तुघ्न नामक

करण जाने, इन चारों कारणों को बुधजन स्थिर कहते हैं। शुक्ल परिवा के रन्तिमदल को 'बव' नामक करण कहते हैं। इस प्रकार चर-स्थिर के विभाग से ११ करण माने गये हैं ।।६३-३९।।

कृष्णपक्षे करणानि

ति	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
पूर्वदल	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वाणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	चतुष्पद
परदल	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वाणिज	शकुनि	नाग

शुक्लपक्षे करणानि

ति	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१
पूर्वदल	निस्तुघ्न	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि
परदल	बव	कौ	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वाणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव

नक्षत्राधिपूर्तिः

दस्त्रो यमोऽनलोधाता चन्द्रो रुद्रोऽदितिर्गुरुः।
भुजंगश्च पितरो भगोऽर्यमदिवाकरो ।४०।
त्वष्टा वायु शमवह्नी मित्रः शुक्रश्चनिर्ऋति।
जलं विश्वेधिर्विष्णर्वासवो वरुणस्तथा ।४१।
अजेकपादाहिर्बुध्न्यः पूषेति रुथिता बुधं।
अष्टाविंशतिसंख्यानां नक्षत्राणामधीश्वराः ।४२।

अश्विनी के अश्विनीकुमार, भरणी के यम, कृत्तिका के अग्नि, रोहिणी के ब्रह्मा' मृगशिरा के चन्द्रमा, आर्दा के रुद्र, कुनर्वसु के अदिति पुष्य के गुरु, आश्लेषो के सर्प, मघा के पितर, पुर्वाफा० के भग उ० फा० के अर्यदा, हस्त के सूर्यं, चित्रा के त्वष्टा स्वाती के वायु, विशाखा के इन्द्राग्नी' अनुराधा के मित्र (सूर्यं, ज्येष्ठा के इन्द्र मूल के राक्षस पूर्वाषा० के जल० उ० षा० के विश्वेदेव, अभिजित् के विधि श्रवण के विष्णु, धनिष्ठा के वायु, शतभषा के वरुण, पुर्वा भा० के अजकवाद उत्तरा भा० के अहिबुंध्न्य और रेवती के पूषा ये २८ नक्षत्रों के स्वामी हैं। जिस देवता की प्रतिष्ठा, पूजा करनी हो, उसी का नक्षत्र ले।४०-४२।

नक्षत्र देवता (१।

नक्षत्र	अ	म	कृ.	रा.	मृ.	आ	पू.	पु.	श्ले.	म	पू.	उ.	ह.	चि.
संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
देवता	अश्विनी	यम	अग्नि	ब्रह्मा	चन्द्रमा	रुद्र	अदिति	बृहस्पति	सर्प.	पितर	भग	अर्यमा	सूर्य.	त्वष्टा
नक्षत्र	स्वा.	बि	ऽनु	ज्ये	म	पू	उ.	ऽभि	श्र.	ध.	पू.	श.	उ.	रे.
संख्या	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
देवा	वायु	इन्द्राग्नि	मित्रसय	इन्द्र	राक्षस	जल	विश्वदेव	विधि	विष्णु	सूर्य.	वरुण	अज. पा	आहिबु	पूषा

इति द्वितीयप्रकरण समाप्तम्

अथ तृतीयप्रकरण प्रारभ्यते

अङ्गस्पर्शादि प्रश्नफलज्ञानम्

शिरो मुख कर्णनेत्रे स्पृट्वा पृच्छति यो नरः ।
सुवर्णधनधान्यावां लाभस्तत्र न सशयः ।१।

स्कन्धग्रीवाकण्ठहस्तस्पर्शे लाभो हि दुखिमः ।
कुक्षिनाभिसमालभे भक्ष्यपानादि सिद्धदति ।२।

जंघालिगकटिस्पर्शे कन्यालाभ सुतोद्भवः ।
जानुगुल्फपदस्पर्शे महाक्लेशः प्रजायते ।३।

केशस्पर्शे भवेन्मृत्युः धलस्पर्शे शुभं भवेत् ।
तृणांगारकसस्पर्शे कार्यसिद्धिर्न जायते ।४।

काष्ठपंकपदस्पर्शे ग्रहपीडाभयं भवेत् ।
सुगंधमद्यमांडादिस्पर्शे सिद्धिः प्रजायते ।५।

शून्यालये श्मशाने च शुष्ककाष्ठक्षते तरौ ।
गुल्फभस्माधस्थाने प्रशने क्लेशः प्रजायते ।६।

देवालये नदीतीरे द्रव्यस्थाने शुभं भवेत् ।
शुभं दिक्ष्वीरितं सिद्धि र्विदिक्षु च न जायते ।७।

जो प्रश्न पूछने वाला अपने शिर, मुख, कान, नेत्र, अपने हाथ को छूए हो तो निस्सन्देह धनधान्य पावे। कंधा, ग्रीवा, कंठ, हाथ छुए हो तो दुःख से लाभ हो। काँख नाभी हो तो भोज्य पदार्थ मिले, जानु, गुल्फ, लिंग छुए हो तो कन्या या पुत्र पावे। पैर जानु छुए हो तो महाक्लेश पावे। केश छुए तो मृत्यु होवे। फल छुए हो तो शुभ हो। तण, अग्नि हुए हो तो कार्यसिद्ध न हो, काष्ठ, कीचड़ वस्त्र हुए हों तो ग्रहमय हो सुगन्ध वा मद्यपान छुए हो तो सिद्धि हो तो और शून्यग्रह श्मशान सुर्खाकोष्ठक पर चावल तरुलताओं भस्म पर बैठे प्रश्न पूछे तो क्लेश पावे देवस्थान नदी के तीर पवित्र स्थान में और

शुभ दिशाओं के सम्मुख होकर पूछे तो शुभफल कहे, जो विदिशा (कोण) में मुंह करके पूछे तो अशुभ कहे ॥१-७॥

लग्नप्रमाणम्

तिस्रो मीने च मेषे च घटीपंचश्रुतिः फलम् ।
कलसश्च वृषे कुम्भे पलाः प्रोक्तास्तु षोडशः ।८।
मिथुने च मकरे पञ्च घटिकाः विशिखाः पलम् ।
पंच कर्के च चापे च शशिवेदाः पलाः स्मृताः ।९।
कन्यापंच तुले पंच पलाश्चन्द्रस्तथाग्नयः ।
घटिकाः पंच सिंहेऽलौ द्वयं वेदाः पलाः स्मृताः ।१०।

मीन, मेष, का ३.४५। वृष, कुम्भ ४।१६। मिथुन, मकर ५.५। कर्क, धनु ५।४१। सिंह, वृश्चिक ५,४२। कन्या, तुला ५।३१। इस प्रकार लग्न प्रमाण पण्डित लोगों ने कहे हैं ॥८-१०॥

ग्रहाणांदानम्

एवं लग्नप्रमाणं स्यात्कथितं पूर्वसूरिभिः ।
सूर्ये धेनुश्चताम्रं च गोधूमं रक्तचन्दनम् ।
चन्द्रे शंखश्चन्दनं च वस्त्रं चासिततंडुलाः ।११।
कुजे वृष प्रदातव्यो रक्तवस्त्रं गुडोदनम् ।
बुधे कर्पूरमुद्गाश्च हारिद्राश्च हरितमपि ।१२।
पीतवस्त्रं द्वयं जीवे हरिद्रा चणकानि च ।
कन्दः शुक्रे सितो देया शुक्लधान्यानियानि च ।१३।
शनौ तैलं तिला देयाः कृष्णगोदानमुत्तमम् ।
राहौ च महिषी छागौ माषाश्च तिलसर्षपाः ।१४।
अजमेषौ च दातव्यो केतौ धान्यश्च मिश्रितम् ।
स्वर्णगोविप्रपूजाभिः सर्वेषां शांतिरुत्तमा ।१५।

सूर्य में लाल गौ तांबा और रक्तचन्दन। चन्द्र में शंख, चन्दन, श्वेतवस्त्र श्वेत चावल। भौम में वृषभ, रक्तवस्त्र, गुड़ौदन। बुध में

कपूर, मूंग, हल्दी हरितमणी (पन्ना)। बृहस्पति में दो पीतववस्त्र हल्दी दोनों, चना की दाल। शुक्र में श्वेत घोड़ा श्वेताधान्य। शनि में तेल तिल, काली गौ। राहु में भैंस, बकरा, उड़द, तिल, सरसों केतु में बकरा मेढ़ा, सतनजा, सोना, गेहूँ और ब्राह्मणपूजा इत्यादि सब ग्रहों के दोष को शान्त करते हैं ।।११-१५।।

द्वादशराशिगतगुरुफलम्

मेषेगुरौ सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च सुखीमः ।
वृषगुरौ स्वल्पवृष्टि प्रजापीड़ा च विग्रहः ।१६।
अनावृष्टि प्रजानाशो वैरं च मिथुने गुरौ ।
कर्कगुरौ सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च प्रजासुख ।
कन्यागुरौ पौपपीड़ा सुभिक्ष सस्यजन्म च ।१८।
तुले गुरौ हस्यनाशो बहुक्षोर प्रजायते ।
अलौ जीवे च दुर्भिक्षं राजचौरोरगादभयम् ।१९।
चापे गुरौ शुभा वृष्टिः शुभं सस्यमहर्घता ।
दुर्भिक्ष मकरे जोवे चपाज्वगुदधं पशुक्षयः ।२०।
कुम्भे गुरौ च दुर्भिक्ष धातुमूलहघता ।
दुर्भिक्षं दत्रिणे देशे शषे जीवे न चान्यतः ।२१।

जब मेष राशि में बृहस्पति आवे तो सुभिक्ष हो वर्षा भी अधिक हो, मनुष्य सुखी रहे, और बृषराशि में बृहस्पति आवे तो वर्षा कम हो, प्रजा को पीड़ा हो, आपस में लड़ाई हो। मिथुन में बृहस्पति आवे तो वर्षा बिल्कुल न हो। कर्क में बृहस्पति आवे तो वर्षा बहुत हो, देश भङ्ग हो, अन्न मंहगा। सिंह में बृहस्पति आवे तो सुभिक्ष वर्षा अधिक हो, प्रजा सुखी रहे। कन्या में गुरु आव तो रोगपीड़ा धान्योत्पत्ति और अन्न सस्ता हो। तुला में गुरु आवे खेती का नाश और दूध बहुत हो वृश्चिक में गुरु आवे राजा, चोर सर्प भय तथा दुर्भिक्ष हो। धन के गुरु वर्षा खेती बहुत करे परन्तु रस महंगा करे। गुरु

महादुर्भिक्ष राजाओं में युद्ध और पशुओं का नाश करे। कुम्भ के गुरु दुर्भिक्ष धातु मंहगी करे। मीन के गुरु दक्षिण देश में ही सुभिक्षा करे अन्यत्र नहीं।१६-२१।

द्वादशमाससंक्रान्तिबृष्टिफलम्

मर्गकार्तिशुसंक्रान्तौ बृष्टिर्भवति मध्यमा।
पौषे माघो नृणाँ सौख्य सस्यपूर्णा वसुन्धरा।२२।
चैत्रफाल्गु वैशाखज्येष्ठव नां सक्रमे धनः।
यदि वर्षति सर्वत्र सुक्षिक्षं च प्रजासुखम्।२३।
आषाढ़ सक्रमे व्याधिश्च श्रावणे सुखम्।
भाद्रे च बहवो रोगः सुख सवत्र चाश्विने।२४।

कार्तिक मार्गशीर्ष को संक्रान्ति में वृष्टि हो तो वर्षा ऋतु में मध्यम वर्षा। पौष-माघ में संक्रान्ति के दिन मेघ बरसे तो पृथ्वी पर प्रजा सुखी रहे और अन्नों की उत्पत्ति हो। फाल्गुन चैत्र वैशाख और ज्येष्ठ की संक्रान्ति में मेघ बरसे तो सर्वत्र सुभिक्ष रहे अन्नादि सभी पदार्थों से प्रजा सन्तुष्ट हो आरोग्यता हो, प्रजा सुखी रहे। आषाढ़ में संक्रान्ति के दिन मेघ बरसे तो प्रजा में रोग अधिक हो। श्रावण में संक्रान्ति के दिन मेघ बरसे तो प्रजा को अधिक सुख हो। भादों में संक्रान्ति के दिन मेघ बरसे तो अनेकों रोक व्याप्त रोग हो और यदि क्वार में संक्रान्ति को मेघ बरसे तो आनन्द हो। यही बारहों मास की संक्रान्ति वृष्टि का शुभाशुभ फल सर्वत्र जानना।१२२-२३।।

शुक्लपक्षपंचमी वायुफलम्

चैत्रस्य शुक्लपंचम्याँ पूर्वे वायुर्धनागमः।२४।
भाद्रेगुणत्रयं मूल्यं रसानां जायते तदा।
ज्येष्ठस्य शुक्लपंचम्यां वृष्टिः पश्चिममारुतः।२५।
तदा चतुर्गणमल्यं धान्यानां कार्तिके भवेत्।

श्रावणे शुक्लपंचम्यां वृष्टिर्वाति दिनद्वयम् ।२६।
दक्षिणे पश्चिमे ज्ञयं दुर्भिक्षं धान्यसंक्षयम् ।

यदि चैत्र शुक्ल पञ्चमी को वायु पूर्व में चले और मेघ बरसे। भादों में रस गो रस घृत, तिगुने मूल्य में बिके। जो ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को पश्चिम में पवन चले और मेघ बरसे। कार्तिक में अन्न चौगुना मोल पर बिके। श्रावण शुक्ल पंचमी को दो दिन पवन चले मेघ बरसे तो दक्षिण में अकाल धान्य का नाश हो ।।२५-२७।।

नक्षत्रवृष्टि फलम्

चित्रास्वातिशाखायां श्रवण चैव वर्षति ।२८
सर्वरत्नं परित्यज्य कर्तव्यश्चान्नसञ्चय: ।

श्रावण में चित्रा-स्वाती विशाखा और श्रवण नक्षत्र में वर्षा हो तो रत्न बेचकर भी सबको अन्न का संचय करना शुभ है अर्थात् मँहगी अधिक आवे । २८।।

वायुपरीक्षा

आषाढ़े पूर्णिमायां चेदशिलो वाति नैर्ऋते ।२९।
अनावृष्टिर्धान्यनाशो जल कूपे दृश्यते ।
आषाढ़े पूर्णिमायां तु वायव्ये यदि मारुतः ।२८।
धर्मसिद्धिस्तदा लोके धनधान्यं गृहे-गृहे ।
आषाढ़े पूर्णिमायां चैशाने वाति मारुत. ।२९।
सुखिनो हि तदा लोका गीतवाद्यपरायणाः ।
वह्निकोण वह्विभीतिः पश्चिमं च जलाद्भयम् ।३०।
अन्यत्र यदि वायुः स्नाऽसुधिक्ष यावते तदा ।

आषाढ़ की पूर्णिमा को नैऋत्यकोण में वायु चले तो थोड़ी वर्षा हो और धान्य भी कम हो। तथा कूप सूख जाय। आषाढ़ की पूर्णिमा को वायव्य में वायु चले तो लोग धर्मशील रहे, धनधान्य की वृद्धि हो। ईशान्य में वायु चले तो लोग सुखी आनन्द से रहे। वायु जो आग्नेय में पवन चले तो अग्नि का भय हो। पश्चिम में पवन चले

जल का भय हो और उत्तर पूर्व, दक्षिण दिशाओं की हवा चले तो सुभिक्ष होवे ।।२८-३०।।

उत्पात:

सर्वमासे पूर्णिमायां भूमिकम्पो यदा भवेत् ।३३।
उल्कातारावज्रपातैर्ग्रसितौ शशिसूर्ययोः ।
धूमकेतुः शक्रचपे ग्रहणं बहुधा यदा ।३४।
तदाऽसौ सर्ववस्तूनां जायते च महर्घता ।३५।

यदि सभी मास की पूर्णिमा को भूमिकम्प, दिन में तारा टूटे, उल्कापात वज्रपात और चन्द्र सूर्य का ग्रहण व केतु वाइन्द्रधनुष उदय हो तो सब वस्तु मँहगी होगी, ग्रहण अधिक हो तो अवश्य मँहगी होगी ।।३३-३५।।

आषाढ़द्वितीयादिनचदिनतुष्टफलम्

इत्येषामि संक्रान्तो वृष्टिश्चापि शुभाशसम् ।
आषाढ़े शुक्लपञ्चम्यां द्वितीतायां च वर्षति ।
यदि मेघस्तदा वृष्टिः श्रवणे जायते ध्रुवम् ।३६।
तृतीयायां पूर्ववायुः पुर्वयाति च वारिदः ।
यदि व्योम्नि तदा भाद्र वर्षन्ति विपुलं जलम् ।३७।
चभ्यां दक्षिणे वायुमेघ पूर्व च गच्छति ।

जो आषाढ़ शुक्ल में पंचमी या द्वितीया को मेघ बरसे तो श्रावण में विशेष वृष्टि हो ! ज्येष्ठ की तीज को पूर्व वायु चले पूर्व आकाश में जो जावे तो भादों में जल ज्यादा बरसे, चौथे को दक्षिण दिशा में पवन चले और पूर्व को मेघ जाय तो क्वार में विशेष वर्षा हो ।।३६-३८.।

वायुवर्षाज्ञानम्

आश्विने च तदा मासे वृष्टिर्भवति निश्चयम् ।३८।
पंचम्यामुत्तरे वायूर्द्रश्यते च यदा बुधैः ।
तदा च कार्तिके मासे वृष्टिर्भवति भयसी ।३९।

चतुष्टये च दिवसे यदा वर्षति वारिदः ।
अतिवृष्टया च दुर्भिक्षा जाजते नात्र संशयः ।४०।
दिनद्वय यदा वातो वान्ति दक्षिणपश्चिमे ।
तवा नश्चन्ति धान्यानि दुर्भिक्ष न प्रजायते ।४१।
तृतीयायां च पंचम्यां वायु: पूर्वोत्तरे यदि ।
तदा धाष्यन्ते सब कृतयुगोपमम् ।४२।

आषाढ़ शुक्ल पंचमी को उत्तर में वायु चले तो कार्तिक में अधिक वर्षा हो । आसाढ़ की २ ३।४।५ को जल बरसेगा पृथ्वी पर अति वृष्टि से दुर्भिक्ष, आषाढ़ की २।३ को दक्षिण से पश्चिम को पवन जावे तो धान्य का नाश हो और सुभिक्ष हो । आषाढ़ शुक्ल ३।५ को पूर्व या उत्तर की पवन चले तो अन्न बहुत उपजे समृद्धि होय और सतयुग के समान वर्षा सर्वत्र हो जाय ।।४०-४३।।

पौषमासे मूलभरणीफलम्

पोषे मूलादभरण्यातं चन्द्रे वारे च गर्जति ।
आर्द्रादितौ विशाखते सूर्यर्क्षे च न वर्षति ।४४।

पौष मास में मूल से भरणी तक चन्द्रनक्षत्र में बादल न हो तो आर्द्रा से बिशाखा तक सूर्य नक्षत्र में वर्षा नहीं होवे ।४४।

परस्परनक्षत्र स्थित ग्रह फलम्

यदि तिष्ठति भौमस्य क्षेत्र कोऽपि ग्रहस्तदा ।
ऋतुमासास्तु धान्यानां जायते च महघता ।४५।
शुक्रक्षेत्रे कुजे मासे द्वये नन महघता ।
चन्द्र च दिननाथे च सर्वरोग: शुभ तथा ।४६।
पनौ राहौ सर्वधान्यं समघं राज विग्रहम् ।
बुधक्षष रवौ चन्द्रे विरोधः सवभुभुजाम् ।४७।
उत्पत्तिस्तमुधान्यानां पंचमासे प्रजायते ।
सुभिक्षं तु महावृष्टिः पशुनां तृणसकुलम् ।४८।

यदि मंगल के क्षेत्र में कोई भी ग्रह हो तो ६ मास तक चावल मंहगा रहेगा। जो शुक्र क्षेत्र में भौम का उदय हो तो २ मास धान्य मंहगा रहे, जो चन्द्रमा अथवा सूर्य का उदय हो तो सेवा करे, परन्तु शुभ हो। जो शनि या राहु का उदय हो तो सभी अन्न मंहगा और राज्यविग्रह करे। जो बुध के क्षेत्र में चन्द्र सूर्य उदय हो तो राजाओं में विरोध करे। पांच मास में धान्य उपजे, अतिवृष्टि और पशुओं को तृण बहुत होवे ॥४५-४८॥

शुक्रक्षेत्रे बुधश्चन्द्रे चन्द्रक्षेत्रे भृगोः सुतः।
पांकंढिनां भवेदवृद्धिर्धान्यानां च महर्घता।४९।
बुधक्षेत्रे शनौ च द्रे सर्वधान्यमहर्घता।
शुक्रक्षेत्रे गुरौ भौमे कार्पासादिमहर्घता।५०।
भौमक्षत्रे राहुश्ताम्रादीनां महर्घता।
शनिक्षेत्रे शनी राहु सुभिक्षं चन्द्रभास्करे।५१।
पशु नाशो धा यवृद्धिगुडादीनां महर्घदा।
गुरुक्षेत्रे शनौ राहौ स्वल्पवृष्टिस्तृणक्षयः।५२।
भौमे राज्ञा विरोधः स्याद यूध वृष्टिश्चभयमी।
तृणवृद्धिः पशूनां च सौख्यं धान्यं बहूनि च ॥५३।
भौमक्षेत्र यदा संति राहुभौमार्कभार्गवदाः।
षण्मास गूडकार्पासघृतीक्षीरदहेर्घता।५४।
मदक्षात्रे यदा सन्ति मदराहुबुधास्तदा।
चतुष्पादादानां नागश्च द्विपदानां च जायते।५५।

जो शुक्र राशि में बुध व चन्द्रमा हो और चन्द्रमा की राशि में शुक्र हो तो पाण्ड बढ़े और अन्न मंहगा हो बुध के क्षेत्र में शनि का चन्दमा हो तो सभी अन्न मंहगा हो। शुक्र के घर में गुरु या भौम हो तो कपासादि नीरस वस्तुएं मंहगी हो। जो भौम से घर में अग्नि या राहु हो तो सुभिक्ष। जो सूर्य के घर में शनि राहु हो तो पशु मरे

और गुड़ादिक मंहगे होवे और धान्य अधिक हो जो गुरु के घर शनि राहु हो तो स्वल्पवृष्टि और तृणादिकों का क्षय हो, और क्षेत्र में मङ्गल हो तो राजाओं में विरोध हो। जो गुरु के घर हो तो वर्षा अधिक, तृण बहुत और पशुओं को सुख हों और धान्य विशेष हो। भौम के घर में राहु, भौम, सूर्य, या शुक्र हो तो ६ मास तक गुड़, कपास, घृत और दुग्ध मंहगे और जो शनि क्षेत्र में राहु, शनिचर और बुध ये ग्रह स्थिर हो तो जानवरों का और द्विपद जो पक्षी तथा मनुष्य उनका नाश होवे ।।४९-५५।

भौमक्षेत्रे यदा सन्ति भृगुमन्दनिशाकरा ।
तदा मुक्ता पशूनां च शंखस्य च महर्घता ।५३।
भौमक्षेत्रे भार्गवस्य धान्यानां च महर्घता ।
शनिक्षेत्रे रवौ चन्द्रे वस्त्राणां च महर्घता ।५७।
शुक्रक्षेत्रे गुरुभौमः प्रजापीड़ा प्रजायते ।
ग्रहराशिसमायोगे फलमेतत्प्रकीर्तितम् ।५८।

यदि भौम क्षेत्र में शुक्र शनि और चन्द्रमा हो तो क्रम से मोती शंख और पशु मंहगे हों, जो भौम क्षेत्र में शुक्र हो तो अन्न मंहगा हो, शशि क्षेत्र में रवि चन्द्र हो तो वस्त्र मंहगे हों। जो शुक्र में गुरु या भौम हो तो प्रजा को पीड़ा हो। उक्त राशि या योग पड़े तो ऐसा फल कहे ।.५६-५८।।

ग्रहाणानुदयफलानि

चन्द्रोदये कुजक्षेत्रे तुषधान्यस्य वृद्धये ।
चन्द्रोदये भृगुक्षेत्रे स्वल्पवृष्टिः क्रयाणके ।५९।
प्रजापीड़ा बुधक्षेत्रे सोमशुक्रोदय भवेत् ।
रवि क्षेत्रे तुलावृद्धिः शनिसोमभृगूदये ।६०।
चन्द्रक्षेत्रे शुक्रचंद्रबुधनामुदये भवेत् ।
उदितौ च बुधक्षेत्रे यदि राहुशनैश्चरौ ।
पशुक्षयः प्रजापीड़ा धान्यानां च महर्घता ।६१।

शुक्रक्षेत्रे सोमसूर्यं सूर्यपुत्रादियो यदा।
उदयास्तमहापीड़ा जायये च महर्घता ।६२।

जो भौम के क्षेत्र में चन्द्रोदय हो तो धान्य वृद्धि हो। शक्र के क्षेत्र में चन्द्रोदय हो तो खरीद वाले को स्वल्प वृद्धि हो। बुध के क्षेत्र में चन्द्र व शुक्र उदय हो तो प्रजा को पीड़ा। जो रवि क्षेत्र में शनि वा चन्द्र का उदय हो तो तौल बढ़े। जो चन्द्र के क्षेत्र में शुक्र, बुध उदय हो तो छः मास दुर्भिक्ष रहे और वर्षा अधिक हो। जो बुध के क्षेत्र में राहु और शनैश्चर का उदय हो तो पशुओं का नाश हो, प्रजा को पीड़ा हो, अन्न मंहगा हो। शुक्र के क्षेत्र में बुध, सूर्य और शनि का उदय हो ॥५६-६३।

पदेदय शनिक्षेत्रे भौमभास्करयोर्वेत्।
घृतानां च तदा बुद्धिगुडाना च महर्घता ।६४।
दयासावृदिश्च शनिक्षात्रे शनैश्चरः।
तत्रास्यात्तुणकाष्ठानां लोहानां च महर्घता ।६५।

जो शनि के क्षेत्र में सूर्य भौम का उदय हो तो घृत की वृद्धि हो, रक्त वस्त्र तथा मांगलिक वस्तु आदि सभी हों तथा गुड़ आदि महगे हो। जो शनि क्षेत्र में शनि का उदय हो तो तप काष्ठ लोहा महगे हो ।६४-६५।

नक्षत्रगतग्रहफलम्

आर्द्रायान्तु यदा भौमाशनिग्नेस्तथा भवेत्।
बुधो भाद्रे च दुर्भिक्ष सुभिक्षं भृगुनन्दने ।६६॥

जो आर्द्रा का भौम व कृतिका शनि और पूर्व भाद्रपद का बुध हो तो दुर्भिक्ष करे और जो शुक्र हो तो सस्ती हो ।६६।

गुरुर्यदा विशाखायां तदा धान्यमहर्घता।
मंगल वर्षाकाले च शनौ सर्वत्रमंगलम् ।६६।

विशाखा के गुरु हो तो अन्न महगा हो परन्तु वर्ष भर मंगल रहे शनि हो तो सर्वत्र मङ्गल हो और मङ्गलकार्य हो ।६७।

सुभिक्षं चानुराधायां यदि कोऽपिग्रहो भवेत् ।
कल्याणं च सुभिक्षं चाश्लेषायांसस्थिते गुरौ ।६८।

जो अनुराधा का कोई ग्रह हो तो सुभिक्षा हो और जो आश्लेषा का गुरु हो तो प्रजा का कल्याण हो और अन्न की सस्ती हो ।६८।

कार्पासं बहवो मन्दे भौमे कंटकपीडनम् ।
बुधे तिलाश्च माषाश्च महघा वर्षकालतः ।६९।

आश्लेषा के शनि हो तो कपास बहुत हो, जो भौम हो तो फौज को पीड़ा करे, आश्लेषा के बुध हो तो वर्ष भर तिल और उड़द महगे हो जाय ।६९।

सूर्ये सर्वाणि धान्यानि ससर्घाणि भवन्ति च ।
शुक्रे च महती वर्षा सस्यानि च ।७०।

जो आश्लेषा के सूर्य हो तो सब अन्न महगे हो और जो आश्लेषा शुक्र हो तो वर्षा बहुत हो और सब प्रकार के अन्न बहुत उत्पन्न हो ।७०।

मुलादि नक्षत्रगतगुरुफलम्

मुले कुलित्थमुद्गानां गुरौ वृद्धिः प्रजायते ।
भौमे मुद्गस्य नाशस्याद बुधे च सवसपदः ।७१।
पुर्वाषाणागते भौमे पीड़ा च पशपक्षिणाम् ।
केतो तत्रगते मन्दे जायते च महर्घता ।
भौमे च पशुजातानां जायते हि महर्घता ।७३।
अभिजिन्नमाछ्वे यदा क्षाधासुतो भवेत् ।
सर्वसस्यानि जायते सुभिक्षं च कुजे तथा ।७४।

जो मूल का गुरु हो तो कुलथि और मूंग बहुत हो जो भौम हो मूंग का नाश हो, बुंध हो तो सर्व सम्पदा हो जो पूर्वाषाढ़ा का भौम

हो तो पशु पक्षियों को पीड़ा हो, केतु हो तो सर्व वस्तु महगी हो और वेने ही शनैश्चर कर जा उत्तराषाढ़ा का गुरु हो तो गुड़ महगा हो पशु महगे सुभिक्ष हो, जो अभिजित का शनि या भौम तो सर्वान्न उपजे और सुभिक्ष हो ।७१-७४।

श्रवणे च यदा जीवस्तदा स्यः सर्वसंपदः ।
बुध राजसुत त्रासः शनौ भुरीक्षुकारकः ।७५।

श्रवण का गुरु हो तो सब सम्पदा हो, बुध हो तो राजपुत्र को पीड़ा करे, शनि हो तो ईख की वृद्धि हो ।७८।

कृतिकीयां च रोहिण्याँ यदा जीवोहितिष्ठति ।
मध्यमानिच सस्यानितदा वृष्टिश्च मध्यमा ।७६।
यार्द्रायां हृगशीर्षे च यदा वाचस्पतिः स्थितिः ।
दुर्भिस्यादनावृष्टिः प्रजानां च सदाऽशिवम् ।७७।
फाल्गुनोद्वयहस्तेषु मघायां च यदा गुरुः ।
सुभिक्षं च सुवृष्टिश्चप्रजान स्यादरोगता ।७८।

जो कृतिका या रोहिणी का गुरु हो तो अन्न मध्यम उपजे और वर्षा मध्यम हो । जो आर्द्रा तथा मृगशिरा के गुरु हो तो दुर्भिक्ष हो, वर्षा थोड़ी और प्रजा का सदा अकल्याण हो । मघा पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा फाल्गुनी और हस्त का गुरु हो तो सुभिक्ष और आयग्यता हो ।७६-७८।

चित्रास्वात्योर्यदा जीवस्तदा चित्रपयोधरः ।
विचत्राणि भवन्त्येवं सस्यानि च कवित्वबचित् ।७९।
विशाखांमैत्रयोवि धान्यं वर्षा च मध्यमा ।
ज्येष्ठामुले मासयुग्मं पृष्टिमासद्वयेन च ।८०।
पुर्वाषाढोत्तरषाढ़स्जितो यदि बृहस्पतिः ।
तदारोग्य सु भिक्षं च सुसृष्टिश्क प्रजायते ।८१।
अनावृष्टिश्च दुर्भिछ सेवत्यां संस्थिते गुरौ ।
धनिष्ठायां च शुक्रेऽपिपीड़ा भवति हस्तिनाम् ।८२

चित्रा तथा स्वाती का गुरु हों तो विचित्र वर्षा हो कहीं-कहीं विचित्र फूल फले और धान्य कहीं-कहीं हो। बिशाखा और अनुराधा का गुरु हो तो वर्षा और अन्न मध्यम हो, ज्येष्ठा और मूल के गुरु में दो मास में वर्षा हो। पूर्वाषाढ़ा तथा उत्तराषाढ़ा के गुरु में प्रजा निरोग रहे, वर्षा अच्छी हो और सुभिक्ष हो जो रेवती का गुरु हो तो वर्षा न हो तथा अन्न महगे होवे, धनिष्ठा का शुक्र हो तो हाथियों को पीड़ा हो।७६-८२।

इति तृतीय प्रकरणं समाप्तम्

— × —

अथ चतुर्थप्रकरणं

होड़ाचक्रम्

अब नक्षत्रों का विचार करते हैं। एक नक्षत्र के चार चरण होते हैं जिस चरण में जन्म हो उसी चरण के आदि अक्षर से बालक तथा कन्या का नाम रखे।

चु, चे, चो, ला अश्विनी।१। ली लू, लो भरणी।२।
आ, ई, उ, ए कृतिका।३। ओ, बा, वी, वू रोहिणी।४।
वे, वो, का, की मृगशिरा।५। कु, घं, ङ, छ आर्द्रा।६।
के, को, हा, ही पुनर्वसु।७। हू, हे, हो, डा पुष्य।८।
डी, डू, डे, डो आश्लेषा।६। मा, मी, मू, मे मघा।१०।
मो, टा, टी, टू पूर्वा फा:।११। टे, टो, पा, पी उत्तराफा।१२।
पू, ष, ण, ठ हस्त।१३। पे, पो, रा, री चित्रा।१४।
रू, रे, रो, ता स्वाती।१५। ती, तू, ते, तो विशाखा।१६।

ना, नी, न, ने अनुराधा १७। नो, या, यी, यु, ज्येष्ठा ।१८।
ये, यो, भा, भी, मुल, ।१६। भू, धा, फा, ढा, पूर्वाषाढ़ा ।३०।
भे, भो, जा जो, उत्तराषाढ़ा ।२१। जु, जे, जो, खा अभिजित् ।२२।
खी, खू, खे, खो, श्रवण ।२१ गा, गी, गू, गे, धनिष्ठा ।२४।
गा, सा, सी, से, शतभिषा ।२५। से सो द, दी, पूर्वाभाद्रपदा ।२६।
दू, थ, झ, ञ उत्तराषाद्रपदा ।२७। दे, दो, चा, ची, रेवती ।२८।

अथ सपादनक्षत्रद्वय राशिक्रमः

सप्तविंशतिभानां च नवभिर्नवभिः पदैः ।
अश्विनीप्रमुखानां घ भेषदया राशयः स्मृताः ।१।
अश्विनी भरणी, कृत्तिकापाग मषः ।१।
कृति कायास्त्रतः पादः रोहिणीमृगशिरोर्द्ध घृषः ।२।
मृगशिरोर्द्ध भार्द्रापुनर्वसुपादत्रयं मिथुनः ।३।
पुनर्वसोः पादमेकं पुष्याऽश्लेषान्तं कर्कः ।४।
मघाचपूर्वाफाल्गुन्युत्तराफल्गुयोः पादमेक सिंह ।५।
उत्तराफाल्गुनी: त्रयः पादाः हस्त चतार्द्ध कन्याः ।६।
चित्रार्द्धं स्वातिविशाखापादत्रय तुला ।७।
विशाखापादनेकमनुराधाज्येष्ठान्तं वृश्चिकः ८।
मूलं च पूर्वाषाढोत्तराडापादमेकं धनु ।९।
उत्तराषाढस्त्रयः पादा अभिजिच्छ्रवणधनिष्ठार्द्धं मकरः
धनिष्ठार्द्धं शतभिषापूर्वाभाद्रपदा त्रयः पादाः कुम्भः ।११।
पूर्वाभाद्रपदादनेत्रुत्तराभाद्रपद रेवत्यन्तं च मीनः ।१२।

द्वादशभावाः

तनुर्धनं सहजं सुहृत्पुत्रशत्रु कलत्राः ।
मतिश्च धर्मकर्या द्वादश राशयः ।२।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तनु	धन	सहज	सुहृद	पुत्र	शत्रु	स्त्री	मृत्यु	धर्म	कर्म	आय	व्यय

द्वादषभागः

ग्रहाणा विशोपकादृष्टिः

तृतीये दशमे पञ्च नवपञ्चयोर्दश ।
दशपञ्चाष्ट मे तुर्ये सप्तमे विशस्तिस्ततः ।३।
विश्वस्तु ग्रहदृष्टोनामेतु स्थानेषु प्रोच्यते ।
पंचविशोहकं प्रोक्तं पादमेकंकमोच्यते ।
आयव्यये घने षष्ठे लग्ने खेटो न दृश्यते ।४।

अब सब ग्रहों की दृष्टि कहते हैं। तीसरे दशमें स्थान पर ५ विश्वा (पारदृष्टि को १ चरण) नवें, पाँचवे स्थान पर १० विश्वे का (२ चरण), चौथे, आठवें, पर १५ विश्वा (३ चरण) जाने तथा सातवें स्थान पर बीतों विश्वा सम्पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। ११, १२, २, १, ६, इन स्थानों में ग्रहों की दृष्टि नहीं होती है ॥५॥

तृतीये दशमे मन्दो नवमे पंचमे गुरुः ।
विंशतिवीक्ष्यते विश्वाश्चथें च.ष्टमे कुजः ।५।

३ रे १० वे शनि, ४ वें ५ वे में गुरु ४ थे ८ वे मंगल ये तीनों ग्रह बीस विश्वो सम्पूर्ण दृष्टि जहां पर हो वहां देखते हैं ॥५॥

रविवारयुक्तामावस्यास्याफलम्

रविवासेण संयुक्ता तदा स्यान्माघज्येष्टयोः ।
अमावस्या तदा पृथ्वी रुण्डमुण्डा च जायते ।६।

माघ और ज्येष्ठा की अमावस्या को रविवार हो तो रुण्डमुण्ड पृथ्वी में बहुत लोग मरे। ६॥

दिनमानरात्रिप्रमाणम्

अयनात् त्रिगुणा मासा एव पञ्चाशता युताः ।
दलिता घटिका ज्ञेयाः षलास्तंगु पञ्चाक्षराः ।७।

मकर का अयन जिस दिन लगे उससे वर्तमान दिन तक जो मास पूरा बीता हो उसे तिगुना करे फिर उसमें ५१ जोड़कर २ का

भाग दे आधा करे बाकी जो शेष बचे वहीं घटी जाने। और महीनों से अधिक जो दिन बढ़े तो तिगुना करे जो अंक हो उतने पल उन घड़ियों में जोड़कर उसी दिन का दिन प्रमाण शुद्ध जाने, और इस प्रकार कर्क के अयन के दिन मीन से इस प्रकार गणित से रात्रि प्रका जाने परन्तु उत्तरायण सूर्य में दिन बढ़ता है इसलिये दिन प्रमाण और दक्षिणायन में रात्री बढ़ती है इसलिये रात्रि प्रमाण जाने ।।७।।

उदाहरण—सु० ८ को देखना है। पूस बदी ६ को मकर का अयन हुआ, यह महीना ४ मास गत हुआ, ४ को ३ से गुणा करे १२ हुआ, इसमें ५ जोड़ा तो ६३ हुआ, इसमें २ का भाग देकर उसका आधा ३१।। दण्ड दिन मान उन दिन का है और ४ मास से २ तिथि ज्यादे है इसको ४ से गुणा किया ६ हुआ यही रस हुआ अर्थात् ३१ घ० ३६ पल दिन मान हुआ।

त्रयोदशदिनात्मकपक्षफलम्

एकपक्षे यदा यान्ति तिथयश्च त्रयोदश।
त्रयस्तत्र क्षणं यान्ति वाजिनो मनुजा गजाः ।८।

यदि एक पक्ष में १३ तिथियाँ हो तो मनुष्यों का नाश करे और घोड़े हाथियों का नाश करे। यह तेरह दिन का पक्ष तीनों योनियों को हानिकारक है।

वह्निचक्रम् (आहुतिविचार)

सूर्ययुक्ताच्च नक्षत्राद् दिनभं च त्रयं त्रयम्।
आदित्यश्च बुध शुक्रः शनिश्चन्द्रः कुजस्तथा ।९।
जीवो राहुश्च केतुश्च होमे क्रूरा न शोभनाः।
आदित्ये तु भवेच्छोको बुध सम्पत्तिरुत्तमा ।१०।
शुक्रे चैव धनप्राप्तिः शनौ पीड़ा च जायते।
चंद्रे भवति लाभश्च भौमे च बन्धुबन्धनम् ।११।
गुरौ परमकल्याणं राहौ हानिश्च सर्वदा।
केतौ च प्राणसंदेहो वह्निचक्रमुदाहृतम् ।१२।

जिस नक्षत्र में सूर्य हो वहाँ से तीन-तीन नक्षत्र सूर्यादि ग्रहों को काटे। सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, चन्द्र, मंगल, गुरु, राहु केतु क्रम से दिन नक्षत्र का विचार करे जो क्रूर के भाग में पड़े तो शोक देने वाला है, बुध, में उत्तम संपत्ति, शुक्र; में धर्मप्रद, शनि में पीड़ा चन्द्र में लाभ भौम में बन्धन करे, गुरु में परम कल्याण हो, राहु में सदा हानि और केतु के भाग में प्राण हानि हो। इस प्रकार वह्निनी चक्र जाने (सूर्य के नक्षत्र से ४ से ६ तक १३ से १५ तक, १६ से २१ तक, श्रेष्ठ होता है।

उदाहरण – कृतिका के सूर्य में और पुष्य नक्षत्र में हवन करना कृतिका से पुष्य ६ठा नक्षत्र हुआ इसमें बुध के मुख में आहुति जायगीं जिसका फल होता है ॥६-१२॥

होमकर्मण्यग्निवासचक्रम्

सैकातिथिर्वारयुताकृता ताशेषे गुणऽभ्रभूविवह्निवासः
सौख्यायायहौमुशग्नियुग्मशेषेः प्राणप्रर्थनाशौदिविभूतले च ।१३।

अब होम कर्म से अग्निचक्र कहते हैं। शुक्लपक्ष में तिथि वार, जोड़कर एक और मिलावे और चार का भाग दे, तीन और (शून्य) बचे तो अग्नि पृथ्वी में जाने वह सुखप्रद है और एक बचे तो स्वर्ग में वह धन का नाश करे दो बचे तो पाताल में जाने वह प्राणनाशक होता है।

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ जयापधिः ।
आङ्गिराः श्रीमुखाभावो युवा धाया तथेश्वरः ।१४।
बहुधान्यः प्रमाथी च विक्रमो वृषभस्तथा ।
चित्रभानुः सुभाश्च तारण पार्थिवो व्ययः ।१५।
ब्रह्माविरतिरित्येको सष्टिरत्र प्रजायते ।
सर्वजित्सर्वधारो च विरोधी विकृतिस्तथा ।१६।

मैत्रेये पौड़नाथं च सार्वभौमं तथेन्द्रकम् ।
मद्रकान्ध्रकेनाथं च मूलस्थो हन्ति निश्चितम् ।६२।

जो अनुराधा में हो तो पौण्डुदेश के राजा को पीड़ा करे और ज्येष्ठा में हो तो चक्रवती राजा को पीड़ा करे मूल में हो तो भन्दल देश के राजा को पीड़ा करे ।६२।

पूर्वाषाढ़े काशिपाजमुत्तराषाढ़के तथा ।
पौड्पशसवेहान् श्रवणे कैकयेश्वरम् ।६३।

पूर्वाषाढ़ा में हो तो काशी के राजा को उत्तराषाढ़ा में हो तो पोंडक देश, शैवदेव और श्रवण में कैकय देश के राजा को पीड़ा करे ।६३।

बसो पंचनदाधीशं वारुणे सिंहलेस्वरम् ।
पूर्वाभाद्रपदे वर्ग नैमियेशं तथोत्तरे ।६४।

घनिष्टा में हो तो पंचनदी के तट के राजाओं को पीड़ा, शतभिषा में हो तो सिंहल देश के राजा को, पूर्वा भाद्रपदा में हो तो बङ्गाल देश के राजा को उत्तराद्रपदा में हो तो नैमिसारण्यवासियों को पीड़ा करे ।६४।

रेवत्या केतौ किरातधिपनेबंध ।
ध्रम्राकार समुच्छस्च केतुर्विरुद्धस्य पीडक ।६५।

जो रेवती में केतुका उदय होतो किरात देशके राजा को पीड़ा करे । उस केतु का स्वरूप धुआ के समान पुच्छ सहित होता है । यदि पुच्छ सहित दिखाई देवे तो दुखप्रद होता है ।६४।

दीपोत्सवफलम्

भानुभोमार्किवारेषु कार्तिकेन्दुक्षयो भवेत् ।
आयुष्मान् स्वाति संयुक्तो नरनाशः पशुक्षयः ।६६।

जो कार्तिक की अमावस (दिवाली) रवि, भौम, शनिवार को पड़े और स्वाती नक्षत्र तथा आयुष्मान हो तो राजाओं का नाश करे, युद्ध अधिक हो और पशुओं का नाश हो ॥६६॥

राशीनां निशाचरादिसंज्ञा

धनुर्नक्रं च मेषाद्याश्चत्वारस्तु निशाचरः ।
ते बिना मिथुनं पञ्च ज्ञेयाः पृष्ठोदया बुधैः ।६७।
शीर्षोदयाश्च चत्वारः सिंहाद्या कुम्भएव च ।
दिवा बलीतु मीनश्च बली रात्रौ तथादिने ।६८।

धन, मकर, मेष, कर्क और मिथुन निशाचर संज्ञा होती है औ मिथुन को छोड़कर शेष पाँचों की पृष्ठोदय संज्ञा होती हैं । सिंह कन्य तुला, वृश्चिक और कुम्भ राशियों की शीर्षोदय संज्ञा होती हैं ये दिन में बली होती हैं । मीन लग्न दिन तथा रात्रि दोनों में ही बलवान होते हैं ॥६७-६८॥

दुर्भिक्षफलम्

तदृक्षं द्विगुण कृत्वा रामैर्हीनं च कारयेत् ।
मुनिभिश्च हरेद्भागं शेषांके लभते फलम् ।६९।
चन्द्रे वेद च दुर्भिक्षं सुभिक्षं युग्मबाणयोः ।
रागे रसे च मध्ये च शून्ये प्रकीर्तितम् ।७०।

प्रश्नकर्ता के समय में जिस लग्न में जो नक्षत्र हो उसको दूना करके उसी में तीन घटावे और ७ का भाग दे जो १।४ बचे तो दुर्भिक्ष २.५ बचे तो सुभिक्ष ३।६ बचे तो समान भाव रहे और शून्य हो तो बाजार में कमी हो इसी से शून्य कहा है ॥६९-७०॥

वक्रीविचारफलम्

अतिचारगते सौम्ये क्रूरे वक्रत्वमागते।
हाहाभूतं जगत्सर्वं रुण्डमुण्ड च जायते ।७१।

जो सौम्य ग्रह अतिचार और पापग्रह वक्री हो तो संसार में हा-हाकार मचे पुण्ड में रुण्ड-मुण्ड गिरे (घोर युद्ध हो) ।।७१।।

मन्त्रदीक्षानिर्णयः

मन्त्रस्वकरणं चैत्रे बहुदुःखफलप्रदम्।
वैशाखे रत्नलाभस्च ज्येष्ठे चमरण ध्रुवम् ।७२।
आषाढ़े बंधुनाशः स्यात् श्रवण तु शुभावहम्।
प्रजाहानिभाद्रपदे सर्वत्र सूलमाशिवने ।७३।

जो चैत्र मास में मन्त्र की दीक्षा ले बहुत दुख पावे, वैशाख मास में दीक्षा ले तो रत्न लाभ हो. ज्येष्ठ मास में दीक्षा ले तो रत्न लाभ हो ज्येष्ठ मास में दीक्षा ले तो निश्चय मृत्यु हो। जो आषाढ़ मास में दीक्षा ले तो भाई का नाश हो, श्रावण मास में मन्त्र की दीक्षा ले तो सर्वदा शुभ, भाद्रपद मास में मन्त्र की दीक्षा ले तो सभी प्रकार से सुख पावे ।।७२-७३।।

कार्तिके धनवृद्धि स्यात् मार्ग शीर्षशुभश्रवम्।
पौषे तज्ज्ञानहानिः स्यान्माघे मेधाविविधम् ।७४।
फाल्गुने सुखसौभाग्यं सर्वत्र परिकीर्तितम्।
दीक्षाकर्मफलं मासेश्वित्येव च शुभाशुभ ।७५।

जो कार्तिक मास में मन्त्र की दीक्षा ले तो धन की वृद्धि हो मार्गशीर्ष मास में मन्त्र की दीक्षा शुभ। पौष मास में मन्त्र दीक्षा से ज्ञान हानि हो माघ मास में दीक्षा से ज्ञान की वृद्धि। फाल्गुन मास में मन्त्र दीक्षा से सौभाग्य वृद्धि और यशस्वी होता है ।।७४-७५।।

ग्रहराशिभागकालनिर्णय:

मासमुक्रवृधास्वाचान्चन्द्र पाददिनद्वयम् ।
भौमस्त्रिपक्षं जोवोऽब्वं साधदर्पदय शनि ।
राहु केतु सदा भुक्ते साधमेकं तु वत्सरम् ।७६।

सूर्य, शुक्र, बुध, एक-एक मास तक एक-एक राशि पर रहते हैं चन्द्रमा सवा दो दिन (१३५ घटी) एक राशि पर रहता है मंगल सवा मास रहता है। बृहस्पति १ वर्ष पर्यन्त १ राशि पर रहता है। शनि ढाई वर्ष तक राशि पर रहता है और राहु-केतु एक राशि में डेढ़ डेढ़ वर्ष तक रहते हैं ।७६।

चल्हीचक्रम्

सूर्यक्षाद्रसपृष्ठभै सुखयुत द्वेवे शिरौ मृत्युदम् ।
दासौनागसुसौख्यभोगमतुल गर्भेरैनशियेत ।।
द्वौ द्वौ भुक्तिकरौ कलत्रमरणमध्रो द्वय च क्रमात ।।
चुल्हीचक्र बिचारण सुधिषणं प्रोक्त हि गर्गादिभि ।।७७।।

सूर्य नक्षत्र से ५ नक्षत्र पृष्ठ के खीप्रद हैं, सिर के ४ नक्षत्र मृत्यु प्रद है, बाहु के आठ नक्षत्र बहुत सुखप्रद हैं, गर्भ के ५ नक्षत्र कर्त्ता है भुजा के २ नक्षत्र-भोगप्रद और चरण के २ नक्षत्र नाशप्रद होते हैं। ऐसा गण आदि मुनियों ने कहा है ।७७।

इति श्रीकानाथषट्टाचार्यकृतशीघ्रबोधबोधसंग्रहचतुर्थ प्रकरणै समाप्तम्
इति पं० मदनमोहन शास्त्री द्वारा चतुर्थप्रकरणात्मक शीघ्रबोसंग्रह हिन्दी भाषा टीका सहित समाप्त

समाप्तम्

— x —

घर बैठे ही पुस्तकें वी. पी. द्वारा प्राप्त करें

गंगाराम पटेल बुलाखी नाई की गंगाजी की यात्रा मू. 10 रु. डाकखर्च 4 रु.
– गंगाजी से लौट मू. 10 रु. डाकखर्च 4 रु. तथा दोनों भाग 32 जिला एक जिल्द में मू. 20 रु. डाकखर्च 5 रु.
तोता मैना आठ भाग बड़ा 10 रु. तथा छोटे अक्षरों में 8 रु.
सिंहासन बत्तीसी बड़ा 10 रु. छोटे अक्षरों में 8 रु.
हातिमताई बड़ा 10 रु. छोटे अक्षरों में 8 रु.
वैतालपच्चीसी बड़ा 10 रु. छोटा 8 रु.
अलादीनतिलस्मीचिराग 10रु.
शेखचिल्ली की कहानी 5 रु.
पंचतंत्र की कहानी 10 रु.
सारंगा सदाबृज 10 रु
किस्सा गुलसनोबर 10 रु.
– गुलबकावली 10 रु
अकबर बीरबल बडा 10 रु. छोटा 5 रु

स्टेज पर खेलने योग्य नायक मूल्य प्रत्येक 8 रु. डाकखर्च प्रत्येक 2 रु.
वीर अभिमन्यू बड़ा
श्रवणकुमार बड़ा
सावित्री सत्यवान बड़ा
भक्त प्रहलाद बड़ा
द्रोपदी स्वयंबर बडा
हकीकतराय बड़ा
छत्रपति शिवाजी बड़ा
रामलीला बडा
कृष्ण अवतार बडा
कृष्ण अर्जुन युद्ध बडा
श्रीमती मंजरी बडा
ब्रह्मानन्द भजनमाला 500
भजनों का गुटका साइज मू. 10 रु.
कबीरदास के भजन 5 रु
सूरदास के भजन 5 रु.
मीराबाई के भजन 5 रु
तुलसीदास के
मोहन

मीतल एण्ड कम्पनी